महामृत्युंजय शक्ति प्राप्ति शिव परिवार चेतनामय विशेषांक

| मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका |

प्राचीन मंत्र यंत्र विज्ञान

▶ अगस्त 2024 | ▶ वर्ष 14 | ▶ अंक 05 | ▶ ₹40

तांत्रोक्त ऋणहर्ता ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना

विघ्न हरण विनायक गौरी साधना

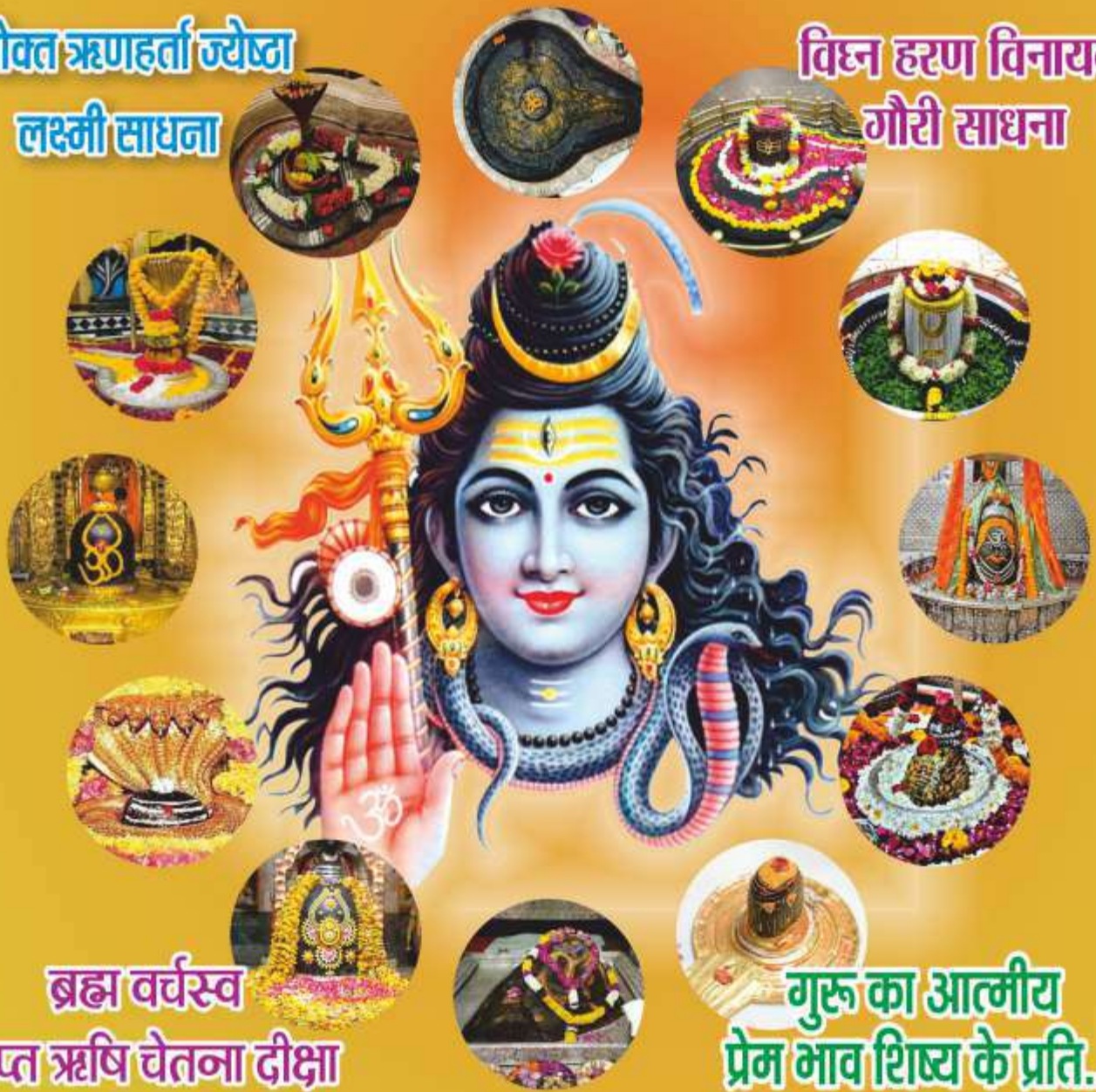

ब्रह्म वर्चस्व सप्त ऋषि चेतना दीक्षा

गुरू का आत्मीय प्रेम भाव शिष्य के प्रति...

प्रेम और ध्यान में है अंर्तसम्बन्ध

जीवन को अद्वितीय बनाने हेतु चैतन्य पंच श्रावण सोमवार

प्रथम सोमवार - 22 जुलाई

सर्व दोष पाप शमनः इन्द्रेश्वर शिव साधना

प्रत्येक व्यक्ति ने जाने अनजाने में, इस जन्म में अथवा पूर्व जन्मों में कई ऐसे कार्य किये होते है, जिनसे आत्माओं को कष्ट अथवा क्लेश पहुँचा हो। ऐसे ही कार्य पाप कहलाते है और जिन आत्माओं को कष्ट पहुँचने से पाप लगा है, जब तक उन आत्माओं का वर्चस्व है, तब तक वे पाप पीछा नहीं छोड़ते और रोग, कष्ट, तनाव, पीड़ा, अपमान, निराशा व दैन्य व्यक्ति के स्वयं के ही पाप सामने प्रकट होते रहते हैं जिससे उसके जीवन को अस्त-व्यस्त कर देते है। इस हेतु अपने जीवन के सभी पाप-दोषों से मुक्त होने के लिये 'इन्द्रेश्वर शिव साधना' सम्पन्न करना आवश्यक है।

साधना सामग्री- दिव्य शिव यंत्र, इन्द्रायण व इन्द्रेश्वर महादेव माला। इन्द्रेश्वर शिव मंत्र- ।।ऊँ ह्रीं ह्रीं नमः शिवाय।।

द्वितीय सोमवार - 29 जुलाई

भूत-प्रेत बाधा मुक्ति तंत्रबाधा निवारक भूतेश्वर शिव साधना

भगवान शिव का एक नाम 'भुतेश्वर' भी है। जब भगवान शिव को हम भूतनाथ कहते है, तो उसका अर्थ यह होता है, कि वे पंचभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से बने सभी प्राणियों के स्वामी है।

इसके अलावा कई बार टोने-टोटके जैसी घृणित क्रियाओं को अपना कर कुछ घटिया लोग अच्छे भले सीधे-सादे लोगों को कुछ खिला-पिला देते हैं। तंत्र के इन कुकृत्यों से उस भले-चंगे व्यक्ति का जीवन मरणतुल्य हो जाता है, अच्छा भला खाता-पिता घर बर्बादी की कगार पर पहुँच जाता है।

साधना सामग्री- तांत्रोक्त रूद्र यंत्र, कड़कड़हा व भूत डामर माला। भूतेश्वर शिव मंत्र- ।।ऊँ ह्रीं ऐं नमो रूद्राय भूतान् त्रासय ऊँ फट्।।

तृतीय सोमवार - 05 अगस्त

बृहस्पतीश्वर शिव साधना

यदि पूर्ण श्रद्धा से साधना सम्पन्न कर ली जाये तो भगवान शिव के परोक्ष-अपरोक्ष दर्शन भी सम्भव होते ही है। बृहस्पति की यह साधना करने से गुरू कृपा भी प्राप्त होती है, क्योंकि बृहस्पति गुरू का ही रूप हैं।

साधना सामग्री- तांत्रोक्त रूद्र यंत्र, गुरू जीवट व चैतन्य माला। बृहस्पतीश्वर शिव मंत्र- ।।ऊँ श्रीं नमः शिवाय ऊँ श्रीं।।

चतुर्थ सोमवार - 12 अगस्त

सर्व बाधा निवारण मनोवांछित कार्य सिद्धि पुष्पदंतेश्वर शिव साधना

पुत्री का विवाह नहीं हो पा रहा हो, किसी योजना के क्रियान्वित होने में बार-बार विघ्न उपस्थित हो रहे है, या किसी भी कार्य को अपने हाथ में लिया हो और आप उसमें पूर्ण सफलता चाहते हो, प्रमोशन नहीं हो रहा हो, मुकदमें में सफलता नहीं मिल रही हो, किसी प्रकार की कोई राज्य बाधा या सरकारी अड़चन से आपके कार्य रूके रहे हो, कोई धन आपका कहीं अटका हुआ हो, आदि ऐसे विघ्नों की समाप्ति हेतु पुष्पदन्त प्रणित शिव साधना करने से साधक के सभी कार्य सिद्ध होते ही है-

साधना सामग्री- 4 पुष्पदन्त रूद्राक्ष व पुष्पदन्तेश्वर माला। पुष्पदंतेश्वर शिव मंत्र- ।।ऊँ ह्रीं ह्रीं कार्य सिद्धिं नमः शिवाय।।

पंचम सोमवार - 19 अगस्त

रक्षा बंधन का पर्व आते ही सभी व्यक्तियों के हृदय में एक भावनात्मक सम्बन्ध उत्पन्न हो जाता है। 'रक्षा' इस शब्द के पीछे उनका उद्देश्य यही था, कि व्यक्ति अपनी सुरक्षा स्वयं करे, सामाजिक रूप से भी तथा आर्थिक रूप से भी।

साधना सामग्री- सर्व रक्षाकारी यंत्र व सफेद हकीक माला। मंत्र- ।।ऊँ रं रुद्राय रं ऊँ फट्।।

Each Sadhak पांच श्रावण सोमवार की चैतन्य साधना सामग्री युक्त फोटो दीक्षा न्यौछावर ₹ 6000/-

सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।

अपनो से अपनी बात...!

जीवन का वह क्षण कौनसा है वह मुहूर्त, काल कौनसा होगा, जब समस्याओं का अन्त होगा? जब हमारी मनोकामना पूर्ण होगी! वह क्षण, वह पल, वह मुहूर्त तभी आयेगा जब आप इसी क्षण को उत्तम बनाने के लिये कार्यरत होंगे, दुःख के केवल एक भाव है और उसी भाव के आस-पास आपकी समस्या विशाद है। जीवन हर पल बदलता है, परिस्थिति निरन्तर परिवर्तित होती रहती है। आपका यह क्षण अगर दुख-कष्ट-विषाद से भरा है तो कुछ समय मौन रहकर, अन्तर ध्यान कर, गुरू ध्यान कर यह विचार करें कि यह पल सदैव नहीं रहेगा, मेरे में निहित गुरू की चेतना-शक्ति सदैव मेरे साथ है और यह भाव अन्तर मन में आते ही, ऊर्जा पुन्ज, ज्ञान पुन्ज का प्रकाश है उमंग उत्साह से भर देता है।

मिलता जीवन में वही है जिसकी हमें आवश्यकता है वह नहीं जिसकी हमें चाह है, चाह तो हर बुरी-अच्छी चीज की हो सकती है, कोई खजाना या गड़ा धन पा लेने से, सरकारी नौकरी पा लेने से जीवन सफल नहीं होगा। जीवन तो तब सफल होगा जब आप जीवन के उचित क्षण की खोज छोड़ जीवन के हर क्षण को उचित बनाने में लगेंगे। सही पल की प्रतीक्षा करोगे तो पूरा जीवन निकल जायेगा और वह पल कभी आयेगा ही नहीं। हमारे ऋषि-मुनियों ने इतनी साधना-पूजा के विधान क्यों दिये हैं क्योंकि हम इनके द्वारा- अपने कर्म के द्वारा हम हर क्षण को उचित बना सकें, गुरू ज्ञान से हम जीवन में पूर्णता को प्राप्त कर हर क्षण को अपने उपयुक्त बना सकते हैं।

इस 17-18 अगस्त को आप गौरी शंकर सुहाग महाकाल शतायु जीवन धनदा साधना महोत्सव- रायगढ़ में सम्मिलित होकर अपने जीवन को शिवमय- गुरूमय बनाये।

आपका अपना
विनीत श्रीमाली

कैलाश सिद्धाश्रम

।।ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो: नमः।।

आशीर्वाद-प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी)

संस्थापक

गुरुदेव कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी

सम्पादक

विनीत श्रीमाली

सह-सम्पादक

शोभा श्रीमाली

निधि श्रीमाली

संयोजक

प्रशान्त श्रीमाली

सह-संयोजक

स्वामी पूर्णानन्द, भैरवनाथ,

चैतन्य कृपाशंकर

कार्यालय

प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान

कैलाश सिद्धाश्रम

1-C पंचवटी कॉलोनी

रातानाडा, जोधपुर से प्रकाशित

e-mail: Info@pmyv.net

website:www.pmyv.net

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	₹ 40	पंच वर्षीय	₹ 2550
वार्षिक	₹ 500	दस वर्षीय	₹ 5000

मुद्रण

Dewan publication

ब्लाक-A, मायापुरी इण्डस्ट्रियल एरिया

phaseI, मायापुरी, नई दिल्ली

पत्रिका में प्रकाशित लेखो से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद, तर्क के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक जिम्मेवार नहीं होंगे। किसी भी वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा।

पत्र व्यवहार

कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर

1-C, पंचवटी कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342011

Mob. +917568939648, +918769442398,+918750757042 ✆ 0291-2517025

GurudevKailash www.pmyv.net +91-99508-09666

G-mail:Info@pmyv.net YouTube KAILASHSIDDASHRAM

बैंक विवरण

बैंक:	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
शाखा:	UIT Branch, Jodhpur
धारक:	विनीत श्रीमाली (Vineet Shrimali)
A/c No:	00000040310531623
Branch Code:	006590
IFSC:	SBIN0006490
MICR Code:	342002010

बैंक:	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
शाखा:	Main Branch, Jodhpur
धारक:	प्रशान्त श्रीमाली (Prashant Shrimali)
A/c No:	10827465907
Branch Code:	659
IFSC:	SBIN000659
SWIFT Code:	SBININBB215
MICR Code:	342002002

प्रेरक-लेख

उपनिषद वाणी	06
प्रभु दर्शन का द्वार आत्मवलोकन-आत्मसाक्षात्कार	08
हमारा स्वर्णिम भारत	10
गुरू का आत्मीय प्रेम भाव शिष्य के प्रति.....	14
हिन्दी हमारी शान, हिन्दी हमारी पहचान	23
प्रेम और ध्यान में है अंर्तसंबंध	25
दत्तात्रेय अवतार	38
गुलमेंहदी	48
स्वतंत्रता दिवस	51

स्तम्भ

राशिफल	41
सद्गुरू वाणी	46
शिष्य धर्म	47
वराहमिहिर & कालनिर्णय	52

विशिष्ट

अखण्ड पुण्य प्राप्ति त्री विघ्न नाशक गणपति लॉकेट	20
इस माह में विशेषः साधना-दीक्षा	50

शक्तिपात दीक्षा

जीवन को अद्वितीय बनाने हेतु चेतन्य पंच श्रावण सोमवार	02
अष्टादश सिद्धि गणपति पूर्ण ऋद्धि-सिद्धि दीक्षा	40
सकल पीड़ा नाशक ब्रह्म वर्चस्व सप्त ऋषि चेतना दीक्षा	45
श्रीकृष्ण तत्व जागरण सुदर्शन सिद्धि राजयोग दीक्षा	67
आनन्दमयी भुवनेश्वरी आत्मज्ञान प्राप्ति दीक्षा	67

ENGLISH CORNER

Rituals & Articles

Kreem Kali Sadhana	53
Lord Krishna Sadhanas	57
Ganpati Sadhana	61

इस माह की साधनायें

12 कृष्ण राधा संगम साधना

16 सोम अमृत साधना

18 विघ्न हरण विनायक गौरी साधना

21 तांत्रोक्त ऋणहर्ता ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना

उपनिषद वाणी

कैसे कोई सत्य में प्रवेश करे, कैसे उस परम रहस्य को जान पाए; जो निकट है फिर भी नहीं जाना जाता; और जो सदा से पास है फिर भी खो गया है; उस तक हम कैसे पहुँचे, उस तक कोई भी कभी कैसे पहुँचा है, इस सूत्र में उस विज्ञान की व्याख्या है, उस मार्ग की विधि है। अध्यास का अर्थ है, जैसा नहीं है वैसा देखना और सत्य का अर्थ है, जैसा है वैसा ही देखना। हम जो भी देखते हैं, वह अध्यास है। हमारी दृष्टि में हम सम्मिलित हो जाते हैं और जो भी हमारा अनुभव है, वह वस्तुगत, आब्जेक्टिव नहीं होता, सब्जेक्टिव, आत्मगत हो जाता है। जो वहाँ बाहर है जैसा है, वैसा ही हम तक नहीं पहुँचता; हमारा मन उसे विकृत कर लेता है। सजा-संवार लेता है; सजावट कर देता है, आभूषण पहना देता है, कांट-छांट कर देता है, छोटा, बड़ा, बहुत-बहुत रूपों में उसे रूपांतरित कर देता है।

जो बड़े से बड़ा रूपांतरण है, जो गहरे से गहरा अध्यास है, वह है: हम प्रत्येक चीज के साथ अपने को जोड़ लेते हैं, जिससे हम जुड़े हुए नहीं हैं। जुड़ते ही चीज की जो वस्तु-स्थिति है वह खो जाती है और जो स्वप्न-स्थिति है वह सही मालूम पड़ने लगती है। जैसे जहाँ-जहाँ हम कहते हैं मेरा कहते हैं, मेरा मकान! मकान हम न थे तब भी था; हम न होंगे तब भी होगा। जो हमारे होने से पहले हो सकता है और जो हमारे होने के बाद भी बना रहेगा और जो हमारे मिटने के साथ मिटता नहीं है, वह मेरा कैसे हो सकता है? मैं इसी क्षण मर जाऊं तो मेरा मकान मिटता नहीं है। मेरे मकान को मेरे मिटने का पता भी नहीं चलेगा। तो मुझ से जोड़ ही क्या है मेरे मकान का? संबंध क्या है? कल कोई और रहेगा उस मकान में और वह भी उसे मेरा कहेगा। कल कोई और रहता था, वह भी उसे मेरा कहता था। न मालूम कितने लोगों ने अपने मैं को उस मकान पर चिपकाया है और विदा हो गए हैं! लेकिन वह मैं चिपक नहीं पाता, वह मकान किसी का हो नहीं पाता। मकान हो भी नहीं सकता किसी का। मकान अपना है, मकान खुद का है। इस जगत में प्रत्येक वस्तु स्वयं है। इसे हम ठीक से समझ लें तो अध्यास को तोड़ने में आसानी हो जाएगी। जमीन का एक टुकड़ा है, आप कहते हैं, मेरा खेत, मेरा बगीचा। आदमी जहाँ भी पैर रखता है वहीं अपने मैं की छाप लगा देता है। प्रकृति उसकी छाप को मानती नहीं लेकिन दूसरे आदमियों को मानना पड़ता है, अन्यथा संघर्ष खड़ा होता है और वे दूसरे लोग भी इसीलिए मानते हैं उस छाप को वे भी वैसा छाप लगाना चाहते हैं। तो मकान किसी का हो जाता है, जमीन किसी की हो जाती है और हमारी इतनी आतुरता क्यों होती है कि हम इस मैं की छाप को कहीं लगा दें? आतुरता इसलिए होती है कि जितनी जगह हम यह छाप लगा देते हैं, हस्ताक्षर कर देते हैं, जितना हमारा मेरे का विस्तार बड़ा हो जाता है, उतना ही बड़ा मैं हमारे भीतर हो जाता है। मैं उतना ही बड़ा होगा, जितनी चीजों पर उसका बड़ा मैं कैसे होगा। दूसरा आदमी कहता है, एक हजार एकड़ जमीन मेरी। मेरे के विस्तार के साथ मैं बड़ा होता मालुम पड़ता है। मेरे का विस्तार कम होता है तो मैं छोटा, कम होता है। तो मैं की एक-एक ईंट मेरे से निर्मित होती है। तो जितना ज्यादा मैं कह सकूं मेरा, उतना बड़ा मैं का महल खड़ा हो जाता है।

इसलिए सारे जीवन हम एक ही दौड़ में होते हैं कि कितनी ज्यादा चीजों पर छाप लगा दें अपनी, कह पाएं कि मेरी हैं। इस

छाप लगाने-लगाने में चीजों पर छाप लग भी जाती है और हम छाप लगाते-लगाते विदा हो जाते हैं और जिसे हमने कहा था मेरा, उस पर कोई और छाप लगाना शुरू कर देता है। वस्तुएं अपनी हैं, किसी की भी नहीं। उपयोग उनका हो भी सकता है, मालकियत नहीं हो सकती। मालकियत भ्रम है और उपयोग जब हम करते हैं तब अनुग्रह का भाव होना चाहिए, क्योंकि जो हमारा नहीं है उसका हम उपयोग कर रहे हैं। लेकिन जब हम कहते हैं मेरा तो अनुग्रह का भाव भी चला जाता है और मेरे का एक जगत निर्मित हो जाता है। उसमें धन है, पद है, प्रतिष्ठा है, शिक्षा है, सब सम्मिलित है और ये ही सम्मिलित हों तो भी आश्चर्य नहीं, जिन चीजों का मैं से कोई संबंध नहीं होता, वे भी सम्मिलित हो जाती हैं। हम कहते हैं: मेरा धर्म, मेरा ईश्वर, मेरा देवता, मेरा मंदिर; जिनसे कि मैं का कोई भी संबंध नहीं हो सकता और अगर हो, तो फिर इस जगत से छुटकारे का कोई उपाय नहीं। ईश्वर भी इसके भीतर आ जाता हो, तो फिर बाहर जाने के लिए कोई जगह भी नहीं बचती।

मैं बड़ा होता है मेरे से; लेकिन जितना मेरे का फैलाव होता है, उतना दुःख भी बढ़ जाता है। अकेला मैं ही बड़ा होता, तब भी कोई कठिनाई न थी। मैं की बढ़ोतरी के साथ दुःख की भी बढ़ोतरी होती है; क्योंकि मैं है एक घाव है। और जितना बड़ा मैं होता है, उतने ही आप चोट के लिए खुले हो जाते हैं; उतनी बड़ी जगह हो जाती है जिस पर चोट की जा सकती है। जैसे कि बड़ा घाव हो तो उस पर दिन भर चोट लगे, कहीं से भी उठें-बैठें और चोट लगे। घाव है बड़ा, जगह है बड़ी, कुछ भी इशारा चोट बन जाता है। जितना बड़ा मैं हो, उतनी बड़ी चोट लगने लगती है, उतना दुःख होता है। मेरे के विस्तार से मैं बढ़ता है, रस आता है। मैं बढ़ता है, दुःख भी बढ़ता है। इधर लगता है सुख बढ़ रहा है, उधर साथ-साथ दुःख भी बढ़ता जाता है। जितना हम सुख बढ़ाते हैं, उतना दुःख बढ़ता चला जाता है। और इन दोनों के बीच में एक अध्यास, एक भ्रम चल रहा है। जहाँ मेरे का कोई उपाय नहीं कहने का, वहाँ हम व्यर्थ ही, झूठ ही मेरा कहे चले जा रहे हैं। यह हाथ जिसको आप मेरा कहते हैं, शरीर जिसको आप मेरा कहते हैं, यह भी आपका नहीं है। आप नहीं थे तब भी इस हाथ की हड्डी, इस हाथ की चमड़ी, इस हाथ का खून कहीं था; और आप नहीं होंगे तब भी यह होगा। आपके शरीर में जो हड्डी हैं, वे न मालूम कितने शरीरों में हड्डियां रह चुकी हैं। जो आज आपका खून है, कल किसी पशु में बहता था, परसों किसी वृक्ष में बहता था और न मालूम कितनी लंबी यात्रा है उसकी अरबों-खरबों वर्षों की। आप नहीं होंगे तब भी आपके शरीर में एक-एक कण कोई भी नष्ट होने वाला नहीं है। वह सब बना रहेगा। वह किन्हीं और शरीरों में बहेगा। जिंदगी प्रतिपल किसी का दावा स्वीकार नहीं करती, बही चली जाती है और हम दावें ठोंकते चले जाते हैं। यह दावे का जो भ्रम है, यह मनुष्य का गहरे से गहरा अध्यास है। तो जब भी कोई आदमी कहता है मेरा, तब अज्ञान में गिरता है।

हमें खुद के आत्मतत्व को जान लेना अत्यन्त आवश्यक है। अपने को जान लेना ही अज्ञानता का नाश और सफलता का रहस्य है। जो व्यक्ति अपने को जान लेता है, आत्मतत्व पहचान लेता है, उसके लिए यह शरीर एक रथ है, जीवात्मा रथ का स्वामी और बुद्धि सारथी है तथा मन लगाम है। परम्ब्रह्म प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है अहंकार। इसी अहंकार के कारण सारी साधना निष्फल हो जाती है। वास्तव में यह अहंकार एक ऐसी दीवार है जो भाव प्रकट में, परम रहस्य को जानने तथा सत्य को पहचानने में बाधक है। भगवान सामने होते हुए भी हम दर्शन नहीं कर पाते हैं। भगवान पास होते हुए भी खो गए हैं।

आवश्यकता है केवल भावना बदलने की। जो भी कर्म हम करते हैं, 'मैं' और 'मेरे लिए' न होकर, ईश्वर के लिए हो। ऐसी स्थिति में हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि हम जो भी कार्य करें भगवान की प्राप्ति के लिए ही करें और इस बात का सदा ध्यान रखें कि जिस कार्य में किसी प्राणी का अहित है, वह कार्य भगवान की प्राप्ति के लिए नहीं हो सकता।

आशीर्वाद के साथ
कैलाश श्रीमाली

प्रभु दर्शन का द्वार आत्मवलोकन – आत्मसाक्षात्कार

प्रत्येक मनुष्य प्रगति करना चाहता है। उसके अंदर न केवल जिजीविषा है अपितु गौरव के साथ जीने की तत्वगत मौलिक आकांक्षा भी विद्यमान है। मनुष्य के मन में कभी न कभी यह आधारभूत प्रश्न अवश्य उठते हैं कि मैं क्या हूँ, मेरा मूल स्त्रोत क्या है, मेरा आदि और अंत क्या है? इसके अलावा व्यक्ति को इस विश्व के रहस्य पर विस्मय की अनुभूति होती है।

अध्यात्म क्या है? अध्यात्म इस बात का अनुभव पाना है कि हम मात्र शरीर या मन नहीं हैं, बल्कि वह आत्मा हैं, जो इस शरीर में बस रही है। हम अपने आपको सिर्फ एक शरीर समझते हैं, जिसका एक नाम है। इस तरह हम अपने आपको भारत देश का नागरिक समझते हैं या फिर किसी एक या दूसरे धर्म से जुड़ा हुआ मानते हैं। पर अध्यात्म के द्वारा हम यह जान जाते हैं कि इन सभी भिन्न-भिन्न बाहरी नामों और ठप्पों के पीछे, मूलतः हम सभी आत्मा हैं और एक ही परमपिता के अंश हैं।

जब तक मानव को परमात्मा की झलक नहीं मिलती, तब तक उसका जीवन अपूर्ण रहता है। यह संसार अधिकाधिक गंभीर विपत्ति में भटक रहा है। इसकी मुक्ति किसी अन्य उपाय द्वारा नहीं हो सकती। संपूर्ण विश्व की अशांति, अराजकता और विभीषिका को चुनौती देने के लिए जो शक्तियाँ तत्पर हैं, वे हमें आत्मस्मृति द्वारा ही प्राप्त हो सकती हैं।

आत्मिक एकता की स्वीकृति संपूर्ण अध्यात्मिक अनुभूतियों का सार है। जब व्यक्ति अपनी निष्ठा में चैतन्य होकर कर्तव्य के मार्ग पर बढ़ता है तब समस्त दिशाएं उसे लक्ष्य की ओर प्रेरित करने लगती हैं। यदि आध्यात्मिक आकांक्षाएं पूर्ति के लिए तत्पर हो जाएं तो व्यक्ति में पुनर्जागरण की प्रक्रिया घटित होती है। यह प्रक्रिया ही व्यक्ति को धार्मिक बनाती है। सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन अत्यधिक सरल और सहज होता है।

अध्यात्म के उन्नत शिखर को उन धार्मिक विश्वासों, धार्मिक मतों, धार्मिक विधियों और एकपक्षीय संस्कारों द्वारा स्पर्श नहीं किया जा सकता जिनमें व्यक्ति को परतंत्रता की गंध आती है। अध्यात्म की अनंत ऊँचाइयां वही चढ़ पाता है जिसके पास आत्मवेत्ताओं की निष्ठा, तत्वज्ञान में श्रद्धा और सद्गुरू के श्रीचरणों में शरणागति का अहोभाव होता है। अध्यात्म एक ही सत्य की विविध ऐतिहासिक निष्ठाओं का साक्षात्कार कराता है और सभी मानव को प्रलोभनों से मुक्त करके बल

प्रदान करता है। अध्यात्म के आधार का संबंध व्यक्ति के सारभूत मूल्यों, गौरव के उद्घाटन तथा वास्तविकता के उच्चतर संसार से है। मानव अपने मन की पाशविक प्रवृत्ति से ऊपर उठकर उच्चतर भाव में तभी प्रवेश कर पाता है जब वह नैतिक बल, संयम, साहस और आत्मनिष्ठा से ओत-प्रोत होता है। अध्यात्म में एक अनुशासन है जो व्यक्ति की अंतरात्मा को स्पर्श करता है और उसे समस्त दुर्भावनाओं से संघर्ष करने में सहायता देता है। मानव सदैव श्रेष्ठ जीवन जीना चाहता है। वह जीवन की अनुकूलताओं का इच्छुक होता है। अध्यात्म में जीवन की हर सुंदर व्यवस्था सन्निहित है जिसके द्वारा मानव को संपूर्ण बनाया जा सकता है। अध्यात्म-पथ पर चलने वाले पथिक आनंदकारी विस्मय की अनुभूति करते हैं।

अध्यात्म के द्वारा हम सहानुभूति, क्षमा और शांति की भावना जाग्रत करते हैं। जब हमारा दृष्टिकोण आध्यात्मिक बन जाता है, तब हम किसी को भी पक्षपात या भेदभाव की नजर से नहीं देखते। हम उन दीवारों को हटाने लग जाते हैं जो एक इंसान को दूसरे से अलग करती है। हम यह अनुभव पाने लगते हैं कि आत्मा के स्तर पर हम सभी जुड़े हुए हैं। जब हम अपनी एकता और अपने आपसी संबंध को पहचान लेते हैं, तो फिर हम एक-दूसरे की मदद भी करने लगते हैं। तब हम एक-दूसरे की सेवा करना चाहते हैं। पड़ोस में भूख से रोते बच्चे की आवाज से हमें उतनी ही तकलीफ होती है, जितनी कि अपने बच्चों के रोने से। हम सड़क पर बेसहारा घूमते बूढ़े इंसान में अपने बेसहारा दादा को देखते हैं और उसकी मदद को प्रेरित होते हैं। हमारा दृष्टिकोण विशाल हो जाता है।

हम सभी अपना आध्यात्मिक पक्ष विकसित कर सकते हैं। सदियों से इसके लिए एक समाधान उपलब्ध है। ध्यान-साधना की विधि सीखकर, हम प्रतिदिन कुछ समय अपने अंतर में प्रभु के साथ गुजार सकते हैं। जैसे-जैसे प्रभु अपने प्रेम और आनंद से हमें सराबोर करेगा, वैसे-वैसे हमारी वे पुरानी आदतें धुलती जाएंगी जिनकी वजह से हम नफरत और पक्षपात से भरे हुए रहते हैं। प्रभु हममें प्रेम, क्षमा और दया के गुण भर देता है।

ऐसा उच्च दृष्टिकोण हम कैसे पैदा कर सकते हैं? आध्यात्मिक बनने के लिए हमें क्या करना होगा? हमारा आरंभिक कदम क्या होगा?

हमारा आरंभिक कदम होता है 'मेडिटेशन' अथवा ध्यान साधना। अध्यात्म की राह पर चलने की शुरुआत सामान्य जन इसी तरह से करते हैं। ध्यान की मुद्रा में कुछ देर शांत होकर बैठने से, हम अपनी आत्मा के संपर्क में आ सकते हैं। हम पाएंगे कि हम इस बाहरी शरीर और मन के अलावा भी कुछ और हैं। हम अपने आध्यात्मिक सारतत्व को खोज लेंगे जो कि प्रेम, शांति और आनंद से भरा है। जब हम अपनी आत्मा को पहचान लेंगे तो हम प्रभु के साथ अपनी एकता का अनुभव करेंगे।

लेकिन इसे हम अपनी जिंदगी में कैसे ढाल सकते हैं? हम कैसे स्वयं को क्रोध और नफरत से मुक्त करके उसकी जगह प्रेम और क्षमा भाव पैदा कर सकते हैं?

आध्यात्मिक जागृति के द्वारा हम ऐसा कर सकते हैं। यह तरीका ही ऐसा है जो हमारी चेतना के द्वार खोल देता है। हम नफरत के हर अंश को धो डालें और उसे प्रेम एवं शांति से प्रतिस्थापित कर दें। अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले अक्सर ईश्वर या परमात्मा या भक्ति की बातें करते हैं। इसका ईश्वर से क्या संबंध है?

हममें से बहुत सारे लोग प्रभु को पाने या देखने की तीव्र अभिलाषा रखते हैं। कइयों के लिए, प्रभु को पाना ही एकमात्र सपना होता है। लेकिन ये लोग भी उसी एक तकनीक का इस्तेमाल करते हैं जिसे हम अंतर्मुख होना, एकाग्र होना, ध्यान टिकाना कहते हैं। जब वे शांत स्थिर होकर बैठते हैं और अपने ध्यान को अंतर में टिकाते हैं, तो उन्हें आत्मा का साक्षात्कार होता है, जो वास्तव में परमात्मा का ही अंश है। जब हम ऐसा करते हैं तो हम भी वही अवस्था पाते हैं, जो हमारे महान संत-महात्माओं ने पाई थी। इसी दिव्य अनुभूति को लोग प्रभुदर्शन मानते हैं। सदियों से प्रभु मिलन की जो बातें सुनने को मिलती हैं, वह इसी अवस्था में अभेद हो जाने की स्थिति है। अध्यात्म की शुरुआत सत्य की खोज से होती है। इसमें संसार की किसी विषय वस्तु की प्राप्ति की कोई कामना नहीं होती। इसकी उत्पत्ति स्वयं को, जगत को, ईश्वर को और इनके परस्पर संबंधों को जानने से होती है।

परमात्मा की शक्ति सर्वत्र विद्यमान है। वही अंदर है और वही बाहर भी है। वही कण-कण में उपस्थित है। साधक को बारंबार अपने भीतर देखने पर बल दिया जाता है। इसका कारण स्पष्ट है। बाहर नाम-रूप का साम्राज्य है। इनमें से रूप का इतना जबरदस्त आकर्षण है कि उसका भेदन कर पाना एक साधारण साधक के लिए असंभव हो जाता है। 'अहं ब्रह्मास्मि' की अनुभूति के साथ ही 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' का ज्ञान होता है। 'मैं ब्रह्म हूँ' के अनुभव के बिना 'यह समस्त सृष्टि ब्रह्म रूप है' कहते समय अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है। आत्मा की अनुभूति के बाद बाहर-भीतर में कोई अंतर नहीं पड़ता।

सस्नेह आपकी माँ
शोभा श्रीमाली

अध्यात्म और संस्कृति का महागुरू

हमारा स्वर्णिम भारत

15 अगस्त 1947 का दिन भारत के स्वर्णिम इतिहास में अंकित है। यह 200 वर्षों के बाद ब्रिटिश प्रभुत्व से भारत की स्वतंत्रता की वर्षगांठ है। यह एक लंबा और कठिन संघर्ष था जिसमें कई स्वतंत्रता सेनानियों और उत्कृष्ट व्यक्तियों ने हमारे प्यारे राष्ट्र की खातिर अपना जीवन बलिदान कर दिया। यह स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए बलिदानों और स्वतंत्रता, लोकतंत्र और एकजुटता के मूल्यों की रक्षा करने के लिए नागरिक के रूप में हमारे दायित्व की याद दिलाता है। यह एक राष्ट्र के रूप में हमारी प्रगति को प्रतिबिंबित करने और हमारे देश के विकास और कल्याण के लिए हमारी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने का दिन है। स्वतंत्रता दिवस हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता बड़ी मुश्किल से हासिल किया गया विशेषाधिकार है जिसे कभी भी हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। यह हमें एक उज्जवल भविष्य के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है जिसमें प्रत्येक नागरिक स्वतंत्रता का लाभ उठा सके और साथ ही देश की वृद्धि और समृद्धि में भी योगदान दे सके। भारत को राष्ट्रवाद के एक सूत्र में जोड़ने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका राजनीतिक दलों और उनके राजनीतिक प्रायोजकों ने निभाई। अंततः 15 अगस्त को भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, महात्मा गाँधी, नेताजी, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और अन्य मुक्ति योद्धाओं के प्रयासों की बदौलत भारत को आज़ादी मिली। यह लोगों को एक साथ लाता है और उन्हें यह आभास देता है कि हमारी कई अलग-अलग भाषाओं, आस्थाओं और सांस्कृतिक मान्यताओं के बावजूद हम एक राष्ट्र हैं। भारत का सार और शक्ति विविधता में एकता है।

भारत की आत्मा को समझना है, तो उसे राजनीति अथवा अर्थ-नीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा। भारतीय की अभिव्यक्ति राजनीति के द्वारा न होकर उसकी संस्कृति के द्वारा ही होगी, तभी हम पुनः भारत को विश्व में प्रतिष्ठापित कर पाएंगे। इसी भावना और विचार में भारत की एकता तथा अखंडता बनी रह सकती है। तभी भारत परम वैभव को प्राप्त कर सकता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' को चरितार्थ करने वाली भारतीय संस्कृति है और विश्व के तमाम देश अनेक संस्कृतियां और जातियां उसके पुत्र-पुत्री, पोता-पोती की तरह है। घर सबका यही था, भाषा सबकी भिन्न जरूर थी, संस्कृति यहीं की थी जो कालांतर में बदलते-बदलते और बढ़ते-बढ़ते अनेक रूप और प्रकारों में उसी तरह हो गई जैसे आस्ट्रेलियाई मूंगों की तरह दूर-दूर फैली हुई चट्टानें। विश्व के अनेक विद्याविदों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और प्रतिभावानों ने भारत के समर्थ को सिद्ध किया है। किसी ने इसे ज्ञान की भूमि कहा है तो किसी ने मोक्ष की, किसी ने इसे सभ्यताओं का मूल कहा है तो किसी ने इसे भाषाओं की जननी, किसी ने यहां आत्मिक पिपासा बुझाई है तो कोई यहाँ के वैभव से चमत्कृत हुआ है, कोई इसे मानवता का पालना मानता है तो किसी ने इसे संस्कृतियों का संगीत कहा है। तप, ज्ञान, योग, ध्यान, सत्संग, यज्ञ, भजन, कीर्तन, कुंभ तीर्थ, देवालय और विश्व मंगल के शुभ मानवीय कर्म एवं भावों से निर्मित भारतीय समाज अपने में समेटे खड़ा है इसी से पूरा भू-मण्डल भारत की ओर आकर्षित होता रहा है

और होता रहेगा। भारतीय संस्कृति की यही विकिरण ऊर्जा ही हमारी चिरंतन परंपरा की ख्याति है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में, आध्यात्मिकता यहाँ के लोगों के दिलों में एक विशेष स्थान रखती है। प्राचीन काल से लेकर आज तक, आध्यात्मिकता ने भारतीय समाज की मान्यताओं, परंपराओं और जीवन शैली को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई करने में मदद करते हैं।

आध्यात्मिकता भारतीय समाज के हर पहलू में व्याप्त है, इसके रीति-रिवाजों, त्योहारों, कला, संगीत और दैनिक जीवन को प्रभावित करती है। यह कई व्यक्तियों को नैतिक दिशा-निर्देश और उद्देश्य की भावना प्रदान करता है। ध्यान, योग और जप जैसी आध्यात्मिक प्रथाओं ने न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में लोकप्रियता हासिल की है, क्योंकि

है। आध्यात्मिकता एक गहन और व्यक्तिगत यात्रा है जो धार्मिक संबद्धताओं से परे है। यह स्वयं दूसरों और परमात्मा के साथ गहरे संबंध की खोज है। भारत में, आध्यात्मिकता समाज के ताने-बाने में गहराई से समाई हुई है और इसमें अनुष्ठानों, प्रथाओं और दार्शनिक शिक्षाओं सहित जीवन के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है। यह आंतरिक शांति, ज्ञान और आत्म-बोध की तलाश के बारे में है।

भारत में आध्यात्मिकता देश के समृद्ध इतिहास, विविध संस्कृतियों और आध्यात्मिक दिग्गजों की शिक्षाओं से प्रभावित होकर हजारों वर्षों में विकसित हुई है। वेद, उपनिषद और भगवद गीता जैसे प्राचीन ग्रंथों ने आध्यात्मिक अन्वेषण और समझ के लिए आधार प्रदान किया। इन ग्रंथो में आत्म-खोज, नैतिकता और सत्य की खोज के महत्त्व पर जोर दिया गया। भारतीय अध्यात्म में गुरूओं की मुख्य भूमिका रही है। गुरूओं या आध्यात्मिक गुरूओं ने भारत में साधकों को उनकी आध्यात्मिक यात्रा में मार्गदर्शन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन प्रबुद्ध प्राणियों के पास गहन ज्ञान और अंतदृष्टि है जो उन्होंने अपने आध्यात्मिक अनुभवों से प्राप्त की है। गुरू, गुरू के रूप में कार्य करते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं, शिष्यों का मार्गदर्शन करते हैं और व्यक्तियों को आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर लोग आंतरिक शांति और कल्याण चाहते हैं। इसके अलावा आध्यात्मिकता सद्भाव और समावेशिता को बढ़ावा देती है। यह विविधता में अंतर्निहित एकता को पहचानता है और सभी प्राणियों की एकता पर जोर देता है। यह परिप्रेक्ष्य भारतीय समाज में सहिष्णुता, स्वीकृति और सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने में सहायक रहा है।

भारत में सद्भावता का अत्यधिक महत्व है, जिसमें विश्वासों, प्रथाओं और दर्शन की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह आत्म-खोज और परमात्मा के साथ संबंध की एक गहन यात्रा है। भारत में आध्यात्मिकता के विकास को प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों, विविध परंपराओं और श्रद्धेय गुरूओं की शिक्षाओं द्वारा आकार दिया गया है। आज आध्यात्मिकता लाखों लोगों को प्रेरित और उत्थान कर रही है, भारतीय समाज और उसमे पूरे आंतरिक शांति, सद्भाव और कल्याण की भावना को बढ़ावा दे रही है। विश्व सभ्यता और विचार-चिंतन का इतिहास काफी पुराना है। लेकिन इस समूची पृथ्वी पर पहली बार भारत में ही मनुष्य की संवेदनाओं चिंतन प्रारंभ किया भारतीय चिंतन का आधार हमारी युगों पुरानी संस्कृति है। भारत एक देश है और सभी भारतीय जन एक है। परंतु हमारा यह विश्वास है कि भारत के एकत्व का आधार उसकी युगों पुरानी अपनी संस्कृति में निहित है।

प्रेम अनंग, सौन्दर्य संभव है इस साधना से

''कृष्ण-राधा संगम साधना''

प्रेम की बात आए और उस में राधा और कृष्ण का वर्णन नहीं आए यह संभव ही नहीं है। क्योंकि राधा और कृष्ण का संबंध पवित्रतम प्रेम, धैर्य, भाव और भक्ति का महामिलन है। राधा का कृष्ण के प्रति प्रभु आत्मा की आन्तरिक पुकार, तीव्र इच्छा को प्रकट करता है जिसमें कृष्ण रूपी ईश्वर से पूर्ण मिलन है। कृष्ण राधा की आत्मा है तो राधा भी कृष्ण की आत्मा है। कृष्ण और राधा को विभक्त नहीं किया जा सकता। वह स्वयं कृष्ण की पूजा करने के कारण स्वपूज्य भी है, कृष्ण की प्रेमिका होने के कारण ही कृष्ण को ''राधिके'' कहा गया है।

यह सम्पूर्ण सांसारिक माया आध्यात्मिक माया राधा और कृष्ण का ही स्वरूप है। कृष्ण प्रेम का चरम स्वरूप है। साथ ही प्रेम सम्बन्धों का आनन्द प्रदान करने वाले वे देव भी है। कृष्ण की लीला और उनकी अनन्त इच्छा आध्यात्मिक प्रेम के रूप में प्रकट होती है और यह प्रकटीकरण राधा और कृष्ण के रूप में होता है। कृष्ण और राधा के प्रेम में वासना का, शारीरिक सम्पर्क का कोई स्थान नहीं है। वह वृषभानु तथा कमलावती की पुत्री तथा ग्वालश्रेष्ठ अयन की पत्नी है। इसके उपरान्त भी उसका प्रेम पूरे जीवन कृष्ण के प्रति ही रहा। बाल्य काल से दोनों साथ खेले, नृत्य किया, आपस में रूठे मनाया लेकिन कृष्ण के अलग हो जाने के बाद भी उनके मथुरा जाने के बाद भी और उसके बाद उनके द्वारिका जाने के पश्चात् भी प्रेम कभी कम नहीं हुआ क्योंकि यह प्रेम सम्बन्ध देहगत सम्बन्धों से ऊपर था। वास्तव में राधा और कृष्ण को प्रेम भक्ति की पराकाष्ठा है।

राधा शब्द का अर्थ ही ''कृष्ण भक्त' है। राधा तो कृष्ण के लिये प्रेम का समुद्र है। इसीलिये पूरे कृष्ण कानन कुंज में राधे-कृष्ण, राधे-कृष्ण की ध्वनि गूंजती है। कृष्ण भगवान है तो राधा उनकी आत्मा है। कृष्ण शक्ति के प्रदायक शक्तिमान है तो राधा उनकी शक्ति है। राधा कृष्ण का नारी स्वरूप है और यह स्वरूप सम्बन्ध शुद्ध उच्चतम एवं आविच्छिन सम्बन्ध है जिसे उन्होंने आपस में संगीत के माध्यम से, बांसुरी के माध्यम से, गान के माध्यम से प्रकट किया। राधा ने अपने प्रेम में संसार के ताने सहे क्योंकि युग बदल जाने से संसार के लोग नहीं बदल जाते लेकिन सच्चा प्रेम संसार की सब बाधाओं को पार कर सकता है। सच्चा प्रेम ही अमर हो सकता है और जहां प्रेम में वासना आ गई वहां प्रेम समाप्त हो जाता है। राधा के साथ श्री कृष्ण का संबंध एक ऐसा संबंध है जिसमें राधा कृष्ण में पूर्ण रूप से समर्पित हो जाती है और कृष्ण राधा में पूर्ण रूप से समर्पित हो जाते है। वे मानसिक रूप से एकाकार हो जाते है इसीलिये जहां भी कृष्ण का नाम आता है वहां राधा का नाम अवश्य आता है। सांसारिक कारणों से कृष्ण ने विवाह रूक्मणी, सत्यभामा से अवश्य किया लेकिन राधा और कृष्ण का प्रेम इन

सम्बन्धों से ऊपर रहा।

राधा और कृष्ण का सम्बन्ध थोड़े समय के लिये ही रहा, शेष जीवन तो उन्होनें अपनी रानियों के साथ व्यतीत किया। परन्तु लोक में राधा और कृष्ण की ही जोड़ी प्रसिद्ध है। मंदिरों में राधा और कृष्ण की ही पूजा होती है, कृष्ण और रूक्मणि की नहीं।

राधा और कृष्ण का प्रेम आत्मिक संबंध है, जब दो आत्माओं का मिलन होता है तो संसार की कोई भी दूरी क्षणिक लगती है। वह दूरी अनुभव ही नहीं होती, होठों पर नाम आते ही नेत्रों में अश्रु और चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। वहीं प्रेम है और प्रेम का आधार निश्चित रूप से काम तत्व तो अवश्य है और कृष्ण ने तो काम तत्व को जीत कर राधा से प्रेम किया। क्या ऐसा प्रेम इस जीवन में उतारा जा सकता है?

जब 'काम तत्त्व' की चर्चा हो और उसके ऊधम वेग से उत्पन्न हो रहे फेनिल, शुभ्र, धवल प्रेम की चर्चा का अवसर हो, तब भला राधा-कृष्ण को विस्मरण किया भी कैसे जा सकता है? प्रेम, काम, सौन्दर्य, यौवन जैसे अनेक मनोभावों की व्याख्या उनके चरित्र के अतिरिक्त किसी अन्य रूप से संभव भी नहीं है, क्योंकि प्रेम और 'काम' का इतना अधिक शिष्ट व संयमित, किन्तु गतिशील उदाहरण कहीं और मिलता भी तो नहीं।

आश्चर्य है, हम प्रतिवर्ष ही कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाते है, प्रतिवर्ष ही उत्साह और उमंग का भाव संजो लेना चाहते है, 'काम तत्व' की प्रतिष्ठा भी करना चाहते है, किन्तु इन सभी के मूल स्त्रोत राधा-कृष्ण युग्म की साधना-अर्चना नहीं करते है। जबकि यही तो उस उन्मुक्त वेग की गंगोत्री है, जिसे 'काम तत्त्व' कहा जाता है तथा ऐसी गंगोत्री' से उद्भूत होने वाली कोई भी भावना न तो हेय हो सकती है, न अशुभ और न पतित, क्योंकि ऐसी धारा ही तो अनेक साकारात्मक कार्य कर सकती है। इसी गंगोत्री से ही कामदेव भी प्रकट हो रहे है तथा रति भी, क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण का तो मूल स्वरूप 'क्ली' (काम बीज) स्वरूप ही तो ऋषियों-मनीषियों द्वारा स्वीकार्य किया गया हैं यह स्वरूप भी तब तक अधूरा ही है, तब जब तक इसमें राधा जी की समाहिती नहीं होती।

साधको को चाहिये, कि वे इस वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी को संकल्प कर यह साधना अवश्य सम्पन्न कर अनुभव करें, कि उनके विगत जीवन से कितना अधिक परिवर्तन उनमें आ गया है। इस साधना को करने में किसी भी प्रकार का कोई बंधन नहीं हैं

इस अद्वितीय साधना को सम्पन्न करने में रूचि रखने वाले साधक को साधना दिवस कल्प में रात्रि को आठ बजे यह साधना प्रारम्भ कर देनी चाहिये।

साधक के पास ताम्रपात्र पर अंकित अत्यन्त गुह्य 'राधा-कृष्ण यंत्र' होना आवश्यक है, जो वैष्णव तंत्र के अनुसार युग्म मंत्रों से इस साधना हेतु संजीवित किया गया हो। इसके अरिरिक्त 'कामदेव गुटिका', रति गुटिका' तथा सफेद हकीक माला' इस साधना की अन्य आवश्यक सामग्रियां है।

साधक स्वयं पीत वस्त्र धारण करें तथा पीत आसन बिछाकर अपने सम्मुख भी पीले रंग का ही कपड़ा बिछाये। दिशा उत्तर या पूर्व मुख रहे। सर्वप्रथम यंत्र का पूजन श्वेत चंदन, गुलाल, कुंकुम, अक्षत, पुष्प की पंखुडियों एवं इत्र से करें। यदि साधक के पास इनमें से कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, अपितु उसका उच्चारण कर एक आचमनी जल छोड़ दे, यद्यपि प्रयास यही करें, कि सभी पूजन सामग्रियां मूल रूप में ही उपलब्ध हो। इसके अतिरिक्त यदि साधक को अशोक वृक्ष के पत्ते उपलब्ध हो सके, तो उनको भी पूजन में तोरण बनाकर अवश्य प्रयोग करें। समस्त पूजन के मध्य मन ही मन 'क्ली' बीज का सतत् जप करते रहे।

यंत्र के पूजन के उपरांत 'कामदेव गुटिका' एवं रति गुटिका का भी इसी प्रकार पूजन करें तथा इसके उपरांत दोनों हथेलियों में इत्र मल कर, हकीक की माला के सुमेरू पर भी इत्र लगा कर निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें। सम्पूर्ण पूजन के मध्य तीव्र सुगन्ध से युक्त अगरबत्तियां एवं घी का दीपक लगाना भी फलप्रद माना गया है।

मंत्र

।। ऊँ ऐं ऐं वं कृष्णाराधायै स्वाहायै नमः।।

मंत्र जप के उपरांत कुछ देर शांत भाव से उसी स्थान पर बैठे रहे तथा इसके उपरांत पहले से प्राप्त मढ़वा लिए गए श्री राधा-कृष्ण के मंत्र सिद्ध के चित्र समक्ष आरती करें तथा अंत में हाथ जोड़कर निम्न मंत्रोच्चारपूर्वक प्रणाम करें-

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः
स्थिरचर वपुवर्देविषयो,
धियां साक्षी शुद्धो
हरिसुर हन्ताब्जनयनः।
गदा शंख, चक्र विमल
वनमाली स्थिररूचिः
शरव्यो लोकेषु मम
भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः।।

साधना के दूसरे दिन सभी सामग्रियों को किसी सरोवर, तालाब अथवा कुण्ड में पवित्रता पूर्वक विसर्जित कर दें। प्रेम के क्षेत्र में मनोकामना पूर्ण करने की यह सिद्ध साधना है। विवाहित स्त्री-पुरूष इसको सम्पन्न कर अपने जीवन में नवीन उत्साह व क्रीड़ा का संचार कर सकते है। इस साधना को किसी भी आयुवर्ग का कोई भी साधक (अथवा साधिका) सम्पन्न कर सकता है।

राधाकृष्ण प्रेम अनंग सौन्दर्य प्राप्ति दीक्षा

सामग्री सहित दीक्षा न्यौछावर ₹2800

गुरू का आत्मीय प्रेम भाव शिष्य के प्रति....

गुरू द्वारा शिष्यों पर शक्तिपात मानसिक धरातल पर एक विशेष घटना है जहाँ गुरू शिष्य के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं जब शिष्य अपने महान् गुरू से मिलता है तो उसका मस्तिष्क शरीर और भावनाएं प्रभावित हो जाती हैं। शिष्य जब महान् गुरू के प्रभाव में आता है तो वह अपने आप को गुरू के सामने खोल देता है और तब शिष्य में एक व्यक्तिगत परिवर्तन होता है, यही परिवर्तन शिष्य के मस्तिष्क में एक आत्मिक घटना होती है।

मनुष्य के कई जन्म होते हैं, पहला जन्म तब उसका होता है जब वह माता के गर्भ से बाहर आता है, दूसरा जन्म तब होता है जब अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान, दूसरों से पढ़ सुनकर, संसार को देखकर प्राप्त करता है। तीसरा जन्म उसका तब होता है जब वह अपने गुरू से उपदेश लेकर मंत्र दीक्षा लेकर अपने स्वरूप को जानने के लिए आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ कर देता है। जब व्यक्ति गुरू की शरण में जाता है तो यह निम्न कोटी की पराधीनता अर्थात वासना की वृतियां समाप्त होने लगती है व्यक्ति स्वयं अपने मन का स्वामी बनने लगता है अपनी वृतियों पर नियंत्रण करने लगता है अपनी चंचलता को संभालने लगता है, इस प्रकार व्यक्ति अपना स्वामी स्वयं बन जाता है। सांसारिक भाषा में उसका प्रमोशन तो हो गया लेकिन अब दूसरी ओर गुरू जी के आश्रित हो गये। इस स्थिति में एक चीज का चुनाव करना है हमारे सामने एक पिशाच खड़ा है और एक देव स्वरूप दयालु व्यक्ति भी खड़ा है ये दोनों हर समय हमारे सामने है। गुरू जी कहते है 'बेटा इधर आ जाओ' और शिष्य कहता है 'गुरू जी हम आपके अधीन नहीं बनेंगे' और सांसारिक पिशाच गला पकड़े हुए है ऐसी स्थिति में बुद्धिमान व्यक्ति सोचता है यदि यह सांसारिक वृत्तियों, वासनाओं और अज्ञान का पिशाच मेरा गला पकड़े हुए है तो इससे अच्छा है कि उसकी पकड़ से निकलकर गुरू जी की पकड़ लग जाए। चाहे वह हमको पराधीन बनावें, नौकर बनाएं अथवा गुलाम बनायें कम से कम कुछ तो भला होगा ही कम से कम सद्गुरू हमारा गला तो नहीं काटेंगें, नीच बुद्धि तो नहीं देंगे, संसार दुःख रूपी राक्षस से तो हम स्वतंत्र रहेंगे।

गुरू एक सर्जन की तरह है उसके हाथ में एक पैना चाकू है और उस चाकू से वह शिष्य की अविद्या की ग्रंथियों को काटता रहता है उस समय शिष्य को बड़ी तकलीफ होती है, सोचता है कि कहाँ आकर फंस गये लेकिन जब एक बार अविद्या की ग्रंथि कट जाती है तो कई प्रकार के सांसारिक दुःखों से मुक्ति मिल जाती है। गुरू शिष्य को अनुशासन देते है उसे पराधीन या गुलाम नहीं बनाते यदि गुरू शिष्य को अपने ऊपर आश्रित करते हैं निर्भर करते हैं तो वह उसका विनाश नहीं करते अपितु उसे संभालते हैं। संसार में दो प्रकार के शिष्य होते है एक तो वीतरागी संन्यासी शिष्य और दूसरे साधरण गृहस्थ शिष्य। जो संन्यासी है जिन्होंने संसार में रहते हुए भी सांसारिक जीवन से नाता तोड़ लिया है जिनके लिए गुरू सेवा और गुरू के प्रति पूर्ण समर्पण ही शिष्य बनने का रास्ता है और जब शिष्य अनुशासित होता है तो उसे आनन्द की प्राप्ति होती है सिद्धियों का ज्ञान, वेद-पुराणों का ज्ञान, योग क्रियाओं का ज्ञान व्यक्ति को शिष्य नहीं बना सकता है। मात्र आनन्द ही उसे सच्चा शिष्य बना सकता है इसीलिए संन्यासी के नाम के अन्त में आनन्द लगा होता है।

जब गुरू का शिष्य के साथ आन्तरिक सम्बध स्थापित हो जाता है तो वह धीरे-धीरे शिष्य के दोषों को दूर करता है - जब तक कि वह ईश्वर का सही माध्यम न बन जाये। इस आन्तरिक प्रक्रिया को पूर्ण रूप से समझना कठिन है, क्योंकि गुरू शिष्य सम्बन्ध आत्मिक स्तर पर होता है। गुरू हमेशा

अपने शिष्य का ख्याल करता है। कभी भूल ही नहीं सकता। गुरू शिष्य का आन्तरिक सम्बन्ध कभी नहीं टूटता। जब गुरू प्रथम बार शिष्य से मिलते हैं तो शिष्य उसे देखकर एक आत्मिक स्नेह का अनुभव करता है। यह स्नेह माता-पिता, बन्धु और प्रेमी से बढ़कर होता है। गुरू के स्नेह पाश में बंधकर सांसारिक बंधनों को तोड़कर शिष्य अपने गुरू के पास चला जाता है। तब उसे लगता है कि इस जगत में अब तक मैं क्या था और वह अपने संस्कार तथा वासना के पिटारे को गुरू चरणों में सौंप देता है। गुरू उसे स्वीकार कर लेते हैं, गुरू परीक्षाओं के बाद उसे साधना और तप की अग्नि में निर्मल बनाकर अपने आत्म ज्ञान को उसे सौंप देते हैं। इसी आत्मा समर्पण के कारण शिष्य गुरू के विशाल ज्ञानमय व्यक्तित्व को पहचान लेता है और उनके सम्पूर्ण क्रिया कलापों को आत्मसात कर लेता है। इस प्रकार वह गुरू के अनन्त भंडार का उत्तराधिकारी बन जाता है।

वास्तव में गुरू ही हमारी आत्मा का दर्पण है। आपके अच्छे या बुरे जैसे भी विचार होंगे उसी के अनुरूप अच्छा या बुरा आपको अपना गुरू दिखाई देगा। उदाहरण यदि आप अंदर से दयालु एवं सरल प्रवृत्ति के हैं तो आपको अपने गुरू भी दयालु व सरल दिखाई देंगे। जैसे-जैसे आपके विचारों में पवित्रता आती जाएगी, आत्मा का रूप निखरेगा और आपको अपना गुरू भी उच्च रूप में दिखाई देगा। गुरू ही वह स्वच्छ, निर्मल तथा कभी न टूटने वाला दर्पण है जिसमें आप अपनी आत्मा का सही रूप देख सकते हैं, संवार सकते हैं, अर्थात आत्मा-साक्षात्कार कर सकते हैं।

गुरू रूपी दर्पण को कहीं काँच के दर्पण जैसा न समझ लें। काँच का दर्पण यदि गंदा हो जाएगा तो पहले आपको उसे राख-पानी या साबुन से धोकर कपड़े से रगड़ कर पोंछना होगा, तब कहीं आप अपना सही रूप देख सकेंगे। पर गुरू रूपी दर्पण तो सदैव स्वच्छ एवं निर्मल है। उस पर कभी भी धूल-मिट्टी जम नहीं सकती। जब चाहे, आप अपनी आत्मा का स्वरूप उसमें निहार लें। अपना बाह्य रूप देखने के लिए तो काँच का दर्पण आपको अपने हाथ में उठाकर देखना होगा, पर गुरू तो एक ऐसा अनमोल दर्पण है जो प्रत्येक क्षण आपके हृदय में है। जब चाहें, स्वयं का आत्मिक चेहरा देख लें।

लोग कहते है कि यदि विगत जन्म में हमारे यही गुरू है तो पुनः उन्हीं गुरू को पाने के लिए क्यों भटकना पड़ता है, साधना करनी पड़ती है। यदि किसी साधक का अपने विगत जीवन में कोई गुरू था लेकिन वर्तमान जीवन में वह उस गुरू का शिष्य नहीं है तो प्रारंभ में अपने गुरू के अभाव में उसे बहुत अनिश्चितता का अनुभव करना पड़ता है। उसे अपने जीवन की सीमाओं और क्षण भंगुरताओं के बारे में बार-बार सोचना पड़ता है। जब वह अपनी सीमाओं का अनुभव कर चुका होता है तभी उसे अपनी अन्तश्चेतना में विद्यमान, किन्तु अज्ञात उस विगत जीवन के गुरू के विषय में अधिक से अधिक अनुभूति होने लगती है। उस गुरू के प्रति उसके भीतर उत्सर्ग, सम्मान और समर्पण का भाव प्रबल होने लगता है। फिर उसे अपना वह विगत जीवन का गुरू प्राप्त हो जाता है।

शरीर भाव में गुरू शिष्य दो हैं और दो ही रहेंगे। लेकिन उनका सूक्ष्म सम्बन्ध जो आध्यात्मिक धरातल पर आधारित है वस्तुतः एक ही है इस प्रकार जब गुरू शिष्य में परस्पर एकात्म भाव स्थापित हो जाता है तब आत्म चेतना का प्रवाह सतत हो जाता है जहाँ न तो गुरू भिन्न होता है और न ही शिष्य, दोनों मिलकर एक हो जाते हैं। जिस प्रकार समुद्र में मिलने पर नाले का जल ओर गंगा का जल दो नहीं रह पाते, एक हो जाते हैं और यही सब शिष्यों की मंजिल है।

एक अभिनव प्रयोग

सोम अमृत साधना

जीवन में केवल दो ही अवस्थाएं दृष्टिगोचर होती हैं- जीवन और मृत्यु, सुख और दुःख और यही काल चक्र है, जो निरन्तर गतिशील है, जब व्यक्ति की मनोकामना पूर्ण नहीं होती तो वह दुःखी हो जाता है और जब पूरी हो जाती है, तो सुखी, यह सुख स्थायी रूप से बना रह सके, इसी का प्रमाण है यह अभिनव साधना।

समय का चक्र सदैव गतिशील है, इसकी गति अबाध है। मानव ने समय को पहचाना और इसकी गति के साथ मिलकर चलने का प्रयास किया। कभी-कभी मानव की गति समय से तेज प्रतीत होती है, तो कभी धीमी। अपने चिन्तन को थोड़ा विस्तार देकर ध्यान से देखें, तो स्पष्ट होगा कि समय की गति के कारण मानव का जीवन समय की विभिन्न दो अवस्थाओं से प्रभावित होता है, ये दो अवस्थाऐं हैं- दिन और रात, जीवन और मृत्यु, सुख और दुःख, सम्पन्नता और दैन्यता।

'रात', 'दुःख', 'दैन्यता' और 'मृत्यु' ये मानव जीवन में असीम वेदना से भरे क्षण होते हैं। ऐसी अवस्था में आवश्यक है, कि वह व्यक्ति दृढ़ता, धैर्यता और सुविचारों का सहारा लेकर समय की दूसरी अवस्था 'दिन', 'सुख', 'सम्पन्नता' और 'जीवन' को स्थायी रूप से प्राप्त करने का प्रयास करे।

इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्न करता ही है और दुःख व दैन्यता जैसे पथरीले रास्तों को पार करने की कोशिश करता है। अपने प्रयास में सफल व्यक्ति को जब राजमार्ग प्राप्त हो जाय, तो उसे प्रयास कर इसी मार्ग पर ही चलना चाहिए; किन्तु इस बात को कहना जितना सहज है, उससे कहीं ज्यादा कठिन है इसको कर दिखाना, क्योंकि कभी-कभी ऐसे क्षण भी सामने आ जाते हैं, जब एक सबल सहारे की आवश्यकता पड़ती है, जो उसे दृढ़ता से खड़ा रखते हुए राजमार्ग पर अग्रसर कर सके।

और यह सबल अवलम्बन केवल और केवल मात्र

'सद्गुरू' के रूप में ही प्राप्त होता है, वे जीवन के मार्ग से परिचित हैं, क्योंकि उन्होंने इस रास्ते को पार किया है। सद्गुरू के पास साधना रूपी ऐसी शक्ति होती है, जिसे वे अपने शिष्य को प्रदान कर उसका मार्ग निष्कण्टक बनाते हैं। साधना की क्रिया-पद्धति, विधि-विधान के बारे में पूर्ण जानकारी तो वही व्यक्ति दे सकता है, जिसने उसे परखा हो और उसमें सफलता अर्जित की हो।

गुरू किसी व्यक्ति का नाम नहीं होता; गुरू का अर्थ है- 'ज्ञान', और जो ज्ञान दे सके, वही गुरू है। ऐसा समझ लीजिये कि यह पत्रिका ही आपकी गुरू है, जो समय-समय पर आपको दिशा-निर्देश देती रहती है और विभिन्न साधनाओं के माध्यम से यह बताती रहती है, कि किस प्रकार अपने जीवन की **कमियों** को, **न्यूनताओं** को और **अभावों** को दूर किया जा सकता है।

गुरू परम्परा द्वारा प्रदत्त यह लघु 'सोम अमृत साधना' अपने आप में अनन्त संभावनाओं को समेटे है। लघु होते हुए भी अपने-आप में असीम विराटता को संजोये हुए है। सोम का अर्थ है- चन्द्रमा, कपूर, शिव, जल, वायु, हवा और अमृत। जो इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, वह अमर हो जाता है, यानि लम्बी आयु प्राप्त कर अपनी अनन्त, असीम इच्छाओं की, जिन्हें इच्छाएं न कह कर जीवन की आवश्यकताएं कहें, तो ज्यादा उचित रहेगा, की पूर्ति कर लेता है और जब ऐसा होता है, तो उसका दुःखी, मृतवत् जीवन जीवंतता में बदल जाता है, उसे जीवन को भली प्रकार से जीने की कला आ जाती है; एक नया चिन्तन, विचार, धारणा स्वतः ही उसका मार्ग प्रशस्त करती रहती है, वह जैसा चाहे वैसा करके अपने जीवन की हर परेशानी से, बाधा से और तनाव से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

'मानव' का अर्थ है- जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर करना, ऊँचाई की ओर उठाना, एक श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करना और अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर लेना और यह प्रयोग इसी कार्य की पूर्ति हेतु दिया जा रहा है, जो इस प्रकार है-

साधना विधि

1. साधकों को चाहिए कि वे साधना सामग्री 'सर्व साधना सिद्धि यंत्र' एवं 'अमृतेश माल्य' जो कि मंत्र-चैतन्य हो, पहले से ही मंगवाकर रख लें।
2. इस साधना को हरतालिका तीज या किसी भी बुधवार के दिन अथवा किसी भी माह में पड़ने वाले अमृत सिद्धि योग के दिन सम्पन्न करें।
3. यह प्रयोग प्रातः या सायं कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है।
4. साधकों को चाहिए कि वे स्नान कर, शुद्ध व स्वच्छ हो, पूजागृह में बैठ जायें।
5. पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
6. पीले आसन का उपयोग करें।
7. पीली धोती तथा ऊपर से गुरू चादर ओढ़ लें।
8. फिर किसी बाजोट पर पीले वस्त्र को बिछा दें तथा बायीं ओर जल से भरा कलश स्थापित करें, उसके ऊपर एक नारियल को मौली से बांध कर, कुंकुम व अक्षत चढ़ा कर स्थापित कर दें।
9. इसके पश्चात् 'यंत्र' को बाजोट पर स्थापित कर उसके ऊपर 'अमृतेश माल्य' को रख दें।
10. फिर हाथ में जल लेकर, मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रार्थना कर जल को भूमि पर छोड़ दें।
11. फिर गुरू यंत्र व चित्र का पूजन कर 4 माला गुरू मंत्र-जप करें।
12. पूजन के बाद हाथ जोड़कर गुरूदेव से साधना-सिद्धि की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करें।
13. फिर भूमि पर थोड़ा सा जल गिरा दें।
14. इसके पश्चात् सर्व साधना सिद्धि यंत्र और अमृतेश माल्य को दोनों हाथों में रखकर मूल मंत्र का 2 माला रोज 15 दिन तक जप करें-

मंत्रः-

।। ॐ श्रीं सोमस्ते मनसः कामं श्रीं नमः।।

।। Om Shreem Somaste Mansah Kaamam Shreem Namah।।

15. मंत्र-जप के समाप्त होने पर गुरू आरती करें तथा 15 दिन के बाद समस्त सामग्री को नदी या कुंए में प्रवाहित कर दें।
16. यथा सम्भव साधना काल में मौन रहने का प्रयास करें, गुरू के प्रति तथा मंत्र के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखें।

यह प्रयोग अकाल-मृत्यु, भय, दरिद्रता निवारण, राज्य बाधा, सामाजिक बाधा व पारिवारिक उलझनों को समाप्त करने वाला एक लघु प्रयोग है, जो लघु होते हुए भी प्रभाव में विशाल है।

सर्व दुःख भंजन पंच देव शिवत्व दीक्षा

सामग्री सहित दीक्षा न्यौछावर ₹2600

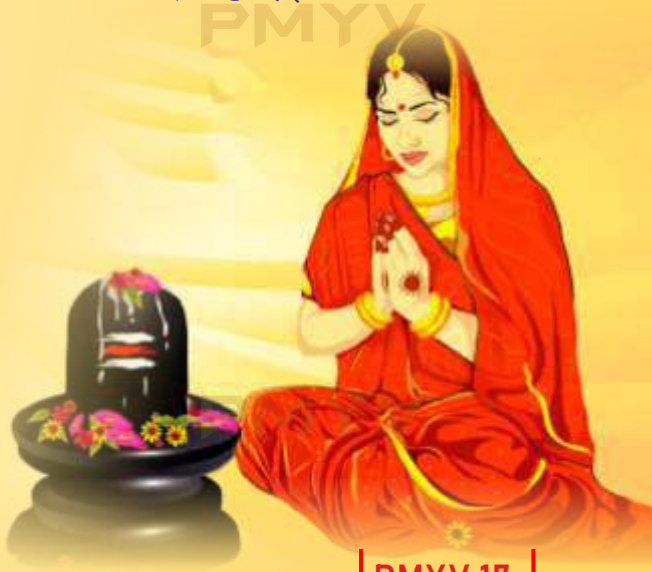

विघ्न हरण विनायक गौरी साधना

गणेशोत्सव पूजन मुहूर्तः 07 सितम्बर, शनिवार दिवा 11:03 AM से दिवा 01:33 PM अवधिः 02 घंटे 30 मिनट

गणपति तो अत्यन्त सहज देव हैं और भोले भी! जो भी उनसे प्रार्थना करता है, वह उसके कार्यों को पूर्ण रूप से सफल बनाते हैं। गणपति साधना करने पर मात्र गणपति की ही नहीं वरन शिव और गौरी के नन्दन होने के कारण उनकी भी कृपा साधक को प्राप्त होती ही है, क्योंकि गणपति तो उनके अत्यन्त प्रिय पुत्र हैं।

किसी भी प्रकार के पूजन में सबसे पहले गणपति का पूजन किया जाता है। गणपति समस्त गणों के अधिपति हैं। गणपति का वेदों में भी उल्लेख है और वे पूर्ण कल्याणकारी देव माने गये हैं।

ब्रह्मा सृष्टि की रचना करते हैं, विष्णु सृष्टि का पालन करते हैं और महेश सृष्टि के संहारकर्ता के रूप में पूजे जाते हैं। सृष्टि में प्रत्येक कार्य चाहे वह संरचनात्मक हो, संचालन का हो या संहारत्मक हो, प्रत्येक कार्य में प्रथम पूज्य गणपति ही हैं।

एक बार देवर्षि नारद ने महादेव से पूछा- 'हे महेश! कृपा कर यह बतायें, कि गणेश की प्रथम वन्दना क्यों की जाती है? हे कैलाश पति! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि वे आपसे सर्वाधिक स्नेह कैसे प्राप्त कर लेते हैं।'

तब महादेव ने कहा - 'हे ऋषि श्रेष्ठ! उनमें इस बात का तनिक भी अहं नहीं, कि उनकी वन्दना सब देवों से पहले होती है, वे अपने आपको स्वयं में अत्यन्त नगण्य मानते हैं और अपने प्रत्येक कार्य को हमारी ही आज्ञा मान कर करते हैं और सबसे अधिक बुद्धिमान भी हैं। इसलिए हे ऋषिवर! वे हम दोनों के अत्यन्त स्नेह और कृपा के पात्र हैं।'

इस पर नारद ने कहा - 'हे देव। मैं उनकी परीक्षा लेना चाहता हूँ, कि उनमें कितनी भक्ति है, वे कितने आज्ञापालक हैं और प्रथम पूज्य क्यों है?'

महादेव ने गणपति और कार्तिकेय को बुलाया और कहा - 'तुम दोनों को पृथ्वी की सात परिक्रमा करनी है और जो

पहले आयेगा वह हम दोनों का अत्यन्त स्नेही होगा।' यह आज्ञा देने पर महादेव के दोनों पुत्र अपने पिता की आज्ञा पालन करने को तैयार हुए। श्री कार्तिकेय तो पृथ्वी की सात परिक्रमा लगाने के लिए दौड़े, ताकि वे पहले पहुँच कर, अपने माता-पिता के स्नेह को प्राप्त कर, उनके प्रिय बन सकें।

लेकिन गणपति ने प्रार्थना की-

'हे माता-पिता! आप दोनों साथ-साथ बैठ जायें, ताकि मैं आपकी परिक्रमा कर सकूं, क्योंकि माता-पिता के चरणों में तो पूरा ब्रह्माण्ड निहित है।'

और उन्होंने अपने माता-पिता गौरी-शंकर की परिक्रमा लगाई और चरण स्पर्श किया। यह देख कर महामुनि नारद ने कहा - 'यह तो गलत है, गणेश ने तो पृथ्वी की परिक्रमा की ही नहीं, फिर आप उन्हें कैसे प्रिय मान रहे हैं?

गणेश ने कहा- 'हे मुनि श्रेष्ठ! समस्त ब्रह्माण्ड मेरे माता-पिता के चरणों में निहित है। अतः मैंने सिर्फ पृथ्वी की ही नहीं, अपितु समस्त ब्रह्माण्ड की सात बार परिक्रमा की है और सबसे पहले उनको श्री चरणों में उपस्थित हुआ हूँ इसलिए मैं उनके अत्यन्त स्नेह का पात्र हूँ।'

इस पर महामुनि ने कहा - 'वास्तव में गणेश आपके श्रेष्ठ पुत्र हैं और गणेश की वन्दना ही प्रथम होनी चाहिये। गणेश का अगर एक स्वरूप विघ्नहर्ता है, तो दूसरा स्परूप अत्यन्त आज्ञाकारी पुत्र और अत्यधिक उच्चभक्ति का भी है। अतः उनकी साधना करने पर व्यक्ति के विघ्न तो खत्म होंगे ही, उसके साथ ही यदि साधक गणपति की साधना गौरी नन्दन के रूप में करेगा, तो उसे एक श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति भी होगी, जो आज्ञाकारी होगा।'

और इसी रूप की साधना जीवन में आवश्यक है क्योंकि इस युग में तो माता-पिता अपने बच्चों को अत्यधिक परिश्रम कर, उन्हें उच्च से उच्च शिक्षा दिलाने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन बच्चे गलत संगत में पड़कर उनकी सारी आशाएं धूमिल करने के लिए तैयार हो जाते हैं। वे यह समझ भी नहीं पाते, कि उनके माता-पिता उनके लिए कितना अधिक परिश्रम कर रहे हैं उन्हें योग्य बनाने के लिए, क्योंकि वे अनेक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं अपने पुत्र को समाज की प्रत्येक समस्या से निपटने योग्य बनाने के लिए, क्योंकि वे माता-पिता अपने पुत्र को समाज में प्रतिष्ठित देखना चाहते हैं।

प्रत्येक माँ- बाप का यही स्वप्न रहता है, कि वे अपने पुत्र को समाज के एक प्रतिष्ठित, सम्मानित एवं सुयोग्य व्यक्तित्व के रूप में देखें और उनका पुत्र उनके प्रयत्नों को सार्थक बनाये। कभी-कभी पुत्र प्रयत्न करने पर भी अपने कार्यों में सफल नहीं हो पाता। वह प्रत्येक कार्य को प्रसन्नतापूर्वक उत्साह से करता है, लेकिन कुछ न कुछ विघ्न उसके कार्यों को सफल नहीं होने देते और वह अपने प्रयत्नों में असफल होकर गलत राह पर निकल पड़ता है। पुत्र की सद्बुद्धि के लिए यह साधना अत्यन्त सटीक है, क्योंकि पुत्रों की वजह से जीवन में कई समस्याएं खड़ी हो जाती हैं।

यह साधना मात्र उन गणेश की ही नहीं है, जो ज्ञान और आनन्द के निर्मल स्वरूप हैं, बल्कि इसके माध्यम से उन गौरी की भी अर्चना होती है जो शिव की शक्ति हैं और एक श्रेष्ठ पुत्र को उत्पन्न करने वाली माँ हैं। इस साधना की सिद्धि से साधक को श्रेष्ठ, सुन्दर मुख वाला, श्रेष्ठ आचरण वाला, मातृ-पितृ भक्त, उनकी दी हुई आज्ञाओं का पालन करने वाला, अपने समस्त कर्तव्यों का भली प्रकार से निर्वाह करने वाला पुत्र प्राप्त होता है और इस साधना के फल स्वरूप वह सन्मार्ग पर अग्रसर होने लगता है।

साधना विधानः

यह साधना आप गणपति अवतरण पर्व को कर सकते हैं। यह एक दिवसीय साधना है और यह प्रातःकाल या रात्रि किसी भी समय की जा सकती है। इस साधना में 'गणेश यंत्र', 'गौरी गुटिका' तथा 'विघ्न हरण माला' की आवश्यकता होती है। इसमें आप शुद्ध स्वच्छ सफेद वस्त्र पहन कर 'गुरू पीताम्बर' धारण कर पूर्वाभिमुख होकर साधना करें।

अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछाकर लाल आसन बिछायें। उस पर यदि आपके पास गणेश चित्र हो, तो उसे और 'गणेश यंत्र' को स्थापित करें।

इसके पश्चात साधक यंत्र, चित्र पर पुष्प, अबीर, गुलाल, अक्षत तथा वस्त्र अर्पित करें।

इसके बाद 'गौरी गुटिका' को चावल की ढेरी बना कर स्थापित करें, गौरी का ध्यान करें। गुटिका पर पुष्प, गन्ध तथा अक्षत अर्पित करें।

गणपति का ध्यान करें, कि वह आपके जीवन की इच्छाओं को पूर्ण कर समस्त विघ्नों का नाश करें-

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक।।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक।।
धुम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

इसके बाद 'विघ्नहरण माला' से निम्न मंत्र का 21 माला जप करें-

।। ऊँ गं गीं गौं विघ्न विघातं कुरू कुरू ऊँ नमः।।

।। Om Gam Geem Gaum Vighna Vighatam Kuru Kuru Om Namah।।

जप समाप्ति के बाद 21 बार उपरोक्त मंत्र बोलते हुए तिल से हवन करें। साधना समाप्त होने के पश्चात अगले दिन समस्त सामग्री नदी में विसर्जित कर दें।

गौरीनंदन संकट हरण अमरत्व प्राप्ति दीक्षा

सामग्री सहित दीक्षा न्यौछावर ₹2800

अखण्ड पुण्य प्राप्ति
त्री विघ्न नाशक गणपति लॉकेट

जीवन में निर्विघ्नता तथा मंगल के लिए भगवान् गणपति की आराधना उतनी ही आवश्यक है, जितनी की एक मनुष्य को जीने के लिए प्राण-वायु की। किसी भी शुभ कार्यों के पूर्व भगवान गणपति पूजित होते ही हैं, इसीलिए इन्हें 'मंगलमूर्ति' कहते हैं। ये देवाधिदेव तो हैं ही, किन्तु इनकी आराधना अत्यन्त सरल और शीघ्र सफलता देने वाली होती है।

कहा जाता है कि बीमारी, मुकदमा और गरीबी ये तीन शत्रु ऐसे हैं जो जीवन को दीमक की तरह खोखलाकर देने वाले हैं। एक बार जब ये तीनों जीवन में घुस जाते हैं तो जीवन शनैः-शनैः खोखला होता रहता है और ऐसा लगता है कि जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है। मनुष्य का ये कर्त्तव्य है कि इन तीन बाधाओं से जीवन में जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी मुक्ति प्राप्त कर ले। जीवन में शत्रुओं द्वारा किये गए घात-प्रतिघात से जो स्थिति बनती है वह अत्यन्त पीड़ा दायक होती है। रोज-रोज कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाना, सम्पत्ति पर दूसरों का कब्जा, परिवार में विभेद, ये सारी स्थितियाँ विनाशकारी ही हैं।

समस्त विघ्नों का नाश करने वाले विघ्नविनाशक गणेश की यदि साधक पर कृपा बनी रहे, तो उसके घर में ऋद्धि-सिद्धि, जो कि गणपति जी की पत्नियाँ हैं और शुभ-लाभ जो कि उनके पुत्र हैं, उनका भी स्थायित्व होता है। इसी हेतु श्री गणपति अवतरण पर्व पर सद्गुरूदेव जी भगवान गणपति जी की दिव्य चेतना युक्त तांत्रोक्त विघ्ननाश अघोर प्रयोग से यह 'अखण्ड पुण्य प्राप्ति त्री विघ्न नाशक गणपति लॉकेट' को प्राण प्रतिष्ठीत कर चेतन्य किये हैं। इसके निरन्तर धारण करने से साधक के घर में सुख, सौभाग्य, समृद्धि, मंगल, उन्नति एवं समस्त शुभ कार्य सफलतामय होते ही रहते हैं।

वास्तव में यह लॉकेट धारण करना ही भगवान गणपति का कृपाद्योतक है, त्री विघ्न नाशक तथा अखण्ड पुण्य प्राप्ति का प्रतीक है।

अखण्ड पुण्य प्राप्ति त्री विघ्न नाशक गणपति लॉकेट

तीन वर्षीय पत्रिका सदस्यता न्यौछावर ₹ 1500

उक्त राशि भेजने पर साधक को अगले तीन वर्षों तक निरन्तर पत्रिका भेजी जाती रहेगी।

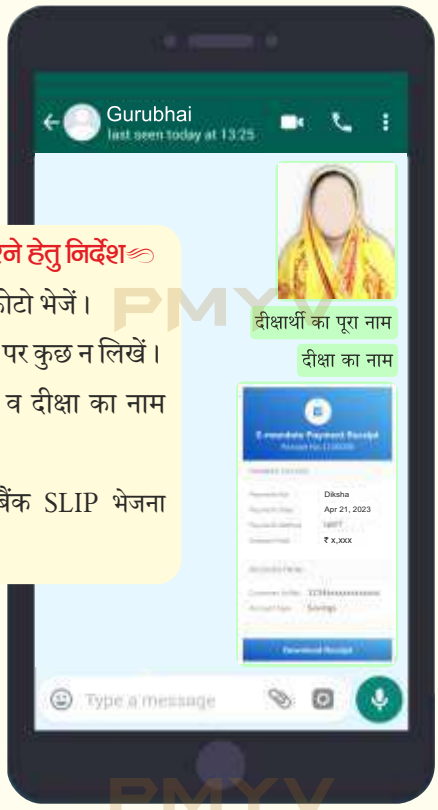

दीक्षा ग्रहण करने हेतु निर्देश

- दीक्षा हेतु नवीन फोटो भेजें।
- दीक्षार्थी की फोटो पर कुछ न लिखें।
- दीक्षार्थी का नाम व दीक्षा का नाम अवश्य लिखें।
- दीक्षा राशी की बैंक SLIP भेजना अनिवार्य है।

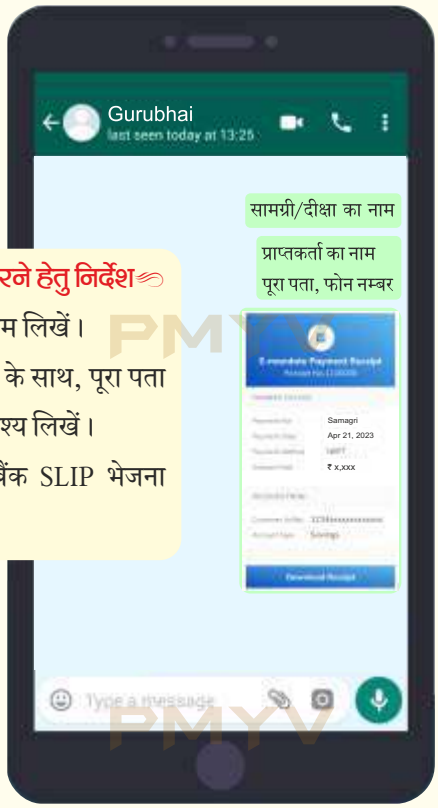

सामग्री प्राप्त करने हेतु निर्देश

- सामग्री का पूरा नाम लिखें।
- प्राप्तकर्ता के नाम के साथ, पूरा पता व फोन नम्बर अवश्य लिखें।
- दीक्षा राशी की बैंक SLIP भेजना अनिवार्य है।

राधाष्टमी युक्त महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ

11 सितम्बर

तांत्रोक्त ऋणहर्ता ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना

जब जीवन में ऋण आता है तो दीमक की तरह खा जाता है जीवन की खुशी, प्रसन्नता, आनन्द, स्वास्थ्य समाप्त हो जाते हैं। समाप्त करिये जीवन में ऋण दोष को इस साधना से।

जो कुलीन हो, सदाचारी हो, सिद्धि के लिए तत्पर हो, वेदपाठी हो, चतुर हो और कामवासना से रहित हो, जो प्राणियों का हित ही चाहता हो, आस्तिक हो, नास्तिकों का साथ छोड़ चुका हो, अपने धर्म से प्रेम रखता हो, भक्तिभाव से माता-पिता के हित में संलग्न हो, कर्म, मन, वाणी और धन से गुरूसेवा करने के लिए लालायित रहता हो, गुरूजनों के सामने जाति, विद्या, धन आदि का अभिमान न रखता हो, गुरू की आज्ञा-पालन के लिए मृत्यु तक के लिये तैयार हो, अपने काम छोड़कर भी गुरू सेवा में लगा रहने वाला हो, जो गुरू के पास दास की भांति निवास करता हो, शिशु के समान आज्ञा पालन करता हो, वही शिष्य रूप में स्वीकार करने योग्य है, दूसरा नहीं। जो मंत्र और पूजा रहस्यों को गुप्त रखता है, त्रिकाल नमस्कार करता है और शास्त्रीय आचार के तत्वों को जानता है वही शिष्यरूप में स्वीकार करने

योग्य है, दूसरा नहीं। जो इन गुणों से युक्त होता है, वही शिष्य होता है।

जीवन में तीन दुःख प्रधान होते हैं - 1. बीमारी, 2. वाद-विवाद, मुकदमा, और 3. ऋण। उनमें यदि आपके पास तीसरा दुःख ऋण अर्थात् लक्ष्मी की कमी नहीं है तो आप बीमारी की बाधा को पार कर सकते हैं, मुकदमे, वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े के कुचक्र से निकल सकते हैं, लेकिन यदि धन का ऋण है तो ये तीनों दोष वृद्धि करते हैं।

ऋण दोष का निवारण कैसे हो?

जितनी बड़ी बीमारी होती है उसके लिये यह आवश्यक नहीं कि उसका इलाज भी उतना ही बड़ा हो, कई बार बड़ी-बड़ी औषधियां काम नहीं करती, वही साधरण सी औषधि से रोग जड़ से समाप्त हो जाता है।

ऋण की माता का नाम है निर्धनता और निर्धनता को नष्ट कर देने वाली देवी है लक्ष्मी और जब तक साधक लक्ष्मी की विशेष साधना नहीं करता तब तक उसे ऋण से मुक्ति नहीं मिल सकती और जिस दिन साधक यह संकल्प कर ले कि मैं इस निर्धनता के नाश के लिए कृत संकल्पित हूँ, क्रियाशील हूँ, परिश्रम के लिए तैयार हूँ लक्ष्मी की आराधना के लिए, लक्ष्मी के सम्मान के लिए तत्पर हूँ, तभी वह अपने जीवन में दोष से मुक्त हो सकता है।

लक्ष्मी उपासना में ऋण दोष को दूर करने के लिये विभिन्न प्रकार के प्रयोग वेदोक्त ग्रंथो में दिये गये हैं। विश्वामित्र संहिता में भी एक अत्यन्त श्रेष्ठ प्रयोग दिया गया है और इसके अतिरिक्त साबर साधनाओं में भी ऋण-निवारण प्रयोग हैं, लेकिन व्यक्ति जब तक अपने जीवन में माता-पिता की सेवा और गुरू सेवा और इसके साथ इन दोनों के प्रति अपने ऋण के महत्व को नहीं समझेगा, तब तक उसे धन ऋण से पूर्ण मुक्ति नहीं मिल सकती।

विश्वामित्र प्रणीत ऋण हर्ता साधना

विश्वामित्र ने जब अपना राजपाट छोड़ संन्यास धारण कर लिया तो उन्होंने देखा कि निर्धनता के कारण व्यक्ति का जीवन कष्टमय हो जाता है और वह संसार के कुचक्र में ही फंसा रहता है। इसलिये उन्होंने ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना की रचना की। इस प्रयोग को जो साधक सात दिन तक सम्पन्न करता है और उसके उपरान्त ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र का प्रतिदिन जप करते हुए एक लाख मंत्र जप सम्पन्न कर देता है तो उसे किसी न किसी माध्यम से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और वह अपना ऋण उतारने में समर्थ होता है।

इस साधना में मुख्य रूप से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र', '9 लक्ष्मी सिद्धि श्रीफल' तथा 'ज्येष्ठा लक्ष्मी माला' आवश्यक है। ये फल ज्येष्ठा लक्ष्मी की शक्तियों के स्वरूप हैं और इनका पूजन अवश्य करना चाहिये।

साधना विधानः

विनियोग

ॐ अस्य श्री ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप्छंदः।
ज्येष्ठालक्ष्मी देवता ह्रीं बीजम्।
श्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

अब ज्येष्ठा लक्ष्मी का ध्यान कर उस यंत्र को ताम्र के पात्र में पुष्प का आसन देकर स्थापित करें-

ऊँ रक्त ज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै
धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।

अब हाथ में सुगन्धित पुष्प लेकर यंत्र में ज्येष्ठा लक्ष्मी की भावना रखते हुए निम्न मंत्र पढ़ें-

ऊँ संविनमये परे देवि परामृत रस प्रिये।
अनङ्गां देहि ज्येष्ठायै परिवारार्चनाय मे।

अब नौ श्रीफल को जो ज्येष्ठा की नौ शक्तियों के प्रतिक हैं उनको पूर्व दिशा से प्रारम्भ करते हुए क्रमशः निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए स्थापित करना चाहिये-

1. ऊँ लोहिताक्ष्यै नमः
2. ऊँ विरूपायै नमः
3. ऊँ कराल्यै नमः
4. ऊँ नील लोहितायै नमः
5. ऊँ समदायै नमः
6. ऊँ वारूण्यै नमः
7. ऊँ पुष्टयै नमः
8. ऊँ अमोघायै नमः
9. ऊँ विश्वमोहिन्यै नमः

अब साधक अष्टगंध से इस पूरी सामग्री के चारों ओर एक घेरा बना दें तथा चारों दिशाओं में चार दीपक जलाकर रखें तथा ज्येष्ठा लक्ष्मी माला से 5 माला मंत्र जप अवश्य करें।

ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्रः

।। ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मी स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।।
।। Aem Hreem Shreem JyesthaLaxmi
Swayambhuve Hreem Jyesthayae Namah ।।

इसके पश्चात साधक सारी सामग्री को एक थाली द्वारा ढक दें और दूसरे दिन पुनः इस प्रयोग को सम्पन्न करें, इस प्रकार सात दिन तक प्रयोग करने के पश्चात साधक बाद में केवल ज्येष्ठा लक्ष्मी का मंत्र ही जपें।

जो साधक एक लाख मंत्र जप कर लेता है तो उसे जीवन में ऋण सम्बन्धी किसी प्रकार की बाधा का सामना नहीं करना पड़ता है। मंत्र जप पूरा होने पर सारी सामग्री नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

ज्येष्ठ लक्ष्मी विजयश्री प्राप्ति दीक्षा

सामग्री सहित दीक्षा न्यौछावर ₹2800

हिंदी हमारी शान, हिंदी हमारी पहचान

हिंदी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिंदी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिंदी हमारी 'राष्ट्रभाषा' भी है। वह दुनियाभर में हमें सम्मान भी दिलाती है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। हमारी राष्ट्रभाषा अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है। इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। आज विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रुख कर रहे हैं। एक हिंदुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा यानी हिंदी तो आनी ही चाहिए, साथ ही हमें हिंदी का सम्मान भी करना सीखना होगा। हिंदी हिंदुस्तान की भाषा है। मातृभाषा किसी भी देश की पहचान और गौरव होती है। हिंदी हिंदुस्तान को बांधती है। इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इसी कर्तव्य हेतु हम 14 सितंबर के दिन को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाते हैं।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिंदी भाषा को आसानी से बोल-समझ लेता है। यही इस भाषा की पहचान भी है कि इसे बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नहीं होती। पहले के समय में अंग्रेजी का ज्यादा चलन नहीं हुआ करता था, तब यही भाषा भारतवासियों या भारत से बाहर रह रहे हर वर्ग के लिए सम्माननीय होती थी। लेकिन बदलते युग के साथ अंग्रेजी ने भारत की जमीन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। हम हमारे ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे हैं और हम ही अपनी हिंदीभाषा को वह मान-सम्मान नहीं दे पा रहे हैं। जो भारत और देश की भाषा के प्रति हर देशवासियों के नजर में होना चाहिए। मातृभाषा के प्रति महात्मा गाँधी कहते थे कि हृदय की कोई भी भाषा नहीं है हृदय हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है यह पूर्णतः सत्य है। हिंदी में वह क्षमता है जो आँखों से बहते आंसू धारा का वर्णन इस रूप में करती है कि उसे पढ़ने वाले पाठक को आँसू बहा रहे व्यक्ति की मन स्थिति का बोध हो जाता है। क्या किसी अन्य भाषा के भाव हृदय तल तक महसूस किए जा सकते हैं? हमारी हँसी किसी भी भाषा में अभिव्यक्त हो सकती है। किंतु दूसरों की पीड़ा, दर्द और उसके विचार का अनुभव मातृभाषा में ही होता है। यह भाव से भावों को जोड़ने की

एक कड़ी का कार्य करती है। समय के साथ कदमताल मिलाते हुए उन्नति और प्रगति के मार्ग पर चल सफल होना भी आवश्यक है। इसलिए अन्य भाषा का ज्ञान होना या उनका कार्य में प्रयोग करना भी आना चाहिये ये बुरा नहीं है। किंतु अपनी मातृभाषा का अपमान भी किसी भी अर्थ में सही नहीं है। इस भाषा के उपयोग पर अपमान नहीं बल्कि अभिमान जैसे भावों के संचरण की आवश्यकता है क्योंकि यह भाषा हमारी पहचान है।

हिंदी तो हमारी रग-रग में है, इससे अलग जो भी भाषा है वह हमारी नहीं है पर हमने अपना ली है। गुलामी की मानसिकता ढ़ोने की आदत जो पड़ गई है। पहले अंग्रेजों के गुलाम थे अब उनकी भाषा के हो गए हैं। कोई भाषा सीखनी या बोलनी बुरी बात नहीं है लेकिन अपनी भाषा का ज्ञान ना रहे ये उचित भी नहीं है। हिंद के दिल में निवास करती है हिंदी, हिंदी से हमारा अस्तित्व है, हिंदी भाषा के गौरव से ही हमारी पहचान है। मातृभाषा हिंदी को अंतर की गहराई से माप हम पाते हैं कि हिंदी से मूल्यवान कोई भाषा नहीं, हिंदी के शब्दों की गहराई, अर्थों का निरालापन, वाक्यों का सरलीकरण कितना उदात्त है, ये किसी से छिपा नहीं है। हिंदी जनसामान्य की भाषा है, माँ की लोरी से निकलकर हिंदी शिशु की मुस्कान में विलीन हो जाती है, पिता के क्रोध में ढलकर बच्चे का भविष्य बना देती है। मंगलसूत्र में सुहाग बचा लेती है और राखी के धागों में भाई का जीवन सुरक्षित कर देती है। कौन सा स्थान है जहाँ हिंदी नहीं है? फिर भी मातृभाषा हिंदी के लिए कहा जाता है हिंदी अपनाओ।

अर्थात् अपनी भाषा में ही हमारी प्रगति है, पश्चिमी सभ्यता अपनाकर कुछ लोग अंग्रेजी परिधानों के आवरण में लिपटकर अंग्रेजी बोलते हैं। अपने बच्चों को भी अंग्रेजी के शब्दों को बोलते देख फुला नहीं समाते हैं। बनावटीपन व कृत्रिमता जिनके रोम-रोम से प्रकट होती है वे हिंदी के महत्व को क्या समझेंगें? जिन्हें हिंदी बोलने में शर्म और अंग्रेजी पर गर्व होता है वे आज भी कहीं ना कहीं गुलाम हैं। हिंदी के दुश्मन हैं, मातृभाषा हिंदी हमारी माँ के समान है। हिंदी हमारे माथे की बिंदिया में है, चूड़ियों की खनखनाहट में है। चुनरी के साथ लहराती है, साड़ियों की चुन्नटों में परत दर परत छिपी होती है। हिंदी हमसे अलग कहाँ है? हम इसकी उपस्थिति को नजरअंदाज कर ही नहीं सकते, हिंदी किसानों की भाषा है, कमजोरों की ताकत है। ये स्वाभिमान है हमारा, अभिमान है।

हिंदी समृद्ध और मधुर भाषा है, सरल है, भावों से भरी है, हर किसी के हृदय को स्पर्श करने की क्षमता है इसमें, अंग्रेजी कविताओं से खुश होने के साथ-साथ हिंदी की प्राथमिकता पर भी बल दें। वर्णमाला के कम होते ज्ञान से परिचय कराएं, हिंदी की महत्ता को बताएं। आलीशान स्कूलों की होड़ में अंग्रेजी माध्यम के पीछे दौड़ने वालों के कदम हिंदी की ओर मुड़ने चाहिए। देश की मातृभाषा को माता के समान ही गौरव मिलना चाहिए। परिवार में माता-पिता ही हिंदी की गरिमा को नहीं समझेंगे तो बच्चों की रुचि कैसे जगाएंगे? बात-बात में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करने वाले ना अंग्रेजी के निकट हो पाते हैं ना हिंदी के ज्ञान से परिपक्व। भाषा कोई भी हो बोलने में हर्ज नहीं लेकिन प्रमुखता अपनी ही भाषा को दें। अपनी भाषा की नैतिकता पर आँच आए ये असहनीय है। आज हिंदी भाषा कहीं ना कहीं सिसकिती दिखाई देती है। उसके दर्द को अपने सीने में महसूस करें, उसकी कराह को सुने, हिंदुस्तान में रहकर हिंदी का प्रयोग करने में कैसी आनाकानी? हिंदी हमारी रगों में दौड़ता लहु है, हर पड़ोस का दर्द है, बच्चे की किलकारी है। हिंदी में गंगा की लहरों सी पवित्रता है, यमुना की श्यामलता है। हिंदी अनंत विशाल आकाश है।

गर्व में भरकर हम भले ही अंग्रेजी को प्रमुखता देते हो पर हमारा सम्मान हिंदी भाषा के सम्मान में ही है। कई बार तो अंग्रेजी माहौल में बड़ी घुटन होती है जैसे सब मुखौटे लगाए हुए है, तब गांव की चौपाल के हिंदी ठहाके बड़े अच्छे लगते हैं। पणिहारिनों के गीत बड़े प्यारे लगते हैं। लगता है हिंदी यहीं सिमट गई है लेकिन हिंदी का रास्ता बहुत लंबा है। राष्ट्र भाषा का गौरव प्राप्त हिंदी भाषा को 14 सितंबर 1949 को केन्द्र सरकार की अधिकारिक भाषा के रुप में माना गया। हिन्दुस्तान में हिंदी बोलने वाले हर क्षेत्र से हैं इसलिए हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला और 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। सभी हिंदी की महत्ता को समझें और हिंदी भाषा की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहें।

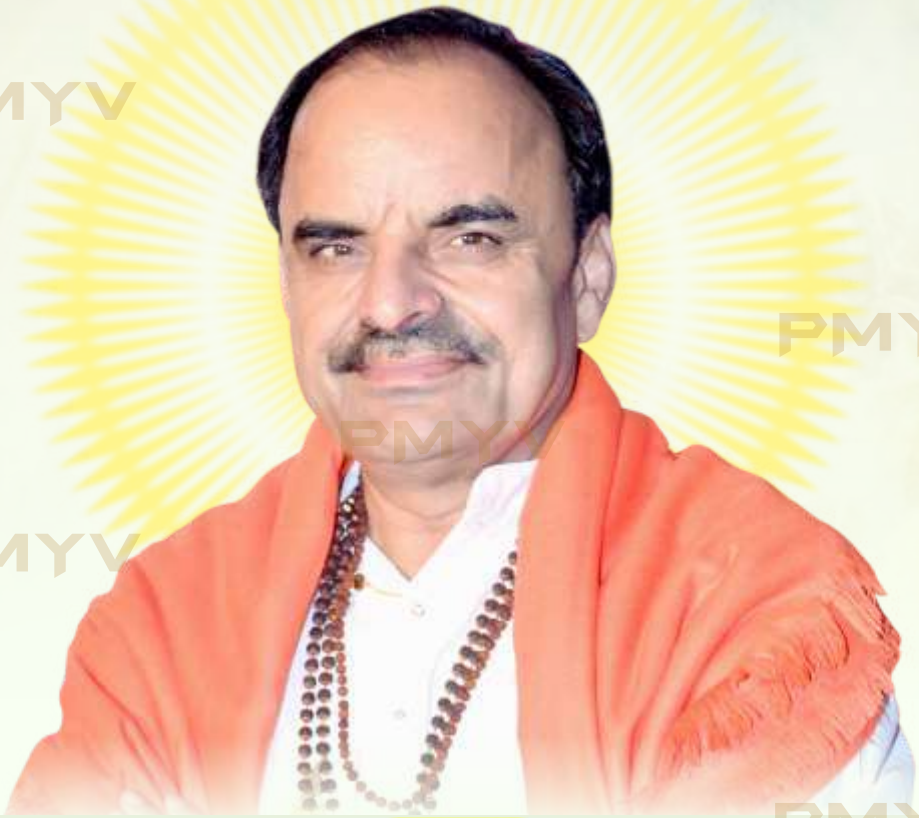

सद्गुरू

तुम्हें अंतःकरण का जागरण देते है, ताकि तुम्हें स्वाध्याय में सुविधा हो सके।

प्रेम और ध्यान में है अंर्तसंबंध।

ध्यान विधि है, प्रेम है, प्रेम भी निधि है, समाधि लक्ष्य है।

दो तरह के व्यक्ति है: हृदय - केंद्रित या मस्तिष्क-केंद्रित। जो बुद्धि-केंद्रित है, प्रेम उनके लिए, मार्ग नहीं है। वे कितनी ही चेष्टा करे, प्रेम आरोपित मालूम होगा, प्रेम एक प्रयत्न मालूम होगा, सहज प्रवाह नहीं। और जो सहज न हो जाए, वह परमात्मा तक न ले जा सकेगा।

यह कोई छोटी यात्रा नहीं है कि खींच-तान कर पूरी कर ली जाए। यह तो श्वास जैसी सहज हो जाए तो ही पूरी हो सकती है।

तो अगर बुद्धि- केंद्रित व्यक्ति भूल से भी प्रेम के मार्ग पर पड़ गया तो भटकेगा, पहुँच न सकेगा। उसके लिए ध्यान ही मार्ग है। ध्यान है बुद्धि का धीरे-धीरे निराकार-निर्विकार हो जाना।

ध्यान की परिपूर्णता पर समाधि प्रकट होगी, व्यक्ति मिट जाएगा और इस तरह के साधक के जीवन में प्रेम का आविर्भाव होगा। ध्यान से चलने वाला साधक प्रेम से शुरूआत नहीं करेगा, प्रेम पर उसका अंत होगा। ध्यान से शुरूआत करेगा, समाधि पर पहुँचेगा। ध्यान होगा मार्ग, समाधि होगी मंजिल, प्रेम होगा परिणाम। अंततः अचानक वह पायेगा, उसके जीवन में चारों तरफ प्रेम फैलने लगा। लेकिन वह आखिर में घटेगा।

जो हृदय-केंद्रित व्यक्ति है, भाव-केंद्रित व्यक्ति है, जिसके जीवन में विचारों का ऐसे भी कोई बहुत मूल्य नहीं है, जिसकी बुद्धि गौण है, जो जीता है भावनाओं से, संवेदनाओं से, जिसके हृदय पर आघात पड़ता है, जिसके जीवन का संबंध सीधा हृदय से है, सोचता कम है, भावता ज्यादा है, वैसा व्यक्ति प्रेम से ही शुरू कर सकेगा। उसने अगर ध्यान से शुरू करने की कोशिश की तो उसका रास्ता भटकेगा। वह लाख उपाय करे ध्यान करने का, उसमें उसे सफलता न मिलेगी। वह चेष्टा ही रहेगी। वह लाख उपाय करे मन को शांत करने का, मन उसका इतना अशांत है ही नहीं कि वह उसे शांत कर सके। उसे तो हृदय की ऊर्मि को जगाना होगा। उसे ध्यान की बजाय प्रार्थना, पूजा, अर्चना और प्रेम के रूप ज्यादा सहज मालूम होंगे। उसकी आँख से आंसू बहेंगे, तब उसके भीतर सन्नाटा होगा। उसके

पैर नाचेंगे, तब उसके भीतर सन्नाटा होगा। जब वह किसी के प्रेम में मदमस्त होगा, तभी उसके भीतर ध्यान लगेगा। उसका ध्यान लगेगा। उसका ध्यान सीधा नहीं हो सकता कि वह शांत बैठ जाए और ध्यान लग जाए। उसका ध्यान परमात्मा के माध्यम से होगा। उसे कोई चाहिए प्रेमपात्र के बिना उसके हृदय में शांति न होगी।

तो अगर प्रेम के मार्ग से चलने वाले व्यक्ति को ध्यान आकर्षित कर ले तो अड़चन होती है। वह असहज होगा। वह बात जमेगी ही नहीं। वह मार्ग उसका है नहीं। उसे प्रेम से ही चलना होगा।

प्रेम से जो चलेगा वह अनायास समाधि को उपलब्ध होगा। लेकिन यह समाधि उसकी भाव-समाधि होगी। और ऐसे व्यक्ति को ध्यान परिणाम में मिलेगा। ऐसे व्यक्ति को जो निर्विचारता है, वह परिणाम में मिलेगी। समाधि में जब वह तल्लीन हो जाएगा, तब अचानक पायेगा कि जिस ध्यान को साध-साध कर नहीं साध पाया, वह अपने आप सध गया है।

प्रेम से जो चलता है, ध्यान उसके लिए परिणाम में मिलता है। ध्यान से जो चलता है, प्रेम उसे परिणाम में मिलता है और दोनों से चलने वाले को समाधि तो सुनिश्चित मिलती है।

सवाल यह नहीं कि कौन सा मार्ग ठीक है-प्रेम का या ध्यान का। दोनों मार्ग ठीक है और दोनों मार्ग गलत है। सवाल तुम्हारा है। तुम्हें जो ठीक लग जाए दो में से। और एक ही ठीक लगेगा, दोनों ठीक नहीं लग सकते है। जो तुम्हें ठीक लग जाए वह ठीक है। जो ठीक न लगे वह ठीक नहीं है। तुम भूल कर भी दूसरे की झंझट में मत पड़ना। दूसरे को भला ठीक लग रहा हो, इससे तुम परेशान न होना।

दूसरों के वस्त्र मत ओढ़ना। दूसरों से उधार मत लेना अपनी जीवन-दृष्टि को। ठीक-ठीक अपने को ही पहचानने की कोशिश करना। इसलिए स्वाध्याय - चाहे भक्त बनना हो, चाहे साधक बनना हो-स्वाध्याय सभी के लिए अनिवार्य है: स्वयं का अध्ययन। ताकि तुम्हें ठीक-ठीक पता हो जाए, तुम किस प्रकार के व्यक्तित्व हो। वह पहली बात ठीक से पता चल जाए तो फिर सब सुलभ हो जाता है, सब आसान हो जाता है।

जीवन में सबसे बड़ी बात पहले कदम को ठीक-ठीक उठाना है। आखिरी कदम तो पहले कदम के सिलसिले में आ जाता है। लेकिन अगर पहले कदम पर भूल हो गई तो आखिरी कदम कभी भी नहीं आता। तो पहला कदम ही आखिरी कदम है। अगर वह बिलकुल ठीक उठ गया, तुम्हारे अनुकूल उठ गया, रास आ गया, तुम्हारा जोड़ बैठ गया, तुम्हारे भीतर की वीणा बजने लगी, ठीक जगह चोट पड़ गई, भीतर के जलस्त्रोत फूट पड़े, तो मंजिल दूर नहीं है। मंजिल अपने आप आ जाएगी। अब तुम बहे जाओ। तुम पहले कदम में ही बहे जाओ। उसी में डूबे चले जाओ।

पहले कदम पर सर्वाधिक सावधानी की जरूरत है और वहीं लोग असावधानी करते है। वहीं न मालूम किस-किस कारणों से लोग मार्ग चुन लेते है। तुम किसी घर में पैदा हुए। हो सकता है घर परंपरा से भक्ति संप्रदाय को मानता हो, तो तुमने भी भक्ति को शुरू कर

दिया। अगर यह तुम्हारे लिए योग्य न था, तो तुम जीवन भर भटकोगे। अनंत जीवन भटक सकते हो और मंजिल न मिलेगी।

मनुष्य-जाति को भटकाने में जन्म के द्वारा धर्म की धारणा ने बहुत बड़ा हाथ बंटाया है।

तुम भाव वाले व्यक्ति हो, किसी ऐसे घर में पैदा हो गए जो ध्यान की परंपरा का भरोसा करता है, तुम मुश्किल में पड़ोगे। क्योंकि तुम चुनाव इस तरह करोगे कि पिता का धर्म क्या है।

अब पिता के धर्म से बेटे के धर्म का कोई लेना-देना नहीं है। माँ के धर्म से बेटे के धर्म का कोई लेना-देना नहीं है। बेटे को अपना धर्म खोजना होगा। स्वधर्म की खोज करनी होगी। वह स्वाध्याय से होगी। वह कोई जाकर जन्म के दफ्तर को, जन्म की रजिस्ट्री को देख लेने से नहीं हो जाती। तुम कहां पैदा हुए हो, इससे तुम्हारे किस धर्म में आविर्भाव, तुम्हारा उत्थान, तुम्हारे जीवन की क्रांति होगी, इसका कोई पता नहीं चलता।

तुम जैन धर्म में पैदा हुए तो भक्ति की तुम्हारे जीवन में कोई धारणा न होगी, क्योंकि वह मार्ग ध्यानियों का है। अब तुम उलझन में पड़ोगे। अगर तुम उस मार्ग पर चले तो तुम्हारा तालमेल न बैठेगा। अगर न चले तो तुम्हें अड़चन होगी कि मैं मार्ग में च्युत हो रहा हूँ। अगर तुम कृष्ण के मंदिर में गए और नीचे तो तुम्हें ग्लानि होगी कि मैं महावीर को छोड़ कर कृष्ण के साथ जा रहा हूँ। तुम्हें अंतपीड़ा होगी। क्योंकि बचपन से तुम्हारे मन में जो धारणा डाली गई है, उस धारणा ने काफी जगह बना ली है। वह धारणा कहती है कि यही करना ठीक है और कुछ करना गलत है। अगर तुम उसी धारणा को मान कर चलो तो जीवन में तृप्ति नहीं मिलती। जहां तृप्ति मिलती है वहां लगता है अपराध हो गया, यह तो उचित नहीं है।

दो बातें बहुत महत्त्वपूर्ण हैः ध्यान या भक्ति, ध्यान या प्रेम। और आधी आधी मनुष्यता ध्यान से जाएगी, मनुष्यता प्रेम से जाएगी। अनुपात बराबर होगा। विशेषकर स्त्रियां भाव से जाएंगी, पुरूष ध्यान से जाएंगे। सामान्यतया यह कह रहा हूँ। क्योंकि पुरूषों में बहुत होंगे जो भाव वाले होंगे, स्त्रियों में भी बहुत होगी जो ध्यान वाली होगी। लेकिन मोटे अर्थों में स्त्रियां भाव से जाएंगी, पुरूष ध्यान से जाएंगे। क्योंकि पुरूष मूलतः सक्रियता, कुछ करना, उस पर भरोसा करता है। प्रेम तो ना-करना है। वह निष्क्रिय है। वह प्रतीक्षा है। वह स्त्री के लिए सुगम है।

कृष्ण ने कहा है, स्वधर्मे निधनं श्रेयः। अपने धर्म में मर जाना भी बेहतर।

इसको अगर कोई गौर से समझ ले तो यह बड़ी गहरी मनोवैज्ञानिक बात है जो कृष्ण ने कहीं। स्व को पहचानना, स्वधर्म को पहचानना। उसमें चलते-चलते मृत्यु भी मिले तो भी अमृत जैसी होगी और दूसरे के धर्म में चलते-चलते अमृत भी मिले तो जहर सिद्ध होगा। क्योंकि जो तुमसे मेल न खाएगा, वह तुम्हें मुक्त नहीं कर सकता है। जो तुमसे इतना मेल खा जाएगा कि तुममें और उसमें जरा भी फासला न रहेगा, वही तुम्हारी मुक्ति बन सकता है।

एक कहानी है कि एक पहाड़ के पास एक झील है और उस झील के पास जब भी कोई साधक पहुँच जाता है और आग्रह करता है झील से और आग्रह अगर वस्तुतः प्रामाणिक होता है, तो झील से उत्तर मिलते है।

एक साधक वर्षो की तलाश के बाद अंततः उस झील के पास पहुँच गया। और उसने चिल्ला कर जोर से पूछा कि मेरा एक ही सवाल हैः जीवन क्या है? झील चुप रही। लेकिन वह पूछता ही गया। कहते है तीन दिन अहर्निश, रात और दिन उसने एक कर डाले। एक ही सवाल कि जीवन क्या है? आखिर झील के देवता को भी झुकना पड़ा और उसने कहा कि तेरी निष्ठा पूरी है। तू कोई साधारण कतूहल से नहीं आया। तू साधारण जिज्ञासू भी नहीं है, तू मुमुक्षु हैः इसलिए तेरे प्रश्न का उत्तर हम देते हैः जीवन एक वीणा है।

उस आदमी ने कहा, और पहेलियां अब नहीं चाहता। सीधा-सीधा उत्तर दो। मैं कोई संगीतज्ञ नहीं हूँ। वीणा मैंने अपने जीवन में अभी तक देखी भी नहीं। सुना है नाम, लेकिन मुझे जीवन का भी पता नहीं, वीणा का भी पता नहीं। अब यह एक और उलझन हो गई। अभी मैं जीवन को हल करता रहा, अब वीणा का भी पता लगाऊं! तुम मुझे सीधा-सीधा ही कह दो।

झील ने कहा, उत्तर दे दिया गया है।

तो उस आदमी ने कहा, थोडे संकेत दो जिससे कि मैं रास्ता खोजूं।

तो झील से उत्तर आया कि तू गांव में जा और पहली तीन दुकानों पर गौर से देख। और जो भी तू पाए, लौट कर उत्तर दे।

वह आदमी गया। उसने पहली दुकान पर देखा, वहां कुछ भी न था, लोहे-लंगर की दुकान थी, धातुओं के अलग-अलग तरह के रूप-रंग के ढेर लगे थे। वह कुछ समझा नहीं कि जीवन से इसका क्या लेना देना ! दूसरी दुकान पर गया। वह एक तारों की दुकान थी। वहां भी उसको समझ में नहीं आया कि जीवन से तारों का क्या लेना-देना? तीसरी दुकान एक बढ़ई की दुकान थी।

वह बड़ा नाखुश लौटा। उसने सोचा कि इससे तो हम पहले ही बेहतर थे। इस झील से पूछने के पहले ही बेहतर थे। कम से कम इस तरह की मूढ़ता तो दिमाग में न थी। इससे जीवन का क्या लेना-देना? यह तो ज्ञान न मिला और अज्ञानी हो गए। लौट कर नाराज आया और उसने झील से कहा कि यह-यह मैने देखा। पर इससे जीवन का क्या संबंध है?

झील ने पुनः कहा कि जीवन एक वीणा है। अब तू इस सूत्र को पकड़ ले और इसकी खोज कर।

वर्षो बीत गए। वह आदमी करीब-करीब भूल ही गया वह खोज-जीवन का वीणा होना। एक दिन अचानक एक बगीचे के पास से गुजरते वक्त उसने किसी को वीणा बजाते सुना। वह स्वरलहरी उसे खींच ली। वह खिंचा हुआ जादू के वश बगीचे के भीतर पहुँच गया।

कोई कलाकार वीणा बजा रहा था। साधक को पहली दफा दिखाई पड़ा कि वही तार है जो दुकान पर पड़े थे। वही धातुएं है जो दुकान पर पड़ी थी, वीणा में लग गई। और उस बढ़ई ने भी काम किया है। लकड़ी का भी इंतजाम है।

आज उसे सूत्र साफ हुआ। आज उसे साफ हुआ कि जीवन एक वीणा है। लकड़ी भी है, तार भी है, धातुएं भी है, अलग-अलग पड़े है। कोई संगीत पैदा नहीं होता। तीनों जुड़ जाएं, एक ढंग में बैठ जाएं, तालमेल आ जाए, तो संगीत उठ सकता है। इतना अद्भूत संगीत उठ सकता है-निराकार ! इतना प्राणों को मोहित कर लेने वाला संगीत उठ सकता है। ऐसी जादूभरी रहस्यपूर्ण घटना घट सकती है।

मैं भी तुमसे यही कहता हूँ: जीवन एक वीणा है। लेकिन तुम्हें अपनी वीणा जमानी है। दूसरों की नकल मत करना। उन्हें अपनी वीणा जमानी है। वीणाएं बहुत तरह की हैं और हरेक व्यक्ति के पास अपने तरह की वीणा है और अपने ही तरह का छिपा हुआ संगीत है।

तुम अपनी वीणा को बजाते हुए मर जाओ तो भी तुम महाजीवन को उपलब्ध हो जाओगे। तुम दूसरे की वीणाओं को ढोते-ढोते मरोगे, उनसे कितना ही सुंदर संगीत पैदा हो, तुम कोरे ही आए, कोरे ही जाओगे। तुम्हारे हाथो में कोई संपदा न होगी। तुमने जीवन व्यर्थ ही गंवाया।

और इस संसार में बड़े से बड़ा खतरा यही है कि कहीं तुम दूसरे के प्रभाव में न पड़ जाओ। तुम प्रभावित होने को बिलकुल तैयार बैठे हो। क्योंकि अपनी वीणा को जमाना दुष्कर काम है। उधार वीणा ले लेना बहुत सरल बात है। खुद खोजना, स्वाध्याय करना, जोखम से भरी बात है। भूल-चूक हो सकती है। दूसरे से ज्ञान उधार ले लेना जोखमरहित है, सुरक्षित है। और अगर कभी उलझन भी हो जाए तो जिम्मेवार दूसरा होगा। तुम्हें कोई पीड़ा न होगी कि मैने कोई भूल की।

तुम एक गुरू को पकड़ लेते हो। तुम सोचते हो, समर्पण किया। समर्पण सौ में से कभी एकाध शिष्य करता है। निन्यानवे तो धोखा कर रहे है। निन्यानवे समर्पण नहीं कर रहे है, सिर्फ गुरू को उत्तरदायित्व दे रहे है कि अब अगर भटके हम, तुम जिम्मेवार। वे यह नहीं कर रहे है कि हम समर्पण करते है अपने को। वे यह कह रहे है कि अब देख लो। अब खयाल रखना। भटके हम, जिम्मेवार तुम। डूबेंगे हम, बदनामी तुम्हारी होगी। अब तुम्ही बचाना, नहीं तो तुम्हीं फंसोगे।

कहीं जीवन के दायित्व इस तरह टाले जा सकते है? गुरू से सीखा जा सकता है, लेकिन गुरू पर दायित्व नहीं टाला जा सकता। गुरू से मार्ग समझा जा सकता है, लेकिन गुरू का मार्ग उधार नहीं लिया जा सकता। गुरू से संकेत लिए जा सकते है, इशारे लिए जा सकते है, ताकि तुम्हें तुम्हारे स्वाध्याय में सुविधा हो जाए।

तो वास्तविक गुरू तुम्हें जीवन का ढंग नहीं देता, वास्तविक गुरू तुम्हें सिर्फ दीया देता है, ताकि तुम अपने जीवन में अपने ढंग को खोज लो।

इस फर्क को याद रखना। वास्तविक गुरू तुम्हें अनुशासन नहीं देता, आचरण नहीं देता, तुम्हें अंतकरण का जागरण देता है। तुम्हें होश देता है, ताकि तुम अपने को पहचान कर अपना रास्ता बना लो।

जिस गुरू ने तुम्हें मार्ग पकड़ा दिया वह तुम्हारा दुश्मन है। कोई सद्गुरू मार्ग नहीं पकड़ाता। सद्गुरू केवल मार्ग की पहचान देता है। वह कहता है, वह पहचान है।

इस फर्क को ठीक से समझ लेना, बारीक है। असद्गुरू तुम्हारे हाथ में देता है और वह कहता है, यह रहा सोना, सम्भालों। इसको खो मत देना। इसको सम्भाल कर रखना, बहुमूल्य है। सद्गुरू तुम्हें देता है कसौटी का पत्थर, सोना नहीं देता। वह कहता है, यह कसौटी का

पत्थर, जहां कहीं सोना मिले, कस लेना। ठीक उतरे तो समझना ठीक है, गलत उतरे तो समझना कि गलत है।

लेकिन सद्गुरू केवल कसौटी देता है कि जीवन में जहाँ भी जरूरत हो, कस लेना, सोने को तुम पहचान लोगे और ध्यान रखना, मानों सोने से छोटा सा कसौटी का पत्थर ज्यादा बहुमूल्य है।

प्रज्ञा देता है तुम्हें सद्गुरू-पहचानों की। बंधा हुआ आचरण नहीं देता, स्वतंत्र बोध देता है। स्वधर्म ही मार्ग है। सद्गुरू तुम्हें इतनी सी सूचनाएं देता है कि ऐसे-ऐसे स्वधर्म को खोजा जाता है। ऐसे-ऐसे मैने अपना स्वधर्म खोजा, ऐसे-ऐसे तुम भी तुम्हारा स्वधर्म खोज लेना।

प्रेम का अर्थ है, देने की क्षमता और देने की क्षमता उसी में हो सकती है जिसके पास हो। तुम वहीं दे सकते हो जो तुम्हारे पास है।

प्रेम जीवन का दान है।

जब भी तुम प्रेम से किसी की तरफ देखते हो, तुम उसके जीवन में हजार चाँद जोड़ देते हो। जब भी तुम प्रेम से किसी का हाथ, हाथ में लेते हो, तुम उसके बुझते दीये को फिर ज्योति दे देते हो। जब भी तुम प्रेम से किसी को गले लगा लेते हो, तब तुमने उसके आयुष्य को बढ़ा दिया।

प्रेम अदृश्य जीवन है। इसलिए जब भी तुम्हें ऐसा लगता है, तुम्हें कोई प्रेम करने वाला नहीं, तुम किसी को प्रेम करने वाले नहीं, तुम्हें आत्मघात का विचार आ जाता है। आत्मघात का विचार ही तब उठता है जब तुम पाते हो जीवन में प्रेम नहीं है। जहाँ प्रेम नहीं है, वहाँ मरने की धारणा उठने लगती है कि मिट जाओं! अब सार क्या है? अब होने का अर्थ क्या है? प्रयोजन क्या है? अब जीना किसलिये है?

जब भी तुम्हारे मन में आत्महत्या का भाव उठता हो- और ऐसा आदमी खोजना कठिन है जिसको न उठा हो- तो तुम विचार करना: कब उठता है यह भाव?

तुम सदा पाओगे कि प्रेम जब नहीं होता जीवन में, तभी उठता है। तब बात साफ हो जाती है कि प्रेम जीवन है। प्रेम का अभाव मृत्यु को पास लाने लगता है।

तुमने कभी खयाल किया कि तुम बीमार पड़े हो, और अगर चिकित्सक तुम्हारे प्रति अति प्रेमपूर्ण है, तो औषधियां शीघ्रता से काम करती है। और चिकित्सक अगर सिर्फ उपेक्षा से भरा है, एक पेशेवर की तरह आता है और देख कर चला जाता है, तटस्थ है, तुम्हारी तरफ उसका कोई ध्यान नहीं है, बीमारी और दवा, इसमें उसका विचार है, लेकिन तुमसे कुछ लेना-देना नहीं है, तुम हो या नहीं, इससे कोई संबंध नहीं है, यंत्रवत तुम्हारे साथ व्यवहार करता है, तुम्हारी बीमारी लंबी हो जाएगी। जो बड़े से बड़े चिकित्सक हुए है दुनिया में, उन सभी के संबंध में यह बात है कि उनकी दवा से ज्यादा उनके हाथ में गुण है। हाथ में गुण का क्या मतलब होता है? हाथ में गुण का मतलब यह है कि दवा गौण है, जिस ढंग से वे देते है, वह महत्त्वपूर्ण है। उस देने में वे कुछ और भी देते है।

कभी तुमने खयाल किया कि तुम बीमार हो, चिकित्सक आया- अगर वह प्रेमपूर्ण है, तो उसने अभी दवा भी नहीं दी है, तुम्हारी जाँच ही की है, लेकिन जाँच में ही तुम्हारी बीमारी आधी हलकी हो जाती है। निरीक्षण करोगे तो साफ हो जाएगा। क्योंकि अभी दवा नहीं दी गई, इसलिए चिकित्सक ने कुछ किया तो है नहीं, सिर्फ नब्ज ली, हृदय की धड़कन सुनी, लेकिन उसका ढंग, उसका प्रेमपूर्ण व्यवहार, उसका आश्वस्त भरोसा कि तुम ठीक हो जाओगे, उसका तुम्हारे प्रति इतनी उत्सुकता से निरीक्षण करना कि तुम मूल्यवान हो, तुम्हारा बचना जरूरी है- तुम्हारे भीतर कोई चीज बदल गई। अब तुम उतने बीमार नहीं हो। अभी चिकित्सक ने कुछ किया भी नहीं है, लेकिन चिकित्सा शुरू हो गई।

ऐसे प्रयोग किए गए है कि प्रेमपूर्ण चिकित्सकों ने सिर्फ पानी दिया है और बीमार ठीक हो गए है और तटस्थ चिकित्सकों ने कीमती से कीमती दवाएं दी है और मरीज पर परिणाम नहीं हुआ है। पानी भी संवाहक हो जाए अगर प्रेम का, तो औषधि हो जाती है। स्वर्ण-भस्में भी दी जाएं और प्रेम का हाथ पीछे न हो, तो शरीर पर केवल बोझ-रूप हो जाती है, औषधि नहीं बनतीं।

अब तो वैज्ञानिक कहते है, वृक्षों- पौधों को भी अगर तुम प्रेम से देख लो तो उनकी बढ़ती तेज हो जाती है। अगर तुम रोज उसे

पौधे को आशीर्वाद के भाव से देख लो, उसके लिए प्रार्थना करो परमात्मा से, तुम पाओगे कि दूसरे पौधे पीछे रह गए। जिस पौधे के लिए तुमने रोज-रोज प्रार्थना की वह दुगुना हो गया। कम दिनों में उसमें फूल आ जाएंगे। असमय में फल भी लग सकते है।

सद्गुरूओं के प्रेम के नीचे शिष्य परमात्मा को उपलब्ध हो गए है। बिना कुछ किए भी कभी यह घटा है और कभी-कभी बहुत कुछ करने पर भी, अगर सद्गुरू की प्रेम-छाया न हो, तो कुछ भी नहीं घटा है। इसलिए तो समर्पण का इतना मूल्य है। समर्पण का कुल इतना ही अर्थ है कि गुरू के जीवन से जो प्रेम की धारा बह रही है, उसके लिए तुम दीवार मत बनो, दरवाजा बन जाओ। उसे आने दो, ताकि वह तुम्हें रूपांतरित कर दे।

प्रेम जीवन है। प्रेम से रहित जीवन का कोई अर्थ नहीं है। और प्रेम से भरी हुई मृत्यु भी सार्थक हो जाती है। प्रेम से भरी मृत्यु में भी एक काव्य प्रकट होता है-अलौकिक। और प्रेम से रहित जीवन में एक दुर्गंध होती है, एक सड़ांध होती है। आदमी जीता है, लेकिन जीता नहीं। भीतर कुछ भी नहीं है। भीतर सब खाली है।

तुम्हारे अनुभव से भी जानते हो कि जब भी तुमने प्रेम किया है, तभी तुम्हारे भीतर एक पुलक उठी है, एक लपट उठी है। तुमने जीवन को उसकी चरमता से जाना है। तुम्हारे भीतर मशाल दोनों तरफ से एक साथ जलने लगी है। एकदम आलोकित हो गया है सब। कभी-कभी क्षण भर को ऐसा हुआ है, लेकिन फिर भी बिजली कौंध गई है।

और जब तुम्हारे जीवन में कोई प्रेम न रहा, एक रोजमर्रा की आदतन जिंदगी रही-उठना है, बैठना है, दफ्तर जाना है, कमाना है-कर्तव्य तो रहे, प्रेम न रहा, तभी तुमने पाया कि तुम्हारे भीतर कुछ मर गया है। तुम खिंचे जा रहे हो, चले जा रहे हो, लेकिन अब चलने में नृत्य नहीं है। बोलते हो, लेकिन बोलने में अब गीत नहीं है। देखते हो, लेकिन आँखों से कुछ बरसता नहीं। आँखे कोरी और खाली है। छूते हो, लेकिन स्पर्श में ऊष्मा नहीं है। ऐसे छूते हो जैसे किसी ने मुर्दे का हाथ छू लिया हो, ठंडा है, उसमें कोई भाव-दशा नहीं है, कोई लहर नहीं है, कोई स्पंदन नहीं होता। एक ठूंठ की तरह हो गए हो, जिसमें न अब पत्ते लगते है, न फल आते है, न फूल खिलते है, न पक्षी जिस पर घोंसला बनाते है, न राहगीर जिसके नीचे बैठ कर विश्राम करते है। एक ठूंठ की तरह तुम खडे.हो। प्रतीक्षा में हो कि कभी कोई लकड़हारा आएगा, काट कर ले जाएगा, झंझट मिटेगी।

प्रेम है दान और मजा यह है कि जितना तुम देते हो, उतना बढ़ता है तुम्हारे भीतर और जितना तुम रोकते हो, उतना सड़ जाता है। जैसे कुआं भरा है, मत खींचो पानी, मत उलीचो पानी। सड़ जाएगा और इस बुरी तरह सड़ जाएगा कि सब झरने धीरे-धीरे धूल धवांस से भर जाएंगे, बंद हो जाएंगे। उलीचो और रोज झरने नये पानी को ले आते है। कुआं चुकेगा नहीं। तुम जितना उलीचोगे, उतने ही नये जलस्त्रोत आते जाएंगे।

ऐसा ही जीवन का कुआं हो तुम। अगर दोगे, बांटोगे, उछालोगे, कृपणता न करोगे

जीवन की, जहां भी मौका पाओगे उलीचोगे अपने को, बांटोगे, दोगे, तुम पाओगे नये जलस्त्रोत तुम्हारे खुलते जाते है। तुम एक दिन पाओगे कि तुम कुआं नहीं, सागर हो।

कुआं है क्या आखिर? कुआं सिर्फ एक खिड़की है जिससे झांक रहा है। नीचे तो कुआं सागर से जुड़ा है, अनंत-अनंत झरनों से जुड़ा है। कुआं एक झरोखा है, जहाँ से सागर ने झांका है। घबराओं मत, तुम भी एक झरोखे हो, जहाँ से परमात्मा ने झांका है। डरो मत। तुम भी जुड़े हो। उलीचो और तुम पाओगे कि तुम बढ़ते हो। रोको और तुम पाओगे कि तुम घटते हो और सड़ते हो और एक दुष्टचक्र है। अगर तुमने रोका, न बांटा, प्रेम न दिया, तो तुम डरने लगोगे कि वैसे ही तो सड़ा जा रहा है सब, वैसे ही तो सब चूका जा रहा है, अगर दिया तो और मुसीबत होगी और कम हो जाएगा। तुम और घबरा कर रोक लोगे। जितना रोकोगे, उतना ही कम होता जाएगा, सूखते जाओगे।

हिम्मत करो। देकर देखो और तुम पाओगे, जैसे ही तुमने दिया, कोई जलस्त्रोत खुल गया, झरना सक्रिय हो गया और जल आने लगा। तब तुम पाओगे कि देते जाओ, बढ़ता जाता है। तब तुम बात ही छोड़ दोगे रोकने की। तुम देने में लग जाओगे।

उलीचने में प्रेम है। प्रेम है अपने आनंद को बांटना।

पर आनंद तुम्हारे पास हो तभी न! तुम्हारे पास अभी दुःख है। अगर तुम देने भी जाते हो तो दूसरे को दुःख ही देते हो। प्रेम के नाम पर भी तुम दूसरे को दुःख ही देते हो। तुम्हारे पास कुछ और है नहीं। तुम्हारे पास आत्मा तो नहीं है कि तुम दे सको। तुम्हारे पास एक गहन अंधकार है, वही तुम दे आते हो। दूसरे के मार्ग में वैसे ही बहुत अड़चनें थी, तुम और थोड़ी अड़चने बड़ा देते हो। दूसरा वैसे ही मुश्किल में पड़ा था, तुम्हारी मुश्किल का और बोझ बढ़ जाता है। प्रेम के नाम पर तुम मुक्त थोडे. ही करते हो, बांधते हो। प्रेम के नाम पर तुम दूसरे के

गले में फांसी लगाते हो। पंख नहीं देते कि दूसरा भी खुले आकाश में उड़ सके। पर जो तुम्हारे पास नहीं है वह तुम दोगे कैसे?

इसलिए मैं कहता हूँ, पहले स्वयं को खोजो, पहले स्वयं को पहचानो, पहले स्वयं को बढ़ाओ, पहले स्वयं को विकसित करो, प्रौढ़ करो, पहले स्वयं की संपदा में नये-नये फल लगने दो, कुछ घटने दो भीतर, तो तुम बांट सकोगे।

मनुष्य-जाति की बड़ी से बड़ी भूलों में से एक भूल यह है कि प्रत्येक व्यक्ति यही सोचता है कि प्रेम करने की क्षमता उसे जन्म से ही मिली है। इस भूल ने जितना नुकसान किया है, किसी और भूल ने नहीं किया। हर आदमी यही सोचता है कि प्रेम तो जन्मजात मिला ही हुआ है। पैदाईश से ही हम प्रेम करने की कला जानते हुए आए है। इसलिए अगर प्रेम नहीं घट रहा है तो दूसरे की कोई भूल होगी। हम तो प्रेम करने में समर्थ ही है।

अगर इस गलत तर्क में तुम पड़ गए तो भटक जाओगे। प्रेम सीखना पड़े। प्रेम अद्भूत कला है। उसमें कोई सूक्ष्म कला नहीं। उससे ज्यादा कोई अदृश्य शिल्प नहीं। बड़ी सूक्ष्म है। तुम सीखोगे धीरे-धीरे तो ही खयाल में आएगी। बड़ा नाजुक गीत है, उसे गाने के लिए कंठ को साधना होगा। तुम भर्राए गले से उसे न गा सकोगे, अन्यथा गीत मर जाएगा।

संवेदनशीलता बढ़ाओं और तुम्हारी प्रेम की कला बढ़ती जाएगी। चट्टान पर भी बैठो, तो चट्टान को स्पर्श करो, छूओ, दोस्ती बनाओ। आसान है आदमी की बजाय। क्योंकि आदमी के साथ तो अहंकार खड़ा हो जाता है। वृक्ष के पास जाओ, उसे गले लगाओ। थोड़ी देर वृक्ष के कंधे पर सिर रख कर रूक जाओ। किसी आदमी के कंधे पर सिर रखने में तुम्हें अड़चन होगी। पता नहीं, वह इनकार कर दे, अस्वीकार कर दे। अस्वीकार का एक भय है। तुम प्रेम का निवेदन लेकर जाओ और वह कह दे कि हटो भी! क्या बकवास लगा रखी

है! क्या समझा है, यह मेरा कंधा है या कोई विश्राम करने की जगह? कि तुम किसी को गले लगाने जाओ और वह हटा दे दूर।

लोग प्रेम करने को पैदा हुए है और प्रेम से भयभीत है। लोग बिना प्रेम के जीवन की गहनता को न जान पाएंगे और प्रेम से भयभीत है। लोग बढ़ना चाहते है, प्रेम करना चाहते है, लेकिन डर है अस्वीकार का। चोट लगेगी। उससे बेहतर अकेले जी लेना है। कम से कम किसी को चोट देने का मौका तो नहीं दिया, अपमान तो नहीं हुआ।

इसलिए तुमसे कहता हूँ कि चट्टान से, वृक्ष से-वे तुम्हें इनकार न करेंगे और वे उतने ही प्रेम के लिए आतुर है जितना कोई और और उनसे तुम्हें कभी चोट न पहुँचेगी।

प्रेम के पहले पाठ सीखने हो तो चट्टानों के पास, पहाड़ो के पास, नदियों के पास, वृक्षों के पास। फिर धीरे-धीरे बढ़ना और जब तुम प्रेम का पाठ खूब सीख जाओ, जब तुम्हें यह पता चल जाए कि प्रेम की इसकी कोई प्रयोजना ही नहीं है कि दूसरा लौटाएगा कि नहीं, प्रेम सिर्फ दान है। जब तुम वृक्षों को दे-दे कर आनंदित होओगे और वृक्षो जैसी हरियाली तुम्हारे भीतर छा जाएगी, जब तुम नदी, चाँद-तारो को दे-दे कर आनंदित होओगे और ठीक वैसी ही स्वच्छता तुम्हारे भीतर उतर आएगी, तब तुम इसकी फिक्र छोड़ दोगे कि दूसरा लौटाता या नहीं, दूसरा अस्वीकार करता या नहीं। तब तुम उन्मुक्त भाव से दोगे। अगर दूसरे ने न लौटाया, तो तुम्हें दया आएगी कि बेचारा! प्रेम में यह तो इतना असमर्थ हो गया है कि मैने नमस्कार किया और वह नमस्कार भी न लौटा सका। कितना सिकुड़ गया होगा! तुम्हें दया आएगी, अनुकंपा आएगी। क्रोध नहीं आएगा और न ही पीड़ा होगी।

और एक बार तुम यह राज जान गए कि प्रेम का मजा उसके देने में है, तब तुम चकित होओगे कि हजारों तरफ से प्रेम हजारों गुना होकर लौटने लगता है। क्योंकि प्रत्येक तैयार खड़ा है- कोई प्रेम दे, वह लौटा दे। क्योंकि वह भी डरा हुआ है। तुम जैसा ही डरा हुआ है। एक बार तुम देना शुरू करो, लौटना शुरू हो जाता है।

कोयल गीत गाती है, किसी की ताली की कोई फिक्र नहीं। ऐसा ही प्रेम वस्तुतः बांटता है, कोयल के गीत की भांति। कोई ताली बजाता है, नहीं बजाता, यह उसकी मौज। बजाई तो खुद भी थोड़ा आनंदित ज्यादा हो लेगा। नहीं बजाई तो दया का पात्र है। गीत सुन कर ताली न बजी, इससे केवल इतना ही पता चलता है कि गीत सुनना भी न आया, गाना तो बहुत दूर। गीत सुनने का भी सलीका न आया। ताली भी न बजा सके, ऐसी कंजूसी! कुछ भी न लगता था, अहोभाव प्रकट न कर सके, तो गा तो सकोगे ही नहीं।

जो ताली बजाता है गीत सुन कर, वह गाने की तरफ कदम उठा रहा है। वह आज नहीं कल गाएगा भी। आज नहीं कल सोचेगा कि दूसरे के गाने से इतना आनंद मिलता है, अपना गीत जब फूटेगा प्राणो से तो कितना आनंद न मिलेगा। जब दूसरे के झरने को बहते देख कर ऐसी पुलक छा जाती है, तो अपना झरना जब बहेगा तो कैसा नृत्य न घटेगा।

जब तुम दूसरे के प्रेम को अहोभाव से स्वीकार करते हो तो तुम्हारे प्रेम को फैलने की सुविधा बनती है, रास्ता मिलता है।

प्रेम सीखना होगा। प्रेम देना होगा। दे-दे कर बढ़ेगा। और जब तुम पाओगे कि जितना तुम देते हो उतना बड़ता जाता है, तो तुम्हारा जीवन सघन होता है। उसकी त्वरा बढ़ती है। वह घनीभूत होता है। तुम एक छोटे से घर में विराट जीवन के मालिक हो जाते हो। छोटी सी देह में अनंत समा जाता है। जैसे बूंद में सागर सिकुड़ गया हो, जैसे एक किरण में पूरा समा गया हो, ऐसे तुम्हारी छोटी सी देह में और छोटे से आंगन में अपूर्व नृत्य होता है विराट का।

और जब तक कोई वैसी स्थिति को न पहुँच जाए, तब तक कैसे धन्यवाद देगा परमात्मा को? जिस जीवन में धन्यवाद के योग्य कुछ भी नहीं है, उससे प्रार्थना कैसे उठेगी?

इसलिए मैं कहता हूँ, प्रेम हो तो ही प्रार्थना होती है। अगर प्रेम न हो तो प्रार्थना के नाम से शिकायत होगी, प्रार्थना नहीं हो सकती।

तुम्हारी प्रार्थनाओं में तुम्हारी शिकायतों का पता चलता है। तुम्हारी प्रार्थनाओं में तुम्हारा अहोभाव विदित नहीं होता। तुम यह नहीं कहते मुक्त कंठ से कि मैं धन्यभागी हूँ कि तूने मुझे पैदा किया। मैं धन्यभागी हूँ कि मैं हूँ। मैं धन्यभागी हूँ कि श्वास चलती है। मैं धन्यभागी हूँ कि मैं तेरे इस विराट उत्सव में सम्मिलित होने का हकदार माना गया है। मैं धन्यभागी हूँ कि तेरे चाँद तारे देखे, तेरे फूलों को खिलते देखा, तेरे फूलों की सुवास को आकाश में उड़ते देखा। मैं धन्यभागी हूँ कि तेरे झरने, तेरे पहाड़ देखे। तेरे सागर, तेरी अनंत लीला देखी।

जिस दिन तुम्हारी प्रार्थना धन्यवाद की होगी, उसी दिन प्रार्थना है।

लेकिन वह प्रार्थना के पहले तुम्हें प्रेम की प्रक्रिया सीखनी होगी। उसमें देर मत करो। जितना समय बीता वह व्यर्थ ही गया। जल्दी करो और प्रेम को बुलाओ और प्रेम को अपने घर में बसाओ और प्रेम के बढ़ने में जिससे भी सहायता मिले, वह सब करो। और प्रेम के घटने में जिन-जिन चीजों से सहायता मिलती हो, वह भूल कर मत करो। क्योंकि तुम्हारे भीतर अगर प्रेम घना न हो, तो घृणा घनी होगी। तुम बच न सकोगे- या प्रेम, या घृणा, या भय, या मौत। तुम बच न सकोगे। चुनाव तो करना ही होगा।

तुम इतने डरे हो मौत से इसलिये कि तुम प्रेम को नहीं जान पाए। प्रेमी मौत से नहीं डरता। प्रेमी की कोई मौत ही नहीं है, क्योंकि प्रेम शाश्वत है। उसका मृत्यु से कभी मिलना नहीं हुआ, ऐसे ही जैसे सूरज का कभी अंधकार से मिलना नहीं हुआ है।

धारणा हो तो समर्पण नहीं होता। धारणा तुम्हारी है। तो तुम जो समर्पण करोगे वह भी तुम्हारा अपने ही प्रति है। वह तुमने झुक

राजराजेश्वरी नारायण शक्ति सहस्त्र कुबेर साधना महो.

बद्रीनाथ धाम 07-08-09 जून

ब्रह्म कपाल शिला घाट पर पिण्ड दान की क्रिया

सद्गुरुदेव जी के साथ वन्दनीय माता जी गणेश गुफा व बद्रीनाथ मन्दिर में साधकों की उन्नति-प्रगति हेतु विष्णु सहस्त्र नाम व आरती सम्पन्न की।

9950809664

कैलाश सिद्धाश्रम
9950809666

कर अपने ही पैर छू लिए। तुमने दर्पण के सामने खड़े होकर अपनी ही आरती उतार ली। तुम्हारी धारणा के कारण अगर समर्पण होगा तो समर्पण नहीं हुआ। तुम्हारी धारणा तुम्हारी धारणा है, समझो।

समर्पण के पूर्व तुमने धारणा बना ली। धारणा तुम्हारी है। अब तुम धारणा को लेकर चले जाँचने। कभी कोई आदमी अगर तुम्हारी धारणा से मेल खा जाएगा तो तुम समर्पण कर दोगे। वह समर्पण तुमने उसके प्रति किया? या तुमने अपनी ही धारणा के प्रति किया? वह तुमने झुक कर अपने ही पैर छू लिए। वह आदमी तो बहाना हुआ, खूंटी हुआ। तुमने अपने को ही उस पर टांग दिया।

और इस तरह का समर्पण हमेशा अधूरा रहेगा, पूरा नहीं हो सकता। क्योंकि तुम कभी भी पूरे तृप्त नहीं हो सकते।

तुम्हारी धारणा से समर्पण नहीं होता। जहाँ तुम्हारी सारी धारणाएं छूट जाती है वहाँ समर्पण है। जिस व्यक्ति के पास जाकर तुम अपनी सब धारणाएं नीचे रख देते हो। तुम कहते हो कि बहुत धारणाओं से देख लिया, सिवाय अंधेपन के कुछ भी न पाया। अपनी धारणाओं के चश्मों से लगा-लगा कर बहुत देखा, कहीं परमात्मा न दिखा। अब हम सब धारणाएं चरणों में रख देते है। अब हम निर्धारण होते है। अब हम शून्य होकर तुम्हें देखते हैं।

समर्पण का यही अर्थ है। किसी व्यक्ति के पास शून्य होकर बैठ जाना समर्पण है। तुम शून्य हो जाओ, समर्पित हो गए। समर्पण कोई घोषणा थोड़े ही है कि तुम बैंड-बाजा बजाओ। समर्पण तो शून्य का स्तर है। वह चुप्पी में घट जाता है। कुछ शोरगुल थोड़े ही करनी है। कोई गवाह थोड़े ही जुटाने है। तुम जिस व्यक्ति के भी पास जाकर शून्य बैठ गए, वहीं समपर्ण हो गया। और तब व्यक्ति की भी क्या बात है! तुम अगर वृक्ष के पास भी शून्य होकर बैठ गए, समर्पण वहीं हो गया। तुम अगर आकाश के पास शून्य होकर बैठ गए, समर्पण वहीं हो गया। समर्पण तुम्हारे न होने का नाम है। समर्पण कोई कृत्य नहीं है कि तुमने किया। तुम करने वाले रहे तो समर्पण तो होना ही नहीं है। वह तो तुम ही रहोगे पीछे। समर्पण तो ऐसी दशा है, तुम्हें पता चला कि मैं हूँ ही नहीं।

जिस व्यक्ति के पास अपने न होने का पता चले, वही गुरू है। जिसके पास तुम्हें अपने होने का पता चले, वहां से भागना। वह महामारी है। क्योंकि वही तो तुम्हारी बीमारी है जन्मों-जन्मों की कि मैं हूँ। जिस व्यक्ति के पास तुम्हारे मैं की सब दीवारें गिरने लगे, वहां टिक जाना। कहना कि अब यही रूकेंगे। यहाँ मिटने की जगह है।

परम् पूज्य सद्गुरु
कैलाश श्रीमाली जी

दत्तात्रेय अवतार

महायोगीश्वर परमब्रह्ममूर्ति सद्गुरू दत्तात्रेय भगवान विष्णु के अवतार है। इनका अवतरण मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को प्रदोष काल में हुआ। वर्तमान में इस दिवस को बड़े हर्षोल्लास से दत्त जयंती के रूप में मनाया जाता है। दत्तात्रेय के तीन मुख व छः भुजाएं थी।

संसार में जब वैदिक कर्मो का, धर्म का तथा संतुलन व्यवस्था का लोप हुआ, तब भगवान विष्णु ने जगद्गुरू श्री दत्तात्रेय के अवतार ने इनका पुनः स्थापन किया। भगवान दत्तात्रेय ने यज्ञ जीवन को जाग्रत किया। संसार में जब सभी वेद नष्ट हो गए। सद्कर्मो व यज्ञ आदि का लोप आरम्भ हो गया, चारो वर्ण (ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय और शुद्र) एक में मिल गए और सर्वत्र वर्णसंकरता फैल गई। साथ ही जब धर्म शिथिल पड़ने लगा, अधर्म बढ़ने लगा, सत्य दब गया, मनुष्य जाति क्षीण होने लगी, ऐसे समय में महात्मा दत्तात्रेय ने यज्ञ व कर्म अनुष्ठान की विधि सहित समस्त वेदों का पुनर्रूद्धार किया। इसके साथ ही महर्षि दत्तात्रेय ने दोबारा चारों वर्णो को पृथक-पृथक अपनी मर्यादा में स्थापित किया।

भगवान विष्णु के अतवार प्रभु श्रीराम, श्री कृष्ण, बुद्ध अवतार गृहस्थाश्रमी है, लेकिन भगवान दत्तात्रेय अवधूत अवस्था में सर्वत्र विचरण करने वाले वैराग्य है। भगवान दत्तात्रेय शीघ्र प्रसन्न होकर साधको की मनोकामनाओं की पूर्ति करते है। त्रिमुखी श्री दत्तात्रेय भगवान के पूजन साधना के साथ उनके चरण पादुकाओं की पूजा का भी विशेष महत्त्व है।

भगवान दत्तात्रेय यदि प्रसन्न हो जाते है तो साधक को बुद्धि, ज्ञान, चेतना, बल, ऐश्वर्य से सरोबार कर देते है। इनकी अविचलित साधना करने से सभी प्रकार की तांत्रिक सिद्धियों की शीघ्रता से प्राप्ति हो सकती है। गंगा तट पर दत्त पादुका पूजन होता है, माना गया है वहां स्वयं भगवान दत्तात्रेय गंगा स्नान के लिये भी आते है।

भगवान दत्तात्रेय अवतरण कथा

श्रीमद् भागवत के अनुसार पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा से ब्रह्मा जी के मानसपुत्र महर्षि अत्रि द्वारा व्रत करने पर 'दत्तो मयाहमिति यद् भगवान स दतः'' मैने अपने आपको तुम्हें दे

दिया-ऐसा कहने से भगवान विष्णु ही अत्रि के पुत्र रूप में अवतरित हुए और दत्त कहलाये। अत्रिपुत्र होने से ये आत्रेय कहलाते है। दत्त और आत्रेय के संयोग से इनका दत्तात्रेय नाम प्रसिद्ध हो गया। इनकी माता का नाम अनुसूया है, उनका पतिव्रता धर्म संसार में प्रसिद्ध है। पुराणों में कथा आती है, ब्राह्माणी, रूद्राणी और लक्ष्मी को अपने पतिव्रत धर्म पर गर्व हो गया। भगवान को अपने भक्त का अभिमान सहन नहीं होता तब उन्होंने अद्भूत लीला करने की सोची।

भक्त वत्सल भगवान ने देवर्षि नारद के मन में प्रेरणा उत्पन्न की। नारद घूमते-घूमते देवलोक पहुँचे और तीनों देवियों के पास बारी-बारी जाकर कहा- अत्रिपत्नी अनुसूया के समक्ष आपका सतीत्व नगण्य है। तीनों देवियों ने अपने स्वामियों-विष्णु, महेश और ब्रह्मा से देवर्षि नारद की यह बात बताई और उनसे अनुसूया के पातिव्रत्य की परीक्षा करने को कहा।

देवताओं ने बहुत समझाया परंतु उन देवियों के हठ के सामने उनकी एक न चली। अंततः साधुवेश बनाकर वे तीनो देव अत्रिमुनि के आश्रम में पहुँचे। महर्षि अत्रि उस समय आश्रम में नहीं थे। अतिथियों को आया देख देवी अनुसूया ने उन्हें प्रणाम कर अर्घ्य , कंदमूलादि अर्पित किए किंतु वे बोले -हम लोग तब तक आतिथ्य स्वीकार नहीं करेंगे, जब तक आप हमें अपने गोद में बिठाकर भोजन नहीं कराती।

यह बात सुनकर प्रथम तो देवी अनुसूया अवाक् रह गई किंतु आतिथ्य धर्म की महिमा का लोप न जाए, इस दृष्टि से उन्होंने नारायण का ध्यान किया। अपने पतिदेव का स्मरण किया और इसे भगवान की लीला समझकर वे बोली-यदि मेरा पातिव्रत्य धर्म सत्य है तो यह तीनों साधु छह-छह मास के शिशु हो जाएं। इतना कहना ही था कि तीनों देव छह मास के शिशु हो रूदन करने लगे।

तब माता ने उन्हें गोद में लेकर दुग्ध पान कराया फिर पालने में झुलाने लगी। ऐसे ही कुछ समय व्यतीत हो गया। इधर देवलोक में जब तीनों देव वापस न आए तो तीनों देवियां अत्यंत व्याकुल हो गई। फलतः नारद आए और उन्होंने संपूर्ण हाल कह सुनाया। तीनों देवियां अनुसूया के पास आई और उन्होंने उनसे क्षमा मांगी।

देवी अनुसूया ने अपने पातिव्रत्य से तीनों देवों को पूर्वरूप में कर दिया। इस प्रकार प्रसन्न होकर तीनों देवों ने अनुसूया से वर मांगने को कहा तो देवी बोलीं-आप तीनों देव मुझे पुत्र रूप में प्राप्त हो। तथास्तु-कहकर तीनों देव और देवियां अपने लोक को चले गये।

कालांतर में यही तीनों देव अनुसूया के गर्भ से प्रकट हुए। ब्रह्मा के अंश से चंद्रमा, शंकर के अंश से दुर्वासा तथा विष्णु के अंश से दत्तात्रेय श्रीविष्णु भगवान के ही अवतार है और इन्हीं के आविर्भाव की तिथि दत्तात्रेय जयंती कहलाती है।

अष्टादश सिद्धि गणपति पूर्ण ऋद्धि-सिद्धि दीक्षा

गणेशोत्सव पूजन मुहूर्तः 07 सितम्बर, शनिवार दिवा 11:03 AM से दिवा 01:33PM अवधिः 02 घंटे 30 मिनट

हमारी भारतीय परम्परा ही रही है कि किसी भी कार्य का प्रारम्भ करने से पूर्व 'श्री गणेश' का पूजन किया जाता है, जिससे कि वह कार्य शुभ और लाभ दे सके। उसमें किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी न आये और वह कार्य पूर्णता के साथ सम्पन्न हो सके, क्योंकि गणपति जीवन में पूर्ण समृद्धि प्रदान करने वाले तथा जीवन को प्रत्येक दृष्टि से ऊँचा उठाने वाले देव माने जाते हैं। कलियुग में गणपति शीघ्र सफलतादायक देव माने जाते हैं और यह ज्ञान-विज्ञान दोनों ही प्रदान करने वाले हैं। ये ''विघ्नराज'' कहे जाते हैं, क्योंकि ये सम्पूर्ण दैत्यों के एकमात्र संहारक हैं, इनकी आराधना सम्पन्न करने से व्यक्ति को लक्ष्मी तो प्राप्त होती ही है, साथ ही उसे जीवन में प्रसन्नता, उल्लास व आनन्द की प्राप्ति भी होती है।

धन की इच्छा, आकांक्षा किसे नहीं होती, चाहे वह गृहस्थ हो अथवा योगी। सभी का जीवन धन से ही संचालित होता है। धन का मूल स्वरूप ऋद्धि-सिद्धि तो गणपति की भार्यायें हैं। भगवान श्री गणेश को देवगणों के अधिपति, बुद्धि के अधिष्ठाता देव, अपने बुद्धि वैभव से सर्वत्र सम्मानित, धन बल एवं श्रेष्ठ विद्याओं के दाता, मंगलमूर्ति, सभी विघ्नों को दूर करने वाले, सर्वत्र विजयदाता, अपने भक्त को ब्रह्मत्त्व प्रदान करने वाले देव हैं। कोई भी व्यक्ति मात्र अपने प्रयत्नों से, अपनी प्रतिभा के द्वारा, अपनी बुद्धि के माध्यम से किसी भी कार्य को पूर्णरूप व श्रेष्ठता नहीं दे पाता, प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिभा और बुद्धि की एक सीमा अवश्य होती है, इस सीमा से आगे वह नहीं दौड़ पाता, क्योंकि विभिन्न प्रकार की बाधाएं उसकी बुद्धि का विकास एवं कार्य की सफलता को रोक देती हैं।

मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये जिन गुणों की आवश्यकता होती है, उन्हें भगवान गणेश की चेतना को आत्मसात करने से ही प्राप्त किया जा सकता है। सांसारिक मनुष्य के लिये गणेशोत्सव का पर्व आशीर्वाद स्वरूप हैं, अतः इन दस दिवसों में उक्त सुभावों को प्राप्त करने हेतु दीक्षायें ग्रहण कर व्यक्ति तीव्र बुद्धि, वाक्चातुर्य एवं मेधा शक्ति प्राप्त करता है, वहीं उसे हर कार्य में सफलता मिलती है। जीवन में विघ्न-बाधाओं का नाश होता है और यश, धन, ऐश्वर्य, मान-सम्मान युक्त ऋद्धि-सिद्धि शुभलाभमय चेतना का विस्तार होता है। अष्टादश सिद्धि गणपति पूर्ण ऋद्धि-सिद्धि दीक्षा न्यौ ₹ 1500/-

दो वर्षीय तीन पत्रिका सदस्य बनाने पर यह दीक्षा उपहार स्वरूप प्रदान की जायेगी।

इच्छुक दीक्षा प्राप्त करने वाले साधक का नाम एवं पता

नाम.....

.....

अपनी फोटो व तीन पत्रिका सदस्य का पूर्ण पता न्यौछावर राशि के साथ कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर भेजें।

मेष

01 से 06 अगस्त तक-यश, कीर्ति, मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में इजाफा होगा। आपके हाथों से ऐसा कोई काम होगा, जिससे आपके शत्रु भी आपकी प्रशंसा करेंगे। इस समय आप में वह गुण मौजूद रहेगा कि आप शत्रु को भी मित्र बना लेंगे। कई कार्यों में आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपकी सलाह लेंगे। इस समय आप असाधारण ऊँचाइयों पर होंगे।

07 से 13 अगस्त तक-दोनों ही प्रकार के प्रतिफल मिलेंगे। सुख के साथ दु:ख हंसी के साथ-साथ गम का साथ रहेगा। परिवार में वातावरण अनुकूल रहेगा, परंतु व्यावहारिक व व्यावसायिक हालात कुछ खास संतोषजनक नहीं रहेंगे। घर के सदस्यों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भवन, वाहन, भूमि, भूखण्ड किसी चल व अचल सम्पति के लाभ की पूरी-पूरी संभावना व योग बने हुये हैं।

14 से 20 अगस्त तक- काम-काज के दृष्टिकोण से पदोन्नति या महत्त्वपूर्ण पद्भार या कार्यभार आपको सोंपा जा सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार की प्रबल संभावनायें है, हालांकि यह समय विद्यार्थियों के लिये ज्यादा उपयुक्त है। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगेगा। विभागीय परीक्षा या प्रतियोगी परीक्षा का परिणाम सकारात्मक आयेगा।

21 से 31 अगस्त तक-व्यक्तित्व को निखारने में आपका पूरा फोकस रहेगा। व्यवहार व आदतों में सकारात्मक बदलाव अमल में लायेंगें। धनहानि के योग है। परिजनों या पति-पत्नी में आपसी मतभेद हो सकता है। आपके लिये उचित होगा कि आप अष्टादश सिद्धि गणपति पूर्ण ॠिद्धि-सिद्धि दीक्षा ग्रहण करें। न्यौ.₹1500

शुभ तिथियाँ 01,04,06,24

वृषभ

01 से 06 अगस्त तक-इस महीने का प्रथम सप्ताह बहुत ही शानदार तरीके से निकलेगा। इस सप्ताह पैसा, सुकून, मौज, सफलता सब कुछ होगा। आप इस समय कोई नया कार्य भी करेंगे तो सफलता मिलेगी। नया वाहन खरीदने की योजना सफल होगी।

07 से 13 अगस्त तक-आप किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। व्यापार में हानि हो सकती है। पैसों के लेन-देन में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान संभव है। असंयमित व अमर्यादित प्रेम-सम्बन्ध प्रतिष्ठा को हानि पहुँचा सकते हैं। यात्राओं से नई-नई संभावनाओं का जन्म होगा।

14 से 20 अगस्त तक- आप खरीदारी में व्यस्त रह सकते हैं। मेहमानों का आगमन आपको हर्ष व उत्साह से भर देगा। पति-पत्नी के मध्य हल्की-फुल्की नोंक-झोंक चलती रहेगी। परिवार में स्थितियां यदा-कदा तनावपूर्ण रहेंगी। जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। व्यापार में किसी पर भी भरोसा आपको ले डूबेगा। सहकर्मी पर नजर रखें।

21 से 31 अगस्त तक-दैनिक रोजमर्रा के कार्य होते रहेंगे। विद्यार्थी वर्ग का पढ़ाई में मन नहीं लगेगा। विदेश जाकर पढ़ने वाले विद्यार्थी को वीजा, इमीग्रेशन आदिके कागजात में परेशानी आयेगी। कैरियर से जुड़े कार्यो में रूकावट आयेगी। परिश्रम करने से कुछ सार्थक परिणाम मिलेंगे। आप अपने जीवन में आ रही विकट परिस्थितियों के निवारण के लिये आनन्दमयी भुवनेश्वरी आत्मज्ञान प्राप्ति दीक्षा ग्रहण करें। न्यौ.₹2100

शुभ तिथियाँ 02,06,09,31

मिथुन

01 से 06 अगस्त तक-इस महीने की शुरूआत सही नहीं है। आप व्यर्थ में समय गवायेंगे। आप धर्म संकट में फंस सकते हैं। आप निर्णय लेने की स्थिति में नहीं रहेंगे। बहुत खराब समय है, हर कदम सोच-समझकर उठायें। मन में उद्विग्नता रहेगी। रमणीयता और शान्ति ही आपके लिये सब कुछ होगी। मानसिक शांति व आत्म निरीक्षण करना आपके लिये बेहतर होगा, ध्यान लगाने का प्रयास करें।

07 से 13 अगस्त तक-धनप्रदायक समय है। आप में वृद्धि होगी। मनचाहा कार्य सम्पन्न होगा। आप हर फैसला सोच-समझकर करेंगे, जिसका दूरगामी परिणाम आपको प्राप्त होगा। किसी खास परिचित या रिश्तेदार की तबीयत गड़बड़ हो सकती है, जिसका आपको गहरा दु:ख पहुँचेगा। मन में अस्थिरता की स्थिति रहेगी। आध्यात्मिक प्रगति के योग है।

14 से 20 अगस्त तक- आप कोई भी कार्य शांति व निष्ठा से पूर्ण करेंगे। मंदिर में या भजन में समय बिताना आप पंसद करेंगे। कोई भी कार्य आप स्वेच्छा से करेंगे। साझेदारी में लाभ है। आप किसी विवाद की गिरफ्त में आ सकते है, कोई आपको ब्लैक-मेल कर सकता है, आप किसी गुप्त गतिविधियों में शामिल अथवा प्रेम-प्रसंग के चक्कर में फंस सकते है, आप अपनी समस्याओं के निवारण के लिये गौरीनंदन संकट हरण अमरत्व प्राप्ति दीक्षा ग्रहण करें। न्यौ.₹2800

21 से 31 अगस्त तक-सर्वलाभकारी समय है, आप अपनी छवि जोरदार चमकायेंगे, यात्रा में थोड़ी परेशानी हो सकती है, सावधानी रखें तथा किसी पर अधिक विश्वास न करें।

शुभ तिथियाँ 04,08,10,29

कर्क

सिंह

कन्या

01 से 06 अगस्त तक-मानसिक शांति मिलेगी। **धन प्राप्ति** का रास्ता **सुगम** होगा। **निजी क्षेत्र** में कार्यरत **व्यक्तियों** को **प्रोत्साहन** के रूप में कुछ **धन** प्राप्त हो सकता है। **रूपयों-पैसों** की आवक का मार्ग खुलेगा। आप अपनी **योग्यता** व **क्षमताओं** का भरपूर **इस्तेमाल** करेंगे। शरीर में **आलस्य का भाव** विद्यमान रहेगा, **धनहानि** के **प्रबल योग** बने हुये है, अगर आप **वाहन** चलाते है, तो **सावधानी** रखें, क्योंकि **ग्रह स्थितियां प्रतिकूल** हैं। बिना बात ही आप किसी से **उलझ** पड़ेगें। आप अपने जीवन में आ रही **प्रतिकूल परिस्थितियों** के **निवारण** के लिये **सर्व दुःख भंजन पंच देव शिवत्व साधना - दीक्षा** ग्रहण करें। **न्यौ.₹2600**

07 से 13 अगस्त तक-बनते कार्यो में **अवरोध** आयेंगे। **विद्याध्ययन** में **रूकावटें** आयेंगी। किसी **रिश्तेदार** या **मित्र** से **सम्बन्धित** कोई **अप्रिय समाचार** प्राप्त होंगे। **प्रेम-प्रसंगों** में आपको **सफलता** मिलेगी। **प्रतिभा** व **योग्यता** का पूरा **लाभ** मिलेगा।

14 से 20 अगस्त तक- व्यापार में कोई गलत निर्णय हो सकता है। जिससे **धन हानि** होगी, **भावुकता** में बहकर कोई निर्णय नहीं लें।

21 से 31 अगस्त तक-यह सप्ताह भी **व्यापार** के लिये **शुभ** नहीं है, **शत्रु** व **विरोधी** हावी रहेंगे। अगर आप **नौकरी** में है, तो आपको अपने काम को **गम्भीरता** से अंजाम देना चाहिये। किसी के **बहकावे** में आकर कोई काम नहीं करें। **काम-काज** का दबाव तो रहेगा, परंतु आप उस दबाव को अच्छी तरह से **व्यवस्थित** कर लेंगे। **आर्थिक क्षेत्र** में इतने **अनुकूल** परिणाम नहीं रहेंगे।

शुभ तिथियाँ 04,12,16,25

01 से 06 अगस्त तक-**पारिवारिक फरमाइशों** को पूरा करने में आप लगे रहेंगे। **कैरियर** में इस समय कोई **नया प्रस्ताव** मिल सकता है। **जिन्दगी** के प्रति आपका रवैया **सकारात्मक** रहेगा। **गृहणियां** कुछ नया **सीख** सकती हैं। **आर्थिक स्थिति** व हालात पहले से बेहतर बनेंगे। इस दरम्यान **व्यापार** व **कारोबार** में कोई बड़ा ऑर्डर आपके हाथ लग सकता है।

07 से 13 अगस्त तक-किसी मित्र या रिश्तेदार से सम्बन्धित कोई **अप्रिय समाचार** प्राप्त होंगे। व्यापार में सोच -समझकर निर्णय लें, अन्यथा **धनहानि** के पूरे **योग** व **संभावनायें** हैं। **अविवाहितों** के विवाह के प्रस्ताव आयेंगे। **धर्म-कर्म** में रूचि रहेगी। आप अपने जीवन में आ रही **प्रतिकूल परिस्थितियों** के निवारण के लिये **श्रीकृष्ण तत्व जागरण सुदर्शन सिद्ध राजयोग दीक्षा** ग्रहण करें। **न्यौ.₹2100**

14 से 20 अगस्त तक- सप्ताह का आरम्भ **अशुभ घटनाओं** से होगा। आप फालतू में ही किसी से उलझ पड़ेंगे। **भागीदार** व **सहकर्मियों** से सम्बन्धों में खिंचाव रहेगा। इस समय न ही किसी को **उधार** दें और न ही किसी से उधार लें।

21 से 31 अगस्त तक- आपके अपने लोग ही आपको **तकलीफ** पहुँचा सकते हैं। **वाहन** द्वारा हानि होने की भी **संभावना** है- आपको चारों तरफ से **अशुभ समाचार** प्राप्त होंगे। **आर्थिक मामलों** में भी आपका हाथ फंस सकता है। **विघ्न हरण गौरी नन्दन साधना** सम्पन्न करें, परिवार की **रक्षा** व **बाधाओं** की समाप्ति के साथ **आर्थिक सुदृढ़ता** बनेगी।

शुभ तिथियाँ 03,07,26,30

01 से 06 अगस्त तक-माह का आरम्भ **सुखद** रहेगा। कड़ी **प्रतियोगिता** के बावजूद बेहतर पाने की आशा रखेंगे। **स्वास्थ्य** के मामले में उठा-पटक रहेगी, लेकिन आप डरें नहीं, ऐसा **गम्भीर** कुछ भी नहीं होगा। **योजनाओं** को पूरा करने के लिये आप में **दृढ़ इच्छा** शक्ति रहेगी। दरअसल आपको इस दौरान **कैरियर** को संवारने के लिये बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। विपरीत परिस्थितियों में भी **सफलता** के ही **योग** हैं।

07 से 13 अगस्त तक-आपकी खुशियां छिन सकती है। आप **नजर दोष, टोने-टोटके** के शिकार हो सकते है। बनते कार्य में **अड़चनें** आयेंगी। आप अपने **राशि स्वामी बृहस्पति** की **आराधना** करें व **गुरूवार** का व्रत करें तथा **केले के वृक्ष** की प्रति **गुरूवार** पूजा करें तो **कष्ट** कम होंगे।

14 से 20 अगस्त तक- आप **उन्नति** की राह पर आगे बढ़ेंगे। आपकी **वेतन वृद्धि** के भी **योग** है। **कैरियर** व **व्यवसाय** में सम्मान की प्राप्ति होगीं अपने **खानपान** का ध्यान रखें। **नियमित** व **सुचारू** रूप से **पौष्टिक** व **अल्प मात्रा** में **भोजन ग्रहण** करें। व्यर्थ न बोलें। हमेशा **तोल-मोल** के बोलें।

21 से 31 अगस्त तक- इस सप्ताह घर में या आस-पास के लोगों से **झगड़ा** हो सकता है। आप **परेशानी** अनुभव करेंगे। आप पैरों से सम्बन्धित **व्याधि** से पीड़ित हो सकते है, समय अच्छा नहीं है। आपके जीवन में आ रही **विकट बाधाओं** के निवारण के लिये आप **ज्येष्ठा लक्ष्मी विजयश्री प्राप्ति साधना - दीक्षा** ग्रहण करें जिससें आपके जीवन में अनुकूल स्थितियां निर्मित होगी। **न्यौ.₹2800**

शुभ तिथियाँ 02,07,11,13

PMYV

तुला

01 से 06 अगस्त तक-माह का प्रारम्भ शान्तिदायक रहेगा। समय खुशियां प्रदान करने वाला है। आप सामूहिक गतिविधियों में तथा बैठकों में भाग लेंगे। आपकी पत्नी तथा बच्चे आपको सहयोग प्रदान करेंगे। निवेश, व्यापार, फंड आदि में आपको कटु सच्चाइयों का सामना करना पड़ सकता है। धन सम्बन्धी निवेश के मामलों में आपको किसी भरोसेमंद व्यक्ति की सलाह लेनी पड़ सकती है। सौदेबाजी में नमी रखें, अन्यथा बड़ा नुकसान हो सकता है।

07 से 13 अगस्त तक- इस सप्ताह नौकरी पेशा वर्ग को विशेष लाभ मिलेगा। अपने भावी कार्यों को करने की योजना भी बना सकते है। जिन्दगी के प्रति एक नया जोश, साहस व ऊर्जा आपका मनोबल बढ़ायेंगे। इस बीच कोई अशुभ समाचार भी मिल सकता है। जिससे आपको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप आनन्दमयी भुवनेश्वरी आत्मज्ञान प्राप्ति दीक्षा ग्रहण करें, जिससे आपकी समस्याओं का निवारण होगा।

न्यौ.₹2100

14 से 20 अगस्त तक- पुरानी चिंतायें समाप्त हो जायेगी। परन्तु फिजुल खर्च बढ़ेंगे, आप व्यर्थ के कामों में पैसा पानी की तरह बहा सकते है, इससे बचें।

21 से 31 अगस्त तक-ज्ञानवर्द्धन करने का समय होगा। आप अपने भाग्य को खुद चमकायेंगे। अपने घर या कार्यस्थल में परिवर्तन ला सकते है। माता-पिता के साथ खुशियों को साझा करेंगे। आप उत्साह से भरे होंगे, जिससे आप अभूतपूर्व सफलता अर्जित करने में सफल होंगे। धैर्य पूर्वक ही निर्णय लें।

शुभ तिथियाँ 02,11,24,29

वृश्चिक

01 से 06 अगस्त तक-कलह, वाद-विवाद व लड़ाई-झगड़े के कारण तनाव रह सकता हैं। सामाजिक महत्त्व के कार्यों में असफलता की प्राप्ति होगी तथा अन्य कार्यों में भी समस्या होगी। शारीरिक स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहेगा। स्वास्थ्य में किसी भी तरह की लापरवाही के कारण लेने के देने पड़ सकते है। विद्यार्थियों की मेहनत सफल होगी। आत्मविश्लेषण व आत्ममंथन का समय है, कठोर परिश्रम व कड़ी मेहनत का प्रतिफल प्राप्त होगा।

07 से 13 अगस्त तक-लक्ष्य प्राप्ति के लिये आप किसी भी हद तक जा सकते है। धार्मिक कार्य-कलापों में व्यस्त रहेंगे, जिससे तन और मन दोनों ही प्रफुलित होगा। किसी कानूनी फसाद में पड़ सकते । कार्यों में अवरोध से आप परेशान रहेंगे।

14 से 20 अगस्त तक- नये-नये लोगों से आपका सम्पर्क बनेगा। इस समय आपकी मुलाकात किसी प्रभावशाली व्यक्ति से हो सकती है। आर्थिक पक्ष पहले से काफी सुदृढ़ स्थिति में रहेगा। अनजान व्यक्ति से लेन-देन भारी पड़ सकता है। मानसिक संतुलन बनाये रखे, अन्यथा बड़ी हानि हो सकती है। अविवाहित लोगों के लिये समय अनुकूल है। राधाकृष्ण प्रेम अनंग सौन्दर्य प्राप्ति साधना-दीक्षा ग्रहण करें, वैवाहिक बाधायें समाप्त होंगी। न्यौ.₹2800

21 से 31 अगस्त तक-इस सप्ताह आपके भीतर क्रोध का भाव होगा, जिससे आपके निकट सम्बन्धी आपसे दूरी बना सकते है। घर-परिवार व कार्यक्षेत्र में जिम्मेदारियां बढ़ेगी तथा मिले जुले परिणाम व प्रतिफल प्राप्त होगा।

शुभ तिथियाँ 07,12,24,28

धनु

01 से 06 अगस्त तक-माह का प्रारम्भ ठीक नहीं होगा। समय परेशानियों से भरा है, जिम्मेदारियों का बोझ बना रहेगा, धन विद्या सम्बन्धी मामले आपके लिये महत्त्वपूर्ण रहेंगे। आप पर नये विचार और अनुभव हावी रहेंगे। आप किन्हीं गुप्त गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

07 से 13 अगस्त तक-नये लोगों से मित्रता तथा मुलाकात करेंगे। आपका अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा, प्रतिष्ठा और धन सम्बन्धित लाभ प्राप्त होगा। सावधान रहने की आवश्यकता है। कुछ मामलों में आपको निराशा का सामना करना पड़ सकता है। वहीं आर्थिक या भावनात्मक रूप से आपको झटका लग सकता है। आप ज्येष्ठा लक्ष्मी विजयश्री प्राप्ति साधना - दीक्षा प्राप्त करें। न्यौ.₹2800

14 से 20 अगस्त तक- दिन सामान्य रहेंगे। इस समय आप जोश व उत्साह युक्त होंगे तथा अपना लक्ष्य निर्धारित करेंगे। विद्यार्थी वर्ग अपना पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर एकत्रित करेंगे। चोरी या समान गुम होने की भी प्रबल संभावना है आप अपने स्तर पर सर्तक व सावधान रहे।

21 से 31 अगस्त तक-काम में कामयाबी मिलने से आपके पिछले सारे तनाव और परेशानियां दूर हो जायेंगे। मन-मस्तिष्क में शांति रहेगी। आप अपने घरवालो को पूरा समय देंगे। आप इस समय कल्याणकारी कार्यों में भाग लेंगे। पति-पत्नी में आपसी मतभेद विकसित होंगे। आपके साथ धोखा या ठगी हो सकती है। मानहानि या अपमान का सामना भी करना पड़ सकता है। आप हर कार्य संभल कर करेंगे तो स्थिति में सुधार आयेगा।

शुभ तिथियाँ 01,20,25,29

मकर

01 से 06 अगस्त तक-सप्ताह मिश्रित फलदायी रहेगा। काम-काज में उन्नति होगी। आप योजना बनाकर लक्ष्यों के प्रति अग्रसर होंगे। रोजी-रोजगार के उचित अवसर सुलभ होंगे। नौकरी का प्रस्ताव प्राप्त हो सकता है। पारिवारिक सुख-शांति में बढ़ोतरी होगी। आय प्राप्ति के साधनों में वृद्धि होगी। व्यापार में साझेदारी नुकसान दायक है। अष्टादश सिद्धि गणपति पूर्ण ऋिद्धि-सिद्धि दीक्षा ग्रहण करें, समस्याओं का निवारण होगा। न्यौ.₹1500

07 से 13 अगस्त तक-समय तनाव पूर्ण है, किसी भी काम को एकाग्रता से पूरा कर पायेंगे। आप अपना कार्य प्रदर्शन का स्तर बेहतर करने में सफल रहेगी। पैसों की आवक रहेगी। इस समय यह परिभ्रमण सुखद रहेगा।

14 से 20 अगस्त तक- आप मार्ग में बुरे फंस सकते है। व्यापार-व्यवसाय में स्थिति आपके नियंत्रण से बाहर होगी। आपका पैसा कहीं बुरी तरह से फंस सकता है और वापिस आने की उम्मीद भी कहीं दूर तक नहीं है। पत्नी और मित्रों से अनबन रहेगी। आप नई साझेदारी, कर सकते है। कृष्ण-राधा संयुक्त साधना सम्पन्न करें। जिससे आपकी सभी बाधायें समाप्त होंगी, व जीवन में मंगलमय चेतना का प्रवाह होगा।

21 से 31 अगस्त तक-जल्दबाजी में किये गये फैसले का नुकसान उठाना पड़ सकता है। कानूनी पचड़े में फंस सकते है या वित्त संबंधी मामलों में विवाद का सामना करना पड़ सकता है। निवेश सम्बन्धी मामलों में परेशानियां रहेगी।

शुभ तिथियाँ 01,20,26,29

कुंभ

01 से 06 अगस्त तक-इस सप्ताह आपका सर्वांगीण विकास होगा। आमदनी और खर्च दोनों में इजाफा होगा। लेकिन आपको इससे निपटने में दिक्कत पेश नहीं आयेगी। आप हर काम सोच-विचारकर करेंगे। आप निजी तौर पर आत्म सुधार की कोशिश में लगे रहेंगे। साथ ही बहुत ही चुनौतीपूर्ण हालात के बावजूद अपने कैरियर, व्यवसाय व लक्ष्य को प्राथमिकता देंगे।

07 से 13 अगस्त तक-यह सप्ताह थोड़ा मुश्किलों से भरा रहेगा। पारिवारिक सम्बन्धों में तकरार रहेगी। कमर से नीचे के रोग उभरेंगे। समय में सुधार आयेगा। अपनी हिम्मत, आत्मविश्वास और आशा को बनाये रखे। पुराने ऋण आपको विचलित करेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने का आपको उपाय करना ही चाहिये, इस हेतु आप श्रीकृष्ण तत्व जागरण सुदर्शन सिद्ध राजयोग दीक्षा ग्रहण करें। जीवन में मंगलमय स्थितियां विकसित होगी। न्यौ.₹2100

14 से 20 अगस्त तक- समय अनुकूल है। इस समय यात्रा को टालें अन्यथा कष्ट की प्राप्ति होगी। चलते वाहन तकनीकी खराबी के कारण रूक सकते है, अत: समय रहते चेक कराये। आपकी छवि समाज में बिगड़ सकती है। आपके मन में अच्छे सकारात्मक विचार बनेंगे।

21 से 31 अगस्त तक- आप इस समय अपने पर नियंत्रण रखे व क्रोध करने से बचे, अन्यथा आप अपने क्रोध के कारण किसी कानूनी केस में पड़ सकते है। जरा सी निराशा से ही आप अकेलापन महसूस करेंगे। कुछ गुप्त बैठकें और क्रियाकलाप होने की संभावना है।

शुभ तिथियाँ 02,07,11,20

मीन

01 से 06 अगस्त तक-नौकरी में खास सफलता के योग बने हुये है। व्यापार व कारोबार में आप नये हुनर, तकनीक या संसाधन मशीन का इस्तेमाल करके अपने व्यापार को बढ़ाने में सफल होंगे। आपकी दिनचर्या कुछ ज्यादा ही व्यस्त रहेगी, वहीं जिम्मेदारियों का बोझ भी बढ़ जायेगा। व्यर्थ में ही आप किसी से उलझ पडेंगे, आप पर कोई आरोप लग सकता है, घर के किसी सदस्य के कारण आपको शर्मिंदगी उठानी पड़ सकती है।

07 से 13 अगस्त तक-आपकी कोई वस्तु खो जाने का भय है। कठोर परिश्रम व कड़ी मेहनत से आप वह सभी हासिल कर लेंगे, जिसकी आपने कभी तमना की है। मन में सकारात्मक विचारधारा का जन्म होगा। जल्दबाजी में कोई भी काम नहीं करें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। आर्थिक पक्ष ज्यादा अच्छा नहीं रहेगा।

14 से 20 अगस्त तक- किसी विशिष्ट व्यक्ति का मार्गदर्शन व सलाह आपके लिये ज्यादा महत्त्व रखेगी। आत्म विश्लेषण के नाजुक दौर से गुजरेंगे।

21 से 31 अगस्त तक-कोई नजदीकी व्यक्ति आपको आकर्षित करेगा और साथ ही शांति, सांत्वना और सुकून भी देगा। व्यक्तिगत मेल-जोल बढ़ेगा। काम के सिल-सिले में बाहर भी जा सकते है। आपका पूरा फोकस घर व परिवार पर रहेगा। किसी समस्या का समाधान मिल बैठ कर निकालेंगे। वित्तीय गतिविधियों में आप व्यस्त रहेंगे। सरकारी दफ्तर में सफलता मिलेगी। कोई अशुभ समाचार भी मिल सकता है। इस हेतु आप सकल पीड़ा नाशक ब्रह्म वर्चस्व सप्त ऋषि चेतना दीक्षा ग्रहण करें। न्यौ.₹1500

शुभ तिथियाँ 14,19,21,24

ऋषि पंचमी

08 सितम्बर

सकल पीड़ा नाशक ब्रह्म वर्चस्व सप्त ऋषि चेतना दीक्षा

ऋषि आवाहन पूजन मुहूर्तः 08 सितम्बर, रविवार दिवा 11:04AM से दिवा 01:32PM

हमारे पूर्वज, हमारे ऋषि, बड़े ही चेतनावान, दिव्ययुग पुरुष थे, जिन्होंने मानव के जीवन में विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार साधनाएं विकसित की, जिनके द्वारा व्यक्ति अपना अभीष्ट पूर्ण कर सके। ऋषि वे उच्चतम कोटि के योगी, यति होते हैं जो पूर्ण रूप से ब्रह्ममय हो जाते हैं, स्वयं ब्रह्म स्वरूप हो जाते है और जिनके लिए असम्भव नाम की कोई स्थिति नहीं होती, ऋषि ही वास्तव में इस ब्रह्माण्ड के नियंता हैं, उनकी सूक्ष्म, नियन्त्रक तरंगो के माध्यम से ही, समस्त ब्रह्माण्ड गतिशील हैं। वे सही अर्थों में मनुष्य थे, क्योंकि अपने जीवन की सभी डोर उनके स्वयं के हाथ में थी और अगर हम अपने पूर्वजो की स्थिति तक न भी पहुँच पायें तो कम से कम ये स्थितियाँ तो अपने जीवन में उतार ही लें, जिससे हमारा मनुष्य होना सार्थक हो सके। इस ज्ञान द्वारा सत्य का साक्षात्कार हो जाता है। वेद दृष्टा ऋषि अंर्तज्ञान के भण्डार हैं। इन सब दर्शन को स्पष्ट करने के पीछे यह उद्देश्य है कि वही व्यक्ति जीवित है जो अपने जीवन में दृष्टा बन जाता है और जो दृष्टा बन जाता है वह ऋषि बन जाता है। ऋषि व्यक्तित्व होने के लिए अंर्तज्ञान का अंर्तदृष्टि का पूर्ण विकास होना आवश्यक है।

अगर व्यक्ति स्वस्थ, निरोगी हो तो वह दिन भर ज्यादा अच्छा काम कर सकेगा और सफलता प्राप्त कर सकेगा। केवल मनुष्य में वह क्षमता होती है कि वह आध्यात्मिक दृष्टि से अपने नाम को ऊँचा उठाकर ब्रह्मलीन हो सके।

इसलिए ऋषियों ने एक ऐसा दिवस का चयन किया, जो अपने आप में तेजस्विता युक्त है, जो कि ऋषि पंचमी कहलाई। इस दिवस पर सद्गुरूदेव जी 'सप्त ऋषि ब्रह्म वर्चस्व प्राप्ति सकल पीड़ा नाशक दीक्षा' साधकों को प्रदान करेंगे। जिससे समस्त जीवन क्रम पुनः ऊर्जा से आपूरित हो जाता है और वह हर प्रकार से श्रेष्ठ बन पाता है। पूरी तरह से किसी व्यक्ति का आमूलचूल परिवर्तन इसी दीक्षा से सम्भव है, यह दीक्षा कोई मामूली दीक्षा नहीं है, ऋषियों के उस अवर्णनीय ब्रह्मत्व से आपूरित हैं। जो व्यक्ति जीवन में ये सभी बिंदु प्राप्त करना चाहते है उन्हें तो यह दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए।

मंत्र

।। ऊँ श्रीं ह्रीं सप्त ऋषिभ्यो ब्रह्मवर्चस्वं सिद्धिं चैतन्यं ह्रीं श्रीं ऊँ।।

सकल पीड़ा नाशक ब्रह्म वर्चस्व सप्त ऋषि चेतना दीक्षा न्यौछावर ₹ 1500

सद्गुरु वाणी

- जब तुम अपने आप को शक्तिहीन अनुभव करो, जब तुम अपने आप को मृत तुल्य अनुभव करो तब तुम मेरे साथ प्रकृति की तरह एकाकार हो जाओ।
- प्रकृति के साथ तुम एकाकार तभी हो सकते हो जब मेरे प्राणों से अपने प्राण जोड़ सको, मेरे हृदय से अपना हृदय एकाकार कर सको, मेरे अंदर अपने आप को समाहित कर सको।
- गुरू को तुम भले ही भौतिक रूप में देखो परन्तु वह तो होता है प्राणों का घनीभूत स्वरूप जहाँ से होता है जीवन का नवीन सृजन। इसीलिए गुरू को माता और पिता दोनों कहा गया है।
- मैं पिछले कई जन्मों से तुम्हारा गुरू हूँ, तुम्हारे साथ हूँ, तुम मेरे शिष्य हो। तुम शरीर हो और मैं उसकी धड़कती हुई आत्मा हूँ, प्राणों का स्पंदन हूँ।
- बिना गुरू स्पंदन के तुम्हारा शरीर एक खोखला, प्राण रहित मात्र रक्त मज्जा का पिंड है। ऐसा शरीर जीवित तो है परन्तु उसमें आनन्द नहीं है। तुम्हारे इस दुनियां के पास आनन्द का स्त्रोत नहीं है जहाँ जाकर तुम आनन्द में डूब सको।
- परन्तु गुरू के पास दिव्य सुगंध का स्त्रोत है उसके पास पहुँचोगे तो तुम्हारे हृदय में एक नई उमंग पैदा होगी, तुम्हारे चेहरे पर एक तेजस्विता होगी।
- तुम्हें इस जीवन में मृत नहीं होना है, तुम्हें सुगंध से, ज्ञान और चेतना की सुगंध से प्राणों को सींचना है। तुम साधनाओं के अजस्त्र भण्डार से जुड़े हुए हो, तुम प्राण चेतना के प्रवाह से अनुप्राणित हो इसलिए तुम्हें समाज को परिवर्तित करना है, उनकी सड़ी गली मान्यताओं को समाप्त कर देना है।
- जो मेरे साथ है वे बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं। जिस प्रकार समुद्र उपर से भले ही शांत दिखाई दे पर अंदर उसके बड़ी हलचल होती है। ठीक ऐसे ही मेरे शिष्य हैं। ऊपर से शांत दिखते हुए भी एक नवीन सृजन के कार्य में वे संलग्न हैं।
- अगर भगवान को साक्षात् देखना है, उस प्रभु के सामने साक्षात् नृत्य करना है, उस प्रभु को अपनी आँखों में बसा लेने की क्रिया करनी है। तो स्त्री हृदय ही धारण कर देखा जा सकता है। स्त्री का अर्थ है, जिसका हृदय पक्ष जाग्रत हो, क्योंकि हृदय पक्ष को जाग्रत करने की क्रिया प्रेम है।

शिष्य धर्म

- शिष्य का और गुरू का संबंध जीवन में सबसे श्रेष्ठतम संबंध माना गया है। इन सबंधों को संसार के किसी भी तराजू में तोला नहीं जा सकता, एक श्रेष्ठ शिष्य में निम्न गुण अवश्य ही होने चाहिए। इन गुणों से ही विश्वास, निष्ठा बढ़ती है।
- जो शिष्य गुरू तत्त्व के रहस्य को नहीं जान पाता वह पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। अतः शिष्य को चाहिए कि वह गुरू तत्त्व को समझे। उसमें ही जीवन की सार्थकता है।
- शिष्य को सदैव गुरू का ध्यान उसी प्रकार करना चाहिए जिस प्रकार एक पतिव्रता स्त्री केवल अपने पति का चिंतन करती है।
- शिष्य को चाहिए कि प्रसन्न मन से श्रद्धा पूर्वक गुरू को ही, अपना परम लक्ष्य बना ले। इसी माध्यम से वह सौभाग्यशाली बन सकता है।
- जब शिष्य 'स्व' को समाप्त कर देता है तो उसके हृदय में गुरू ज्ञान का दीपक प्रज्वलित हो उठता है।
- शिष्य के समस्त पाप जनित विघ्नों को समाप्त करने के कारण गुरू शिव स्वरूप हैं। शिष्य को हरदम ऐसा ही चिन्तन करना चाहिए।
- जो शिष्य पूर्ण श्रद्धा के साथ गुरू चरणों का जल अपने ऊपर छिड़कता है या चरणामृत के रूप में ग्रहण करता है उसे संसार के समस्त तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्त हो जाता है। गुरू शब्द का उच्चारण करना ही जीवन की पूर्णता मानी गयी है।
- जो सद्गुरू की श्रद्धा पूर्वक आराधना करता है उसने जीवन में भले ही कितने ही पाप किए हों, धीरे-धीरे वे समाप्त हो जाते हैं।
- शिष्य के लिए गुरू का रूप समस्त देवताओं में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वे ही अज्ञान को हटाकर पूर्ण ज्ञान देने में समर्थ हैं।
- शिष्य पूरी श्रद्धा से गुरू की सेवा में रत रहता है क्योंकि उसी माध्यम से वह आध्यात्मिक और भौतिक सुख की प्राप्ति करता है।
- गुरूतत्व विशुद्ध रहस्यमय ज्ञान है। इसे प्राप्त करने के लिए शिष्य का मन पावन और निर्मल होना चाहिए।
- शिष्य के लिये गुरू ही सर्वस्व होता है। यदि व्यक्ति की मित्रता राजा से हो जाये, तो उसे किसी छोटे-मोटे अधिकारी की सिफारिश की क्या आवश्यकता है। इसलिए श्रेष्ठ शिष्य वह है जो अपने मन के तारो को गुरू से ही जोड़ता है। शिष्य यदि सच्चे हृदय से पुकार करे, तो ऐसा होता ही नहीं कि उसका स्वर गुरूदेव तक न पहुँचे। उसकी आवाज गुरू तक पहुँचती है, इसमें कभी सन्देह नहीं करना चाहिये।

गुलमेंहदी (Rosemary)

गुलमेंहदी एक सुगन्धित सदाबहार जड़ी-बूटी है जिसके पत्ते सुई के आकार के होते हैं। यह भूमध्यसागरीय क्षेत्र का मूल पौधा है। यह पुदीना परिवार लैमियेसी की सदस्य है, जिसमे और भी कई जड़ी-बूटी शामिल हैं। गुलमेंहदी का पौधा सीधा बढ़ता है और 1.5 मीटर तक लंबा होता है और कभी-कभी यह 2 मीटर तक पहुँच सकते हैं। सदाबहार पत्ते, ऊपर से हरे और नीचे से रोमिल सफेद होते है। फूल सर्दी या वसंत ऋतु में खिलते हैं जिनका रंग बैंगनी, गुलाबी, नीला या सफेद होता है। यह आकर्षक पौधा कुछ हद तक सूखे का प्रतिरोध करता है इसलिए इसे विशेष रूप से भूमध्यसागरीय जलवायु क्षेत्रों मे भू-दृश्य निर्माण के लिए प्रयोग किया जाता है। यह आसानी से उगायी जा सकती है और माना जाता है कि यह कीट प्रतिरोधी होती है। गुलमेंहदी को आसानी से किसी भी आकार में काटा जा सकता है इसीलिए इसे शस्यकर्तन के लिए इस्तेमाल किया जाता है। रोजमेरी तेल एक सुगंधित एसेंशियल आँयल है, जो रोजमेरी नाम की जड़ी-बूटी से निकाला जाता है। एक कारगर जड़ी-बूटी के रूप में यह पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध है। कई विदेशी व्यंजनों में रोजमेरी के ताजे पत्तों का इस्तेमाल स्वाद बढ़ाने के लिए भी किया जाता है। रोजमेरी व रोजमेरी आँयल का प्रयोग सौंदर्य प्रसाधनों और हर्बल औषधीय बड़े स्तर पर किया जाता है।

रोजमेरी से खास प्रकार की सुगंध प्राप्त होती है, जो मस्तिष्क क्रिया को उत्तेजित कर देती है और सोचने, समझने व याद रखने की क्षमता में सुधार होने लगता है। कुछ अध्ययनों के अनुसार रोजमेरी की सुगंध से मस्तिष्क में एसेटीकोलिन नामक केमिकल का ब्रेकडाउन होने लगता है, जो मस्तिष्क कार्यों के लिये आवश्यक होता है।

रोजमेरी पौधे के सूखे हिस्सों व तेल का इस्तेमाल कई अलग-अलग तरीकों से किया जाता है, जिनकी मदद से शरीर में होने वाले कई प्रकार के दर्द कम हो जाते हैं। कुछ अध्ययन बताते हैं कि रोजमेरी के कुछ तत्त्व दर्द निवारक दवाओं से भी प्रभावी रूप से काम करते हैं।

रोजमेरी की खुशबू लेने से तनाव व चिंता विकार का स्तर कम हो जाता है। साथ ही कुछ अध्ययन बताते हैं कि रोजमेरी की खुशबू से कॉर्टिसोल नामक स्ट्रेस हार्मोन स्तर को कम होने लगता है। रोजमेरी से प्राप्त होने वाले लाभ हर व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति व शारीरिक प्रकृति के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं।

यूनानी और रोमन चिकित्सा पद्धति में भी मेमोरी पॉवर बढ़ाने के लिए रोजमेरी आँयल का इस्तेमाल किया जाता रहा है। यह आँयल एसिट्लोक्लिन को बनाए रखता है, जो एक ब्रेन केमिकल है। यह विचार प्रक्रियाओं में मदद कर याददाश्त बढ़ाता है। यह बुजुर्गों में डिमेंशिया या मेमोरी लॉस के साथ ब्रेन फंक्शन में भी सुधार करता है। यह अल्जाइमर बुजुर्गों के लिए भी फायदेमंद है। यह ध्यान केंद्रित करने में भी मदद करता है।

रोजमेरी एंटीऑक्सिडेंट गुणों वाला होता है। यह स्किन को फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से बचाता है। यह हेल्दी स्किन को बढ़ावा देता है। यह सूजन कम करता है। रोजमेरी एसेंशियल आयल टेरपेन्स से भरपूर होता है, जो स्किन की जलन और रेडनेस को शांत करने में मदद करता है। रोजमेरी आयल को सूंघा जा सकता है या सिर पर लगाया जाता है। यह बहुत गाढ़ा होता है। इसलिए एक बार में इसकी कुछ बूंदों का ही इस्तेमाल स्किन पर करना चाहिए।

रोजमेरी में एंटी बैक्टीरियल गुणों की भी प्रचुरता होती है। जिसकी बदौलत ये पेट के अल्सर से हमें बचाता है। इसके अलावा इसे घर में लगाने से कीड़े-मकोड़ों और मच्छरों का सफाया होता है।

पेट की कई समस्याएं जैसे कि पेट में दर्द, अपच, गैस बनना आदि आम हैं। रोजमेरी आपको इन समस्याओं से भी छुटकारा दिलाता है। इसे खाना बनाते समय भी इस्तेमाल कर सकते हैं। पाचन शक्ति के ठीक होने से कई रोगों के होने की सम्भावना भी खत्म हो जाती है।

जहाँ भी दर्द हो उस जगह पर रोजमेरी का तेल लगाने से दर्द में आराम मिलता है। यहाँ तक कि इसका फायदा मांसपेशियों के दर्द, गठिया और अर्थराइटिस आदि परेशानियों में भी मिलता है। पेनकिलर के रूप में इसका इस्तेमाल काफी राहतप्रद है।

रोजमेरी हमें कोलोन कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर, ल्यूकेमिया और स्किन कैंसर आदि से भी बचाता है। क्योंकि इसमें कैंसर रोधी गुण पाए जाते हैं। इसका इस्तेमाल भी आसान है। क्योंकि इसे खाने में मिलाकर खा सकते हैं।

जाहिर है कि सुगंध सबको पसंद है, लेकिन रोजमेरी की सुगंध अच्छा लगने के साथ-साथ आपके मन को शांत करके आपकी मनोदशा को सुधारता है।

रोजमेरी में कारसोनिक नाम का एक तत्व पाया जाता है, जो कि हमारे मस्तिष्क की कार्यक्षमता में वृद्धि करता है, जिससे कि हमारी स्मरण शक्ति में तेजी आती है और इससे अल्जाइमर में भी राहत मिलती है।

रोजमेरी में एंटीऑक्सीडेंट और एंटी इंफेलेमेटरी गुण पाया जाता है। जो कि हमारी शरीर के प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मददगार होते हैं। इसके नियमित सेवन से हमारे अन्दर बीमारियों से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होती है।

रोजमेरी का तेल आपके बालों को न सिर्फ स्वस्थ रखता है बल्कि इसे झड़ने से रोकता है और बालों को बढ़ने में भी मदद करता है। इससे आपके बाल लम्बे और चमकदार बनते है।

रोजमेरी को एक बर्तन में उबाल कर सर को तौलिये से ढककर इसका भाप लेने से इसकी महक आपके मस्तिष्क तक पहुंचती है। इससे माइग्रेन के दर्द से काफी हद तक राहत मिलती है। इसलिए इसे एक प्राकृतिक उपचार माना जाता है।

गुलमेंहदी में शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट पाए जाने के कारण ये झुर्रियों से छुटकारा दिलाता है। लटकती हुई त्वचा में कसाव लाता है। इसमें कोशिकाओं को पुनर्जीवित करने की भी क्षमता होती है। ये हमारे शरीर का रक्त संचार बढ़ाकर स्किन टोन में भी सुधार लाता है।

शरीर में रक्त का सही प्रकार का संचालन बहुत जरूरी है। रक्त संचार प्रणाली शरीर की सभी कोशिकाओं में पोषक तत्वों और ऑक्सीजन को ले जाने का काम करती है। रक्त संचालन में आई रुकावट से टिशू और कोशिकाएं क्षतिग्रस्त होती हैं। यहां रोजमेरी का तेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह खास तेल है, जो शरीर में रक्त संचार को बढ़ावा देने का काम करता है। ये रक्त कोशिकाओं का उत्पादन बढ़ाता है और नर्वस सिस्टम को संतुलित करता है।

ओरल हेल्थ के लिए भी रोजमेरी के फायदे बहुत हैं। रोजमेरी एंटीबैक्टीरियल गुणों से समृद्ध होता है। जो दांतों और मसूड़ों को संक्रमण से छुटकारा दिलाता है।

सर्दी और खांसी जैसी समस्याओं के लिए भी रोजमेरी तेल का उपयोग किया जाता है। एंटीबैक्टीरियल और एंटीइंफलेमेटरी गुणों के कारण सर्दी और खांसी के संक्रमण से बचाव का काम करता है। रोजमेरी के तेल में तेज औषधीय गंध होती है, जो बंद नाक को खोलने का काम भी करता है और रक्तचाप, हृदय गति और श्वसन दर को बढ़ाकर आपको ऊर्जावान महसूस कराता है। यह तेल त्वचा में जलन और जीवाणु संक्रमण से आराम देने का काम करते हैं। कई अध्ययनों से साबित हुआ है कि रोजमेरी तेल के एंटीऑक्सीडेंट गुण लिवर की कोशिकाओं को ठीक करने में सहायक भूमिका निभा सकते हैं। साथ ही लिवर कोशिकाओं में कैंसर कोशिकाओं के प्रसार को भी रोक सकते हैं।

इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

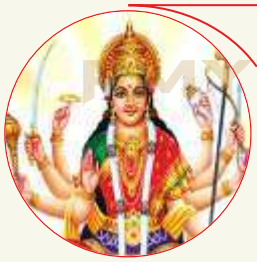

शिवयुक्त महेश्वरी साधना

22 अगस्त , कजरी तीज

महेश्वरी साधना एक प्रचण्ड और अचूक साधना है, जिसे यदि सही तरह सम्पन्न किया जाए तो इसका निशाना खाली नहीं जाता। शिवयुक्त होने से महेश्वरी साधना सौम्य रूप ले लेती है, परन्तु इसका प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाता है। इस साधना के निम्न लाभ हैं - 1. यदि किसी प्रकार की आपके ऊपर कोई तंत्र बाधा है अथवा कोई तंत्र दोष है तो वह समाप्त होता है। 2. यदि शत्रु अधिक हावी एवं बलशाली हो गये हों, तो वे परास्त होते हैं और आत्मबल प्राप्त होता है। 3. यदि किसी प्रकार का कोई लम्बा रोग हो तो स्वास्थ्य लाभ होता है और दुर्बलता समाप्त होती है। 4. महेश्वरी देवी का विशेष सुरक्षा चक्र प्राप्त होता है, जिससे किसी भी स्थिति में साधक की अकाल मृत्यु या दुर्घटना नहीं हो सकती।

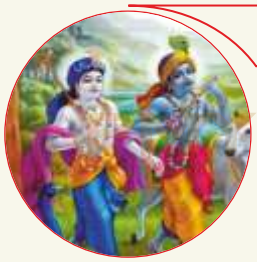

पूर्ण आत्मबल उच्च व्यक्तित्व प्राप्ति बलराम साधना

24 अगस्त - बलराम जयन्ती

इस समाज में केवल उन्हीं व्यक्तियों का मान-सम्मान होता है, जो ऊर्जा से युक्त होते है और जो अपने कार्यों द्वारा दूसरों को प्रकाशवान बनाते हैं। जब समाज में व्यक्ति को उचित स्थान प्राप्त नहीं होता है तो वह स्वयं को समाज से अलग समझने लगता है। बलराम साधना एक उच्चकोटि का प्रयोग है, जिसके पूर्ण करने पर व्यक्ति के तेज और आकर्षण में वृद्धि होती है, व्यक्ति के आत्मबल में अभिवृद्धि होती है। जिसके कारण वह अपने कार्यक्षेत्र में ऊर्जायुक्त होकर कार्य करता है एवं उसके बल, बुद्धि, साहस में वृद्धि होती है।

श्री नारायण वैभव साधना

29 अगस्त - अजा एकादशी

श्री नारायण सकल जगत को चलाने वाले आदिदेव हैं। उनकी साधना करने से साधक को हर कार्य में पूर्ण सफलता मिलती है, क्योंकि समस्त कार्य मात्र श्री नारायण की शक्ति से ही गतिशील हैं। किसी भी मनोकामना को लेकर सम्पन्न की गई इस साधना के माध्यम से साधक के संकल्पित कार्य पूर्ण होते ही हैं। इस साधना को सम्पन्न करने से साधक के व्यक्तित्व में भी आकर्षण हो जाता है, जिसके कारण उसे अनेकों लाभ होते हैं। श्री नारायण यदि प्रसन्न हो जाएं, तो उनकी सहचरी भगवती लक्ष्मी तो स्वतः ही सिद्ध हो जाती है और इस प्रकार साधक के जीवन में दरिद्रता का ही समापन हो जाता है। वही इस साधना से मोक्ष मार्ग भी प्रशस्त होता है।

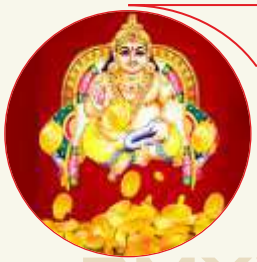

कुबेरमय कनकधारा साधना

14 सितम्बर - परिवर्तिनी एकादशी

यू तो शास्त्रों में अर्थ, ऐश्वर्य, सुख-प्राप्ति के अनेक प्रयोग लिखे गये हैं, परन्तु कुछ ऐसे प्रयोग हैं, जो सर्वकालिक श्रेष्ठ ही रहे हैं। उन्हीं प्रयोग में से एक प्रयोग है कनकधारा प्रयोग। इस प्रयोग को सम्पन्न करने से साधक को कई प्रकार के आर्थिक स्त्रोत प्राप्त होते हैं तथा उससे अर्थ का संचय भी होता है। यदि आपके पास धन आता तो है लेकिन साथ ही साथ वापस भी उसी गति से चला जाता है तथा आप उस अर्थ से ऐश्वर्य की प्राप्ति नही कर पा रहे हो और आपको अनेक ऐसे कार्यों पर व्यय करना पड़ रहा हो जो कि अनपेक्षित है, तो आप इस प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करें। कनकधारा प्रयोग - सम्पन्न साधक के घर तो स्वयं कुबेरराज ही विराजमान रहते हैं।

साधना एक साधक के जीवन का अभिन्न अंग है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव सद्गुरूदेव के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करते हैं। ये विशिष्ट साधनायें सम्पन्न करने के लिए कैलाश सिद्धाश्रम में सम्पर्क करें।

स्वतंत्रता दिवस

इस बार मनाएं यादगार

हर वर्ष पूरा देश 15 अगस्त को बड़े गर्व, जोश और उल्लास के साथ मनाता है। इस बार हम देश का 78 वां स्वतंत्रता दिवस मनाने वाले हैं। जैसे कि आप सभी को मालूम होगा कि भारत देश को कब ओर कैसे आजादी मिली और यदि आपको न भी पता हो तो इस बार आप घर के बड़ों व टीचर से इसके बारे में पूरी जानकारी जरूर लें। इस दिन स्कूल में भी तिरंगा झंडा फहराया जाता है, फिर स्कूल में SPEECH, DIFFERENT CULTURAL ACTIVITIES होती हैं। तो क्यों न इस बार आप घर पर भी कुछ रोचक ACTIVITIES करें। जिससे ये दिन आप और आपके FRIENDS और FAMILY के लिए MEMORABLE हो जाए।

आप घर पर भी सभी के साथ झण्डा फहराइये, इसके RULES, CODE आदि को जान लें।

FREEDOM FIGHTERS के बारे में KNOWLEDGE SHARE करें, घर पर DISCUSSION करें। देश की HISTORY को जानें, कि किस तरह पूरे जुनून के साथ हमारे देश की आजादी की जंग लड़ी गयी थी और कैसे देश को इन वीरों ने गौरवान्वित किया।

आप इस दिन अलग-अलग FREEDOM FIGHTERS की तरह DRESS UP होकर कोई PLAY भी तैयार कर सकते हैं। या FRIENDS के साथ मिलकर SPEECH दे सकते हैं।

देश भक्ति के गीत गा सकते हैं, MOVIES देख सकते हैं।

आप इस दिन पेरेंट्स, TEACHER या फिर फ्रेंडस के साथ परेड देखने भी जा सकते हैं।

घर पर ही अच्छी किताबें पढ़ सकते हैं, जिनमें भारत की आजादी की DETAIL में जानकारी हो।

तो इस बार स्वतंत्रता दिवस पर्व को कुछ अलग और मनोरंजक तरीके से मनाए और अपनी KNOWLEDGE को भी बढ़ाएं।

वराहमिहिर वचन

अगस्त माह के प्रत्येक दिवस को अनुकूल व सफलता युक्त बनाने के उपाय.....!

01. श्रावण मास सौभाग्यम पांच सोमवार से युक्त है। प्रत्येक सोमवार को शिव परिवार की चेतना प्राप्ति हेतु नूतन साधना सम्पन्न करने से महामृत्युंजयमय सुस्थितियों की प्राप्ति होती है। इस पत्रिका में पृष्ठ 2 पर देखें।

श्रावण कृष्ण पक्षीय प्रदोष पर्व शिवलिंग पर सात बिल्व पत्र अर्पित करें।

03. शिवत्व शक्ति दीक्षा महोत्सव 03-04-05-06 अगस्त कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर में सम्पन्न होगा।

04. रवि पुष्य योग युक्त हरियाली अमावस्या पर परिवार के सदस्य पूर्ण स्वस्थ रहें। इस हेतु शिव निरोगी बाहु धारण करें। Each ₹ 700

05. जीवन के रोग-शोक दोष विनाश हेतु चिंताहरण छिन्नमस्ता अभ्युदय पर्व पर दीक्षा धारण करना श्रेष्ठ रहता है। दीक्षा न्यौ. ₹ 1500

07. आरोग्यमय अखण्ड सुहाग सौभाग्य प्राप्ति हेतु स्वर्ण गौरी हरियाली तीज पर्व पर पार्वती-गौरी दीक्षा धारण करने से पति, पुत्र-पुत्री पूर्ण स्वस्थ व आरोग्यमय रहते हैं। दीक्षा न्यौ. ₹ 1500

09. नाग पंचमी पर शिवलिंग के साथ ताम्र सर्प का अभिषेक करें।

10. श्री जगन्नाथ महाकाल शिव साधना महोत्सव दमन-वापी में सम्पन्न होगा।

11. नाभिदर्शना शिवत्व गौरी शीतला शक्ति साधना महोत्सव कल्याण मुम्बई में सम्पन्न होगा।

12. श्रावण सोमवार पर सपरिवार अभिषेक कर भगवान शिव को खीर का प्रसाद अर्पित करें।

15. गौरवान्वित रूप से मेरा प्यारा हिन्दुस्तान का 78वां स्वतंत्रता दिवस सम्पन्न करें।

भौरमदेव शिव शक्ति साधना महोत्सव 15 अगस्त को कवर्धा (छ.ग.) सम्पन्न होगा।

16. पुत्रदा एकादशी पर्व पर शिव मन्दिर में संतान के साथ रूद्राभिषेक सम्पन्न करें।

17. शनि प्रदोष व श्रावण पूर्णिमा के मंगलमय अवसर पर गौरी शंकर महामाया महाकाल शक्ति प्राप्ति साधना महोत्सव 17-18 अगस्त को रायगढ़ (छ.ग.) में सम्पन्न होगा।

19. रक्षा बंधन महापर्व पर कुल वंश वृद्धि हेतु अपने परिजनों को रक्षा सूत्र बांधे। श्रावण मास के पंच प्रत्येक सोमवार को जो रूद्राभिषेक सम्पन्न किया है उसके पूर्ण चेतना प्राप्ति हेतु गुरूदेव जी से दीक्षा आत्मसात करें।

Each दीक्षा न्यौ. ₹ 1800

जीवन में अक्षुण्ण रूप से सावनमय सुस्थितियां बनी रहे इसी हेतु 19 अगस्त से 24 अगस्त तक गुरूदेव कैलाश श्रीमाली जी कैलाश नारायण धाम, दिल्ली में दीक्षा महोत्सव में प्रत्येक साधक हेतु रूद्राभिषेक सम्पन्न कर शिवमय सुस्थितियां प्रदान करेंगे।

21. कजली तृतीया पर्व पर पति व संतान की आयु वृद्धि हेतु चेतन्य तुलसी माला धारण करें। ₹ 1100

25. चौसठ कलापूर्ण योग-भोग कृष्णमय साधना दीक्षा महोत्सव गुढ़ागौड़जी (झुन्झुनु) राज. में सम्पन्न होगा।

26. योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के अवतरण पर्व जन्माष्टमी का मंगलमय आयोजन कैलाश नारायण धाम, दिल्ली में किया जायेगा।

28. सर्व तंत्र प्रेत पिशाच दोष निवृत्ति साधना महोत्सव धामपुर (बिजनौर) उ.प्र. में सम्पन्न होगा।

31. शनि प्रदोष पर्व पर सांध्य बेला में पांच तेल के दीपक घर की चौखट के पास प्रज्जवलित करें।

काल निर्णय

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4:24 से 6:00 बजे तक ही रहता है।

दिवस	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
अगस्त	18,25	19,26	20,27	21,28	22,29	16,23,30	17,24,31
सितम्बर	01,08,15	02,09	03,10,	04,11	05,12	06,13	07,14
श्रेष्ठ समय दिन	06:00 से 06:48 06:48 से 10:00	06:00 से 07:30 10:48 से 01:12 03:36 से 05:12	06:00 से 08:24 10:00 से 12:24 04:30 से 05:12	07:36 से 09:12 11:36 से 12:00 03:36 से 06:00	06:00 से 08:24 10:48 से 01:12 04:24 से 06:00	06:48 से 01:12 04:24 से 05:12	10:30 से 12:24 03:36 से 05:12
श्रेष्ठ समय रात	06:48 से 07:36 08:24 से 10:00 03:36 से 06:00	07:36 से 09:12 09:12 से 10:00 01:12 से 02:48	07:36 से 10:00 12:24 से 02:00 03:36 से 06:00	06:48 से 09:12 09:12 से 10:48 02:00 से 06:00	07:36 से 10:00 01:12 से 02:48 04:24 से 06:00	08:24 से 10:48 01:12 से 03:36 04:24 से 06:00	08:24 से 10:48 02:00 से 03:36 04:24 से 06:00

Kali Jayanti

26th Aug

KREEM KALI SADHANA

Om Khargang Chakra-Gadeshu-Chapa-Parighan Shulang Bhushundlng Shirah Shankhang Sanda-Dhatlng Karistri-NayanAng Sarbanga-Bhushabritam.
Nllashma-Dyutimasya Pada-Dashakang Sebe Maha Kalikang Yamastou-Chhaite Harou Kamalajye Hantung Madhung Kaitavam.

Her ten hands are holding scimitar, disk, mace, arrows and bow, lance, club, a skull and a conch shell. She is a Goddess with three eyes, She wears ornaments that covers Her body, and Her face is filled with the brilliance of blue diamonds. We offer our reverence to Goddess MahaKali, the one whom Brahma praised for protection from the demons Madhu and Kaitava, when Lord Vishnu was in sleep.

Long ago there was a **king** named **Suratha,** born of the **Chitra dynasty,** ruling over the whole world. He protected his people just like his own children. The king was attacked by **powerful enemies** & even in his own city, the king was **robbed** of his **treasury** & **army** by his own powerful & **evil ministers.** Deprived of his kingdom, the king left alone on **horse** into a dense **jungle.**

He saw there the **hermitage** that had many **wild animals** roaming peacefully along with the **disciples** of the **sage.** The sage

welcomed **Suratha** & offered him to spend his time in the hermitage. Suratha agreed to the offer & started to stay in the hermitage serving the great sage. One day his **thoughts** were **overpowered** with his attachment towards his **family** & he started thinking, **"I do not know whether the kingdom that was so well reigned by my ancestors is now well guarded by the evil ministers or not. Those who were my constant followers & received food, favors & riches from me, must now be penalised by the new king. Whether the treasure I gathered with great care is now being spent on useful activities or not."**

The king's thoughts remain deeply **engrossed** in these feelings. Soon, the king found a **man** walking towards the hermitage & asked him: **"Who are you? Why are you here? You look to be filled with grief & depression?"**

Hearing the king, the man replied, "I am a **merchant** named **Samadhi** & was born in a **wealthy family.** I have been **thrown out** of my **home** & all the **possessions** have been **snatched** away by my **sons** & **wife.** Wandering here, I am not able to think about anything else than about the know-how of my family members. **How are they now? Are my sons living a good life or they are suffering?"**

Listening to these words from the merchant, the king asked, **"Why is your mind still so much inclined towards those people who have deprived you of your own wealth & have made you suffer so much in life?"**

The merchant said, "This very **thought struck** me the moment you said those words. What can I do as I am not able to **control** my **mind.** I still bear a **deep affection** towards those who have **driven me out** of my home as a result of their **greed for wealth.** My **sons** have abandoned the **love** for their **father** & my **wife** has **broken** my **faith.** How it is that the **mind is inclined** for love even towards **worthless people?** What can I do get **rid** of the feelings of those **unloving people?**

The **merchant** & the **king** together approached the **sage** & after offering him their **reverence,** they sat down & shared the matter with him. The king said, **"Great soul,** I wish to ask you one thing & please **shower** your **wisdom** up on us. I am not able to **control my intellect,** my mind is **afflicted** with **sorrow.** Though I have lost the **kingdom,** I am still attached to all the people of my kingdom. And this merchant has been thrown out of his **own house** by **his children & wife**, yet he has a great affection towards them. Thus, both of us are exceedingly **unhappy** due to our attachment towards the people who have **cheated** on us. Even though we are aware of our **situation** why are we still inclined towards those people?"

The sage smiled & said, "Every living being in this world has identifies the objects by their senses. Some beings are blind during the day, & others are blind by night, some living beings are blessed to see both during day & night. **Human beings** are certainly **blessed** with **knowledge,** but they are not the only beings as even **birds, animals** & other **creatures** also possess the **senses.**

The knowledge that **human** beings possess are also present in **birds** & **animals,** and what they have, human beings also possess. Activities like **eating** & sleeping are common to both. Look at these birds, even though they possess **knowledge** & are themselves impacted by hunger but because of the delusion are **engaged** in dropping grains into the beaks of their young ones. Human beings are **attached** to their children because of greed for return help. Do you not see this?

Even so human beings are trapped into the maze of **attachment,** through the power of **Mahamaya,** who makes the existence of the world possible. This Mahamaya is the **Yoga nidra** of **Lord Vishnu,** the Lord of the world. It is by her presence that the entire world is in an **illusion.** Truly, She forcibly draws the attention of even the wisest of **human** beings & throws them into **illusion.** She creates this entire universe, both **moving** & **unmoving.** It is She who, when **favorable,** becomes a boon-giver to human beings for their final **liberation.** She is the **supreme knowledge**, the cause of final **liberation;** She is the cause of the bondage of **transmigration** & the greatest of all the Gods."

The king said, **"Revered sage, who is that Goddess whom you call Mahamaya? How did she come into being, & what is her sphere of action? What is her nature? What is her form? How did she originate? I wish to learn all this from you."**

The sage replied, "She is eternal & what all we observe is because of Her & She incarnates in many ways. When She manifests herself in order to accomplish the purposes of the Gods, she is said to be born in the world, though she is eternal. Once **Lord Vishnu** was sleeping & changed his position when two terrible demons, **Madhu** & **Kaitabha**, manifested from the dirt of His ears & decided to

kill **Lord Brahma**. Seeing these two fierce demons & **Lord Vishnu** asleep, Lord Brahma requested **Yoga nidra,** residing in Lord Vishnu's eyes.

Lord Brahma said, **"Dear Goddess, you are the nectar. This universe is borne by you & by you this world is created. You are the protector, & you always consume it at the end. You are the entire world. You are the creative force at the time of creation, You are the preserver at the time of nurturing, & You are the destructive power at the time of the dissolution. You are the supreme knowledge as well as the great ignorance, the great delusion, the great Devi & also the great Asuri.**

You are the prime cause of everything, bringing into force the three qualities. You are the dark night of periodic dissolution. You are the Goddess of good fortune, modesty, intelligence, nourishment, & contentment. You possess sword, spear, club, discus, conch, bow, arrows, slings & iron mace, you are frightening & at the same time you are pleasing, You are more pleasing than all the pleasing things & exceedingly beautiful. You are indeed the supreme Goddess, beyond the high and low.

Even he who creates, sustains & devours the world, is put to sleep by You. Who is capable enough to praise your virtues, who have made us - Vishnu, myself & Shiva - take our forms? Dear Goddess, bring an end to these two devils - Madhu & Kaitabha, with your superior powers. Let Vishnu be quickly awakened from sleep & slay these two great demons."

Listening to the outcry of Lord Brahma, the Goddess drew herself out from the eyes, mouth, nostrils, arms, heart & breast of Lord Vishnu & appeared before Brahma. When the Goddess came out of Lord Vishnu's body, He suddenly got awakened & rose up and saw the two devils eager to kill Lord Brahma. Lord Vishnu fought with these devils for five thousand years, however the war was inconclusive. Under the guidance of Goddess Mahamaya, Lord Vishnu complimented the two demons saying they are great warriors & could grant them any boon. Under the delusion of great Goddess, the two demons became arrogant and considered themselves greater than Him. Thus, in pride they instead told Lord Vishnu for any boon. With a smile on his face, Lord Vishnu thus said, "You must both be killed by me now."

The two demons then thought for a moment and told Lord Vishnu, **"Kill us at the spot where the earth is not flooded with water."** At that time the world had not taken shape fully, because Brahma had not commenced his job of creation. The world was covered fully with water. So, the asuras had assumed that killing them where there was no water would be impossible. The Lord took the huge form of **Hayagriva** & pulled earth out of water and killed the two demons. Thus, with the help of Goddess Mahamaya, Lord Vishnu brought an end to these two demons."

The sage then continued, **"This is all an illusion created by Goddess Mahamaya due**

to which you people still feel inclined towards the people who have deserted you & have wiped you out of your worldly possessions. It is thus utmost important to appease the Goddess to bring an end to all the miseries of your life."

The above story showcases how we human beings remain so connected with worldly pleasures & those whom we are attached to. All of us are under a great delusion as all those whom we consider as our own are actually nothing but an **illusion.** This illusion is so strong that a person alone can't get out of this maze. We need the powers of Goddess to help us get out of our **miseries, pains** & **sufferings** as She alone can help us break this shackle.

Of all the forms of the **Goddess,** Goddess Kali is the most compassionate because She provides **nirvana** or liberation to Her children. She is the counterpart of **Lord Shiva,** the destroyer. Incarnation day of Goddess Kali is a great day to appease Her and get Her blessings in life. **Goddess Kali** is the one who possesses control over ***Kal*** or time. Any person who appeases Goddess Kali is also able to make the time favorable for himself.

Provided below are few important points following which one can gain **success** in Kali Sadhana.

- This Sadhana should start from **dark lunar** phase or from **Amavasya** or from any **Saturday**.
- Sadhak should wear **black clothes** & sit on a **black mat.**
- Sadhana should be **performed** during night.
- Sadhak should maintain **celibacy** & eat one time in the day during Sadhana period.
- Sadhak should not get **frightened** & perform the Sadhana with **full devotion** & **fearlessness.**
- One must have safety provider **Kreem Kali yantra** for performing the Sadhana. This yantra safeguards the Sadhak & removes all the **obstacles** during the Sadhana.

Sadhana Procedure:

One needs ***Kreem Kali Yantra*** & ***Kreem Kali rosary*** for this Sadhana. The best day to start this Sadhana is from **Kali Jayanti,** otherwise it can also be started from the days mentioned above. Have a bath after 10 pm at **night** & get into **black clothes.** Sit on a black mat facing **South.** Cover a wooden seat with black cloth. On it place ***Kreem Kali Yantra*** & light a ghee lamp. Next take water in right palm & chant ***Kreem*** & drink it. Perform this ritual 2 more times. Next chant thus:

Om Asya Mantrasya Bheirav Rishirushnnikchhando, Dakshin Kaalikaa Devataa, Hreem Beejam, Kreem Keelakam, Purushaarth Chatushtaya Siddhyarthe Viniyogah.

Thereafter chant thus:

Om Kraam Angushtthaabhyaam Namah. Om Kreem Tarjaneebhyaam Swaahaa. Om Kroom Madhyamaabhyaam Vashat. Om Kraim Anaamikaabhyaam Hoom. Om Kroum Kanishtthikaabhyaam Voushat. Om Krah Kartal Kar Prishtthaabhyaam Phat.

Next chanting thus propitiate Mother **Goddess Kali** & offer flowers on the **yantra.**

Kaali Devi Ihaavah Ihaavah Ih Tishtth Ih Tishtth Ih Ih Sannidhehi.

Now meditate on the form of the Goddess.

Sarvaah Shyaamaa Asikaraa Mundmaalaa Vibhooshitaah. Kartari Vaamhasten Dhaaryantah Shuchismitaah. Digambaraa Hasanmukhyah Swa-Swa Vaahan Bhooshitaah.

Next chant ***5 rounds*** of the following mantra with ***Kreem Kali*** rosary.

Mantra

|| Om Kreem Kreem KreemKalyei Kreem Kreem Namah ||

मंत्र

॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रींकाल्यै क्रीं क्रीं नमः ॥

Next day drop the yantra & rosary in a river or pond.

Goddess Kali is the prime force among the **Ten Mahavidhyas**. It is **important** to understand Her efficacy & Sadhak should not try Her Sadhana just out of mere curiosity. One must perform the Sadhana with full **devotion** & sincerity to gain **success** & the blessings of **Mother Goddess.** It is also advisable to get initiated with ***KreemKali Diksha*** prior to starting the Sadhana. This ensures the Sadhak assimilates the divine energy generated during the sadhana & no harm is done to him.

KreemKali Diksha + Sadhana Articles
Rs 2800/-

Krishna Janamashtami 26th Aug

Lord Krishna Sadhanas

Lord Krishna is one of the most **worshipped Gods** of the **current world.** His temples & followers are across the entire world that directly show His wide acceptance, the devotion & **love** towards Him. **Lord Krishna** was a great **Guru, great philosopher, a great lover, great warrior, great diplomat** & what not. There are a lot of things to be learnt from Him & His preachings, **Bhagwat Gita**, is among one of the holiest books that people read & gain knowledge from it.

Presented below are a few small incidents from His life that show His greatness & **kindness** towards human beings.

1) Great guide & philosopher.

One day, **Karna** was occupied in grief & thus went to visit **Lord Krishna**. On visiting Him, he offered his reverence & asked, **"My mother left me the moment I was born. Is it my fault I was born an illegitimate child? I did not get the education from Dhronacharya because I was not considered as a Kshatriya. Guru Parshuram taught me but then gave me the curse to forget everything. I was disgraced in Draupadi's Swayamvar. Even my biological mother, Kunthi, finally told me**

the truth only to save her other son's. Please guide me know how I can get rid of my grievances in life."

Listening to those words, Lord Krishna replied, **"Karna, why are you complaining about the challenges you faced in your life. Even my life has been a struggle. I was born in a jail & death was waiting for me even before I was about to take birth. I was also separated from my biological parents the night I was born. You still grew up hearing the sounds of various weapon, on the contrary, I got only cow herd's shed, dung, & multiple death attempts even before I could learn to walk properly. People considered me inauspicious & the reason for all their problems. You are lucky to be married to the girl of your choice, I didn't get my love, rather I had to marry those who wanted me or those whom I rescued from the demons. I had to move my whole kingdom from the banks of Yamuna to save my people from Jarasandh. I was called a coward for running away. Remember, everybody has challenges in life to face. I agree life is not fair & easy for anyone. However, life's unfairness does not give us the leverage to walk on the wrong path."**

Listening to these words, Karna understood that he was unnecessarily cursing his fate as there are people in this world who was **suffering** more than him. He also understood that mere cursing one's fate won't help & one needs to forgive his past and people who did him wrong to get out of grievance. His heart felt much lighter thereafter.

2) Great Lover

Once **Radha** asked Krishna: **"Dear Krishna! Why do You love the flute more than me? What virtuous actions has it done so that it can remain in close contact with Your lips? Kindly explain to me ".**

Lord Krishna replied, **"Radha, yes, this flute is very dear to me as it possesses some wonderful virtues. It emptied itself before it reached me. It has made its inner self hollow, and I can play any kind of tune on it. If you also behave towards me in exactly the same manner as this flute, if you remove your ego & then I shall also love you in the same manner as I love this flute."**

Out here Lord Krishna mentioned how important it is to become void of everything is one wants to attain **greatness** in life & attain love & affection of the **Guru** or **the Lord**.

3) Benevolent Lord

Once **Sage Narad** was wandering on earth to check the wellbeing of **humans.** He saw a sage & his wife who were distressed & praying to **Lord Krishna.** Sage Narad went to that family & asked about their **sorrow.** The couple expressed sadly that they are **childless** & are thus praying to **Lord Krishna** to bless them with **a child.**

Sage Narad thus visited **Lord Krishna** & **explained** about this incident. The Lord looked at **Narad** & said the couple are destined to not have a child for the next **seven births**. Listening to these words, **Sage Narad** sadly left that place.

A few years later **Sage Narad** again visited the couple & was left shocked to see a child in the lap of the sage's wife. Out of curiosity, he asked the sage who are the parents of this child. The sage replied happily that the child belongs to them. **Lord Narad** couldn't believe his words as Lord Krishna himself said the couple won't have a child for the next seven births.

He **immediately** went to Lord Krishna & asked how this was possible?

The benevolent Lord said, **"Those who worship me with love and devotion, I remove all their sorrows and grant them wishes even if I have to take that from their eighth birth."**

In other words, those who are able to appease their Lord or Guru, nothing remains unattainable for them.

Presented below are the Sadhanas of **Lord Krishna** which if performed on **Janamashtmi** can bring a tremendous positive outcome in the life of the Sadhak. Janamashtmi is one of the most **energised** days just like **Diwali** & **Holi** to **perform various Sadhanas.** It is advised to take **full advantage** of this auspicious time & perform these Sadhanas to eradicate various **problems** of your life.

Still Childless?

Every **married couple** wishes for **a child** in life as a child brings a lot of **happiness** & **joy** to the **family**. Not only this, when the child **grows up**, the parents have **a hope** of someone taking care of them when they **grow old.** Even, our **holy texts** have given special emphasis on having an offspring as it is the offspring who continues the linage as well as the one responsible for performing all the **Tarpan activities** for the **ancestors.**

If you have been trying to get **blessed** with a child & have not been **successful**, this **Sadhana** will act as a boon for your **family.** Both **husband** & **wife** should sit together & perform this **procedure.**

Sadhana Procedure:

One needs ***Santan Gopal Yantra*** & ***Gopal rosary*** for this Sadhana**.** Have a bath & wear **yellow clothes**. Sit on a yellow mat facing north. Take **a wooden plank** & cover it with a **yellow cloth.** Place a picture of **Gurudev** & worship Him with **vermillion, rice grains, flower** etc. Light **an incense stick** & an oil lamp. Chant one round of **Guru Mantra** & seek His blessings for the **success** in Sadhana.

Now take **a plate** & place it in front of **Gurudev's picture.** Place ***Santan Gopal Yantra*** & worship it by offering **water, vermillion, rice grains, flowers** etc. & then offer a mixture of **ghee, honey, sugar** & **sesame seeds.** Both husband & wife should then join their **palm** & pray to **Lord Krishna** to fulfill their desire. Next take some water in the right hand & pledge thus –

Asya Shri Santan Gopal Mantrasya Narad Rishi Nushtupshchhandah Sutapradah Krishno Devata Mamaabheeshta Siddaye Jape Viniyogah.

Let the **water flow** onto the ground. Next meditate on the **childhood** form of **Lord Krishna** & recite ***5 rounds*** of the below mantra with ***Gopal rosary.***

Mantra

|| Devaki Sut Govind Vashudev Jagatpate ||

|| Dehi Me Tanyam Krishna Twamaham Sharanam Gatah ||

मंत्र

।। देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।।

।। देहि मे तनयं कृष्ण त्वमहं शरणं गतः ।।

Perform **Lord Shri Krishna Aarti** after the **procedure.** Next day after taking the bath, place the yantra in your **bedroom** & you will soon be blessed with a child.

Sadhana Articles ₹770/-

Get Compatible Partner

It is **a fact** that a we need **a partner** to live this life to **fulfillment**. Had it not been **true,** our **Gods** & **Goddess** won't have **married.** The **Trinity couples** are said to be complete only when they are **united.** Thus, it is extremely important to find **a partner** who is also your soul mate. On the one hand where **married life** is full of pleasures, **joy** & **peace**, it is also filled with **challenges, sorrows** & **troubles**. Thus, if we get **married** to a compatible partner, one who **understands** us, one who loves us & one who **cherishes** our **successes** & **supports** us in our **failures,** the married life is nothing less than a **blessing.**

This Sadhana is very **effective** to find a compatible partner in life. This Sadhana is **equally effective** in attracting any man or woman towards oneself. This Sadhana can be performed by **a woman** to attract a particular man & to marry him. The Sadhana is equally favourable for a man to attract a particular woman to marry her. This Sadhana must be tried early in the morning.

Sadhana Procedure:

One needs ***Krishna Aakarshan Yantra*** & ***Krishna Mohini rosary*** for the Sadhana. Take a bath early in the morning & wear some **fragrance.** Get into **yellow clothes** & sit on a yellow mat facing **west.** Take **a wooden plank** & cover it with **a red cloth.** Now place the picture of revered **Gurudev** & pray to Him for

success in your **Sadhana**. Now worship Him with **lamp, incense, flowers, rice grains, vermillion** etc. & pledge to **perform** the Sadhana. Chant one round of **Guru mantra** with the **rosary**.

Next place the yantra before **Gurudev's picture** & **worship** it with **rice grains, saffron, flowers** etc. Place a picture of the person below the **yantra** with whom you wish to get **married.** If you don't have **a picture,** you can just write the name on **a paper** & put the paper below the **yantra**. If you are still finding a perfect match, just pray the Lord to find **a perfect match** for you.

Now chant one round of the below mantra with the rosary.

Mantra

|| Am Amukomakarshaya Aakarshaya Namah ||

॥ अं अमुकोमकर्षय आकर्षय नमः ॥

This is **a highly energised yantra** & quickly provides the **results**. Wear the **Krishna Aakarshan yantra** around your neck & you will soon see how the other person has started to show his or her **interest** in you. Soon, you will get the **good news** related to your **marriage** to your dream partner. One must avoid using the **rosary** in any other **Sadhana** & the Sadhak must continue to wear the **yantra forever.**

Sadhana Articles ₹790/-

Attraction and Success

The current world **values** our **physical** attraction more than our **virtues.** It is easy to find **people** getting more inclined towards a person who has **a magnetic persona.** For sure, such a person is bound to get more **success** in **life**, be **favourite** among the group & **loved** by all. And there is nothing bad in it as everyone **wants** to be **successful, famous** & the center of **attraction.**

Kleem sadhana is the essence of all the **Sadhanas** related to **beauty** & **personality development.** If performed on the **night** of **Janamashtmi,** it can bring a very favourable change in the life of the **Sadhak** & make the **personality** very **attractive.** Each pore of **Lord Krishna** was **energised** with the **Kleem mantra** & due to this **reason** only, He never had to put any **conscious efforts** to attract any person. Not only His friends, **Pandavas,** but even **enemies, Kauravas,** remained attracted towards Him & couldn't ignore Him.

Sadhana Procedure:

One needs ***Kleem Yantra*** & ***Kaamkala rosary*** for the Sadhana. Take a bath after 10 pm on the night of **Janamashtmi. Wear yellow clothes** & sit on **a yellow** mat facing west. Take **a wooden plank** & cover it with a yellow cloth. **Decorate** the room with flower petals. Now place the **picture of Gurudev** & pray to Him for **success** in your Sadhana. Now worship Him with **lamp, incense, flower** etc. and pledge to perform the Sadhana. Chant one round of **Guru mantra** with the **Kaamkala rosary.**

Now take ***Bhoj patra (a type of paper)*** & make the below ***Kaam Gayatri yantra*** with saffron ink.

Next place the **yantra** at the center of this yantra. Worship **Kaam Gayatri yantra, Kleem yantra** & the **rosary** with **flowers, saffron,**

garland, unbroken rice etc. and chant one round of the below mantra with the rosary.

Mantra

|| Kleem Krishnaana Govindaaya GopiJana Vallabhaaya Swaha ||

॥ क्लीं कृष्णाण गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा ॥

Sit at the **worship place** for some time & **imagine** that your entire body is getting **energised** as an effect of the **Sadhana.** Try to sleep at your **worship place** that night if possible. Drop the **yantra** & the rosary in **a river** or pond the next day. Put the **Kaam Gayatri yantra** into an amulet & tie it around your right hand. Soon you will be left **astonished** to see how everyone is getting attracted towards you & how your entire personality has become more attractive.

Sadhana Articles ₹740/-

Ganesh Chaturathi

7th Sept

Ganpati Sadhana

Vighna Haran Mangal Karan, Shri Ganpati Maharaj, Pratham Nimantran Aapko, Puran Kariyo Kaaj

Lord Shri Ganapati, you are the remover of obstacles and provider of all the auspiciousness in life. We are inviting you first, please help us in accomplishing our task.

Lord Ganesha is one of the most **popular Gods** worshiped in **India** & removes all the **obstacles** from the life of his **devotees.** He is the **first worshiped God** & is thus also the owner of the first **Kundalini Chakra, Muladhaar Chakra.** He is a quickly appeasing **God** & doesn't need a lot of rituals or long **procedures** to get appeased. He is the one who is always **eager** to fulfill the **wishes** of his **devotees.**

He is the God of **knowledge** & **wisdom** & is thus **worshiped** along with **Goddess Saraswati.** He is the one who can also provide **wealth** & **prosperity** & is thus worshiped along with **Goddess Lakshmi.** He is the **remover** of **enemies, obstacles** & **evil forces** & is thus **worshiped** along with **Goddess Kali.** In other words, **Lord Ganesha** possesses the powers of all the **Gods** & **Goddesses** & is thus **worshiped** prior to worshiping other **Gods** & **Goddesses.**

He **lives** the life of a perfect **householder**. He is the benevolent son of Lord **Shiva** & **Mother Parvati.** He has wives named **Riddhi** & **Siddhi** & has sons **Shubh** and **Labh.** As he himself is a householder, he understands the **problems** of **a household** & ways to remove them too. One should worship **Lord Ganesha** everyday to get his **blessings** in life.

We all wish to fulfill several **desires** in our life. We also want an untroubled life so that we can enjoy it to the fullest. We also wish to have an **abundance** of **wealth** & become **powerful** in life. We also wish to win over any enemy as well as to gain the power to **hypnotise** everyone coming into our contact. Presented below are three **significant Sadhanas** of Lord Ganesha by which a person can attain the above three traits of life.

No More Troubles

The Sadhana of Lord **Ganpati** in ***Uchchhishta Ganpati*** form is performed to win over the **situations** like **quarrels, court cases, enmity,** any sort of fear as well as to win in betting. One needs picture of ***Uchchhishta Ganpati, Uchchhishta Ganpati Yantra, Uchchhishta Ganpati Rosary*** and ***Eight Maatrikaa*** for this Sadhana. This Sadhana shall be performed early in the morning between ***5 am to 8 am***.

Take a bath & get into fresh yellow cloth & sit on **a yellow** mat facing North. Take a **wooden plank** & cover it with **a fresh yellow cloth.** Place a picture of revered **SadGurudev** & worship Him with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Light a ghee lamp and an incense stick. Then chant one round of **Guru Mantra** & pray to **Gurudev** for **success** in Sadhana.

Next place the picture of **Lord Ganpati** next to **Gurudev** & put the yantra in front. Meditate on the form of Lord Ganpati with, ***"four hands, blood colored, having three eyes, sitting on a lotus flower, having a Paasha and teeth in right hands and who is in a state of happiness".*** Now place the eight Maatrikas named – ***Brahmi, Maaheshawari, Kaumari, Vaishnavi, Vaaraahi, Indraani, Chamundaa and Lakshmi***, in the eight directions & worship them. Now worship all the articles with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Offer ***Laddus*** as pious food to the Lord.

Next chant 5 rounds of the below mantra with ***Uchchhishta Ganpati rosary.***

Mantra

|| Hreem Gam HastiPishaachilikhe Swaha ||

|| ह्रीं गं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा ||

One must make **108 holy** offerings in the fire after mantra chanting. To **hypnotise** someone, offer ghee, honey, sugar and kheel (puffed rice). To win over your enemies, offer flowers with mustard oil in the fire. Drop all the Sadhana articles in a river or pond the next day.

Sadhana Articles ₹760/-

Wealth & Prosperity

The ***Shakti Vinayak*** form of **Lord Ganpati** is very **favorable** to gain **Lakshmi, money, beautiful wife, power** & **success** in one's field. One needs ***Shakti Vinayak Shankh, Shakti Vinayak Yantra*** & ***Shakti Vinayak rosary for the Sadhana.***

Take a bath early in the morning & get into **fresh yellow** cloth. Go outside your house & worship Lord Sun by offering Him some water mixed with some rice grains & vermillion. Now enter your worship room & sit on a yellow mat facing North.. Next take a wooden plank and cover it with a fresh yellow cloth. Place a picture of revered **SadGurudev** & **worship** Him with vermillion, rice grains, flowers etc. Light a ghee lamp and an incense stick. Then chant one round of **Guru Mantra** with **Shakti Vinayaka rosary** & pray to Gurudev for **success** in **sadhana.**

Next place ***Shakti Vinayak Shankh*** & ***Shakti Vinayak Yantra*** in front of Gurudev's picture and meditate on the form of Lord Ganpati speaking out, ***"Wearing Ankush and AkshayaShutra in left hands, wearing teeth and Paasha in right hands, holding Modak with His trunk, sitting along with His wives and looking beautiful in golden ornaments and having a glow of rising sun on the face, I bow down and pray to you Lord Ganpati."***

Next worship the **Shankha** & **yantra** with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Offer Modak to Lord **Ganpati.** For best results, it is advised to chant the mantra one lakh and twenty five thousand times. However, on this pious day, a Sadhak can obtain favourable results by chanting mere ***5 rounds*** of the below mantra.

Mantra

|| Om Hreem Greem Hreem ||

|| ऊँ ह्रीं ग्रीं ह्रीं ||

If you wish to chant complete **one lakh twenty five thousand** times of the mantra, then it is mandatory to complete the mantra chanting within ***11 days or 21 days***. Then make holy sacrifice with **ghee, grains,** followed by banana and coconut. Doing this ensures abundance of food, wealth and prosperity and hypnotic power in life. Drop all the Sadhana articles in a river or pond the next day. ***Sadhana Articles ₹770/-***

Overpower Your Enemies

The person who possesses the **power of attraction, the power to neutralise one's enemies,** is the one who can become **successful** in **life.** Sadhana of Lord Ganpati in His ***Haridra Ganpati*** form is the most **significant** procedure among all other procedures of **Lord Ganesha.** One needs ***HaridraGanpati*** & ***Peetha rosary*** for this **procedure.**

Take a bath early in the **morning** & get into **fresh yellow** cloth & sit on **a yellow** mat facing North. Take **a wooden plank** & cover it with **a fresh yellow** cloth. Place a picture of revered **SadGurudev** & worship Him with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Light a ghee lamp and an incense stick. Then chant one round of **Guru Mantra** with Peetha rosary and pray to Gurudev for **success in Sadhana.**

Next place ***HaridraGanpati*** next to Gurudev's picture and meditate on the form of Lord Ganpati speaking out, ***"I bow down to Lord Ganesha who is wearing Ankush and AkshayaShutra in left hands, wearing teeth and Paasha in right hands, sitting on a golden thrown, having a turmeric colored radiance, three eyed and wearing yellow colored clothes."***

Next worship **Haridra Ganpati** with vermillion, rice grains, flowers etc. Offer **Modak** to Lord Ganpati. **For best results,** it is advised to chant the mantra **one lakh** & **twenty-five thousand** times. However, on this pious day, a Sadhak can obtain favourable results by chanting ***5 rounds*** of the below mantra.

Mantra

|| Om Hum Gam Glaum HaridraGanapataye Varvarad SarvaJanHridayam Stambhaya Swaha ||

|| ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वरवरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्वाहा ||

There is no time limit to complete this mantra chanting if you wish to **chant complete one lakh twenty-five thousand** times of the mantra, however, if a person pledges to complete the mantra chanting, then one must stick with the pledge. Doing this generates a **strong attraction power** around the accomplished **Sadhak.** Drop all the Sadhana articles in a river or pond a day after completing the Sadhana.

Sadhana Articles ₹790/-

कैलाश सिद्धाश्रम साधनात्मक श्रृंखला.!

सर्व शत्रुहन्ता कालकर्षिणी साधना दीक्षा महोत्सव, जोधपुर 23-24-25 जुलाई

कैलाश सिद्धाश्रम: 1-सी, पंचवटी कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर (राज.)

9950809666, 7568939648, 8769442398

समलेश्वरी शिव गौरी सहस्त्र लक्ष्मी साधना महो.

BALANGIR (ODISHA) 27-28 जुलाई

Shivir Venue: Mina Tent House, Palace Line, Near Durga Mandap, BALANGIR (ODISHA)

Contact: Naresh Mishra 9938428294, Arun Mishra 8895412362, Ranaraj Singhdeo 9437037605, Balaram Pradhan 7325944208, Pitabasa Amat 9328979621, Ravi Shankar Mishra 9777278314, Ravindra Meher 9437330115, Seshadev Meher 8249797279, Kusha Swain 7008995986, Sanat Hota 8658562360, Jagannath Kanadual 9437209729, Suniti Singhdeo 9337339390, Hasmukh Bhinde 9437194652, Silu Behera 7978705663, Prashanta Biswal 9437145945, Pradeep Nanda 9776611455, Dilip Naik 9938629355, Ramakanta Kuanr 9937698440, Tridev Sahu 9777225125, Sasmita Nayak 9439948033, Basudev Bhoi 9437708021, Mohan Bhoi 9437463526, Barun Thanapati 7978945331, Madhu Bhoi 7656094434, Pramila Nag 9556024796, Suramani Bastia 9438912772, Sugyan Dash 9040093031, Bhimsen Nanda 9438285921, Muna Satapthy 7008732100, Sushil Tandi 7008102850, Gopal Rana 7681882456, Sarat Nanda 9437486354, Rabindra Nag 9438042313, Bunu Bhoi 9040550776, Gurucharan Kanhar 9178307005, Dilip Bhinde 9124702701, Kamdev Barik 9178294019, Braja Sahu 8249654546, Arta Rana 9437513743, Gajindra Sahu 7008594412, Bijay Pani 9178534850, Sibram Sahu 7978667922, Santwana Pradhan 8658114178, Nandikishor Mishra 9337467355, Niharika 9438000676, Rajesh Mishra 9337266937, Sapeswar Sahu 6372547459

ज्वालामुखी ब्रजेश्वरी धनदा साधना महोत्सव

काँगड़ा (हि.प्र.) 4 अगस्त

शिविर स्थल: चामुण्डा होटल, जशुर तलवारा रोड, रैहन तह. फतेहपुर, (काँगड़ा) हि.प्र.

सम्पर्क: पीताम्बर दत्त गौतम 7807039405, चेतन चम्वियाल 8988000096, नरेश चंद्र शर्मा 9816152967, आर.एस. मन्हास 9418161585, राजेश कपुर 9418246999, राजेन्द्र मास्टर, प्रवेश कुमार 8219403961, रोमी 9459058590, सुरेश धीमान 9882177430, राजीव 8360238015, अमित 8054531730, पुष्कर महाजन 8054920639, बबली देवी 9877614974, कुलदीप शर्मा 8427948473, ललित मोहन मन्हास 9417668721, प्रवीन अरोड़ा 9417421288, सकेन्द्र शर्मा 9882922891, विजय शेखड़ी 9418865999, उपेन्द्र चम्वियाल 9418714476, राकेश शास्त्री 9857668345, दिनेश निखिल 9418294383, इन्दू गुलेरिया 9817356757, मनीशा शर्मा 9899947470, माड़े राम 9816454170, नरेश शास्त्री 9805915303, मोहन लाल शर्मा 8894206495, निशा शर्मा 9805364225, दलजीत मन्हास 9816843777, प्रवीन कुमार 7483031165, दीपशिखा भारती 9816363404, जुगनेश 9418113725, राजकुमारी 9805936774, कुलदीप सिंह हीरा 8994347001, डॉ. बलदेव 8894061527, राजेश 8628076371, रामस्वरूप शर्मा 9418590516, अजय महाजन 8847579638, श्रेष्ठ भूषण 7018734188, रमन भारती 9805360414, रमा शर्मा 8219491743, रणजीत सिंह 9816323329, सुनीता 8219617336, विक्रम 8383046170, विजय कुमार 9858275095, अशोक मैहरा 9736296077, जुल्फी राम 9882623891, संध्या देवी 9805668100, महावीर तारागड़ 9855813951, सत्या भूषण 9419211711, सतपाल शर्मा 9419150472, रघुवीर सिंह मन्हास 9815986613, रोहित शर्मा 9815944285, अमित लगवाल 9818894301, प्रशोतम सिंह 8054685200, चमन लाल कौंडल 9418040507

रवि पुष्य योगमय हरियाली अमावस्या युक्त शिवत्त्व शक्ति दीक्षा महोत्सव, जोधपुर

03-04-05-06 अगस्त

कैलाश सिद्धाश्रम: 1-सी, पंचवटी कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर (राज.)

9950809666, 7568939648, 8769442398

सोमनाथ कल्कि महाकाल शिव साधना महो. दमन (वापी) गुजरात 10 अगस्त

शिविर स्थल: नंदहरी पार्टी प्लॉट, ICICI Bank के सामने, दिलीप नगर, कथीरिया नानी दमन

सम्पर्क: धीरू भाई 9998627009, जगदीश दमानिया 9898057455, नीता बेन 9824684207, जयेश भंडारी 9428021761, कर्षण भाई 9727721081, हेमंत तांडेल 7046333918, चेतन वरकुंड 9998488560, जयेश बलसारा 9898477861, भरत राठौर 9825609875, अनिल भाई 9979730540, धीरूभाई 9726017671, राजेश

9909115383, राजेन्द्र पटेल 9925116459, दमू पटेल 9909876852, दिलीप भाई 99242410217, बाबूलाल 9574474311, कल्पेश भाई 9725500022, योगेश बारीया 9825668219, रीतेश भाई 9925479521, संजय शर्मा 9824131909, शशी देसाई 9712181888, रामा भाई 9712460372, जया बेन 9974863338, पी.जे. पटेल 9824733420, चंद्रप्रभा बेन 9824734230

नाभिदर्शना शिवत्व गौरी शीतला शक्ति साधना महो. कल्याण (मुम्बई) 11 अगस्त

शिविर स्थल: Morya Grand, 1st Floor Jasraj Commercial Complex, Opp. Sagar Hotel, Valipeer Road, KALYAN (W), Mumbai

सम्पर्क: काजल जग्यासी 8484819761, दिनेश 9323139860, अनिल कुंभारे 9819927898, विपुल 9325952449, सुधीर सेठिया 9920116856, स्नेहलता 8779557391, राजेन्द्र प्रजापति 9422785744, तारानाथ 8805509147, डॉ. गवली 9028812305, डॉ. नामदेव, डॉ. हेमंत 9290766600, पंकज सिंह 9930451021, जगदीश पारीख 9096759861, रमेश यादव 9987560823, अंशु जग्यासी 7972663050, डॉ. रवींद्र 9833514917, नितिशा निगम 7666358731, अनिता सिंह 7020160116, गोकुल खटवानी 9323498932, सतनाम सिंह 8779150562, राजकुमार सिंह 8976452658, प्रवीण पराते 9004322419, मयुर ढोलकिया 9106041568, दिनेश आर 9699422466, स्वाती पांडे 9527562231, अनुपमा सिंह 9004280252, विष्णु कांबले 9322106697, विजेश बेनवाल 9764661638, जय गिरधानी 9323304062

भोरमदेव शिव शक्ति साधना महोत्सव कवर्धा (छ.ग) 15 अगस्त

शिविर स्थल: यूथ क्लब भवन, कवर्धा, कबीरधाम (छ.ग)

संयोजक: धीरेंद्र सिंह परमार 8770269956, संतोष साहू 9977293347, कोमल जायसवाल 6267210958, दानेश्वर साहू 9303921611, कुंजबिहारी साहू, अशवनी साहू, जलेश साहू 9644266489, चंदू साहू, गन्नू, जवाहर, मेघा, धनराज, बजरंग, दिलीप, बलराम, श्रवण कश्यप, टेकराम साहू 9522606022, एवन कश्यप 9340425469, कुलेश्वर साहू 913154771, राम साहू 8770082262, टोपू, संतोष जांघेल, श्रीकांत, राकेश तिवारी, अग्नू, रामशरण, तीरथ साहू, भागीरथी निषाद, दाऊराम चंद्र, मोहन नरेंद्र सिंह, रिंकू चंद्राकर, गजानंद साहू, मोती बिरजे 8770267171, बद्री सोनी, राजकुमारी कुंभकार, सुरेश

गौरी शंकर सुहाग महाकाल शतायु जीवन धनदा साधना महोत्सव 17-18 अगस्त

शिविर स्थल: बंशीवट, हनुमान मन्दिर के पास, मेट्रो चिकित्सालय मार्ग, रायगढ़ (छ.ग)

संयोजक: गोरेलाल साहू 9993685930, शशिधर साव 8319724677, भरत उपाध्याय 7895727019, रोहित साव 9753178475, अरूण मिश्रा 9165121524, बिज्जू साहू 7879608086, बूंदराम पटेल 9424183423, चन्द्रशेखर 7746960228, सुनील तिवारी 9993319168, नरेश मिश्रा 9938428294, सुनील पांडे 8815114020, संजू साहू 8962011426, दीपक यादव 8878255218, दिनेश ठेठवार 942418410, विनोद विश्वकर्मा 9827480626, मेलूराम बरेठ 9827942440, रोहित सारथी 9926136791, चंद्रहास पांडे 9755386280, संतराम साहू 9131663577, गायत्री कुर्रे 7898815903, डॉ. छवि पटेल 8770803828, वृंदावन राठिया 8700157996, टीकाराम मालाकार 9179202052, सुबोध कुशवाहा 9301518642, मेघनाथ चौहान, बैसाखू किसान 8827139170, योगेश्वर देवांगन 9589997777, तेजवन पटेल 8319800594, विष्णु जांगड़े 6264554646, रोहित पटेल 7224913077, देवनंदन रठिया 9713898288, गंगा यादव 8319106791, अभिमन्यु निषाद 6263432245, रीना रूपलाल डड़सेना 8435875960, भीमराम कश्यप 9907438979, हरि सिंह 7389875707, जयनारायण पटेल 9131848564, एम पी पटेल 9827934789, सौजन्य तामस्कर 9981510805, राज नायक 7869537448, केशव दुबे 7869111919, यशोदा राज 8717957776, देविका यादव 7869004360, नरेश पटेल 9179990662, भरत यादव 9109174131, प्रेमप्रकाश कश्यप 7828967876, रामलाल चौहान 9685082482, ईश्वर साहू 8878712514, गोविंद चौहान 6267450768, बी सी सिदार 6261746183, लखन यादव 7024038013, चक्रवर्ती 9617626685, पुरूषोत्तम साव 9777733301, रेवतीकांत साहू 6266834805, युधिष्ठर मालाकार 93012883646, मजुमदार 9098238261

महाकाल महामृत्यंजय शिव-गौरी लक्ष्मी साधना महोत्सव

19-20-21-22-23-24 अगस्त दिल्ली

गुरूदेव जी से मिलने का समय उक्त दिवसों में प्रात: 11:00 AM से सायं 06:00 PM तक

कैलाश नारायण धाम E-1077, सरस्वती विहार पीतमपुरा, नई दिल्ली-34

9013859760, 8750757042

चौसठ कलापूर्ण कृष्णमय योग-भोग धनदा लक्ष्मी साधना महोत्सव

शिविर स्थल: अभिनन्दन मैरिज गार्डन, चिकित्सालय मार्ग, गुढ़ागौड़जी, (झुन्झुनूं) राज. 25 अगस्त

संयोजक: गुमान सिंह 9928267353, बजरंग गावड़िया 9929677699, रामचन्द्र मीणा 8058094901, रणधीर महला 9571984053, चन्द्रसिंह ओला 9001482203, दिनेश बागोरिया 7665365984, मगन सिंह धायल 8764489346,

ईश्वर सिंह राठौड़ 9950104929, सुजान सिंह शेखावत 9928882395, मनिष कुमार 8441070829, सत्यवीर सिंह 9001738800, बनवारी लाल 9398880765, चौथमल जागिड़ 7597359164, हजारीलाल 9828247321, विकास सिहाग 9928874627, सुनिल महला 9983545864, सीताराम मीणा 7976322719, सुभाष जाँगिड़ 6350362720, बनवारी 9672173921, प्रवीण स्वामी 9929226050, कृष्ण कुमार शर्मा 9828206898, सावित्री देवी 8239799077, महेश कुमार 7877529032, रामअवतार स्वामी 6350318936, कान्ता देवी 6350318936, अंजू देवी 8742899374, मुकेश सिंह 9958544867, जयकरण महला, ओमप्रकाश महला, सौरभ मीना, आनन्द महला, कमला देवी, निशा देवी, कुसुम चौहान, इन्दिरा देवी, नरेन्द्र, लक्ष्मण गुर्जर, कुरड़ा राम गुर्जर, मनफूल सिंह ओला, दिलीप मेचू, प्रकाश जाँगिड़, सज्जन सेन, कैलाश सेन, कालू, सुरेश बजावा, दिशान्ता, करण सिंह शेखावत, मुकेश सिंह शेखावत, शिवताज बराला, ख्यालीराम 9001468471, डॉ. दीपक खेदड़ 9468567321, डॉ. अनिल मीणा 9079087687, गौतम धायल 8872299666, बलोहर महत्या 6315115341, सुमेर सिंह 9694108110, विजेन्द्र गढ़वाल 7597356611

सर्व तंत्र प्रेत पिशाच दोष निवृत्ति गोकुला अष्टमी नन्दोत्सव साधना महोत्सव

Shivir Venue: Virat Farm House, Nehtaur Road, Flyover Tiraha, DHAMPUR (BIJNOR) U.P. **28 अगस्त**

संयोजक: तेजवीर सिंह चौहान 8923389425, निपेन्द्र चौहान 8920866872, शीतल चौहान 8630020612, कमलजीत कौशिक 9520758613, गम्भीर सिंह चौहान 7017155798, राजीव शर्मा 9758990252, राजपाल सिंह 9457676219, प्रदीप सैनी 9568458772, ललित प्रजापति 9149040582, विशाल शर्मा 7017906936, दीपांशू चौहान 7300822722, प्रियांशु चौहान 8433021312, सोमपाल सिंह 8057923844, विष्णु कान्त 7055288646, पवन फौरमैन 9911852657, सुरेन्द्र सिंह 9897889797, राजवीर सिंह चौहान 9758692280, नीरज शर्मा 9917061334, मीनाक्षी चौहान 7011336791, बीना रस्तोगी 9045892438, अनिल अग्रवाल 9456677251, सुरेश रस्तोगी 9412465454, आशाराम सैनी 9286015188, अनुपम चौहान 9997944895, डिम्पल पांचाल 9719156153, सुमित अग्रवाल 9412680345, आदर्श राणा 9997208951, वैभव सोती 9910985994

सोमवती अमावस्या हस्त सिद्धि सौभाग्य हरतालिका स्वर्ण गौरी दीक्षा महो, जोधपुर

02-03-04-05-06 सितम्बर

कैलाश सिद्धाश्रम: 1-सी, पंचवटी कॉलोनी, रातानाड़ा, **जोधपुर** (राज.)

9950809666, 7568939648, 8769442398

सप्त ऋषि शक्ति चेतना अटूट कुबेर लक्ष्मी साधना महो.

बिहार शरीफ (बिहार) **08 सितम्बर**

शिविर स्थल: अपना मैरेज हॉल, बड़ी पहाड़ी, विद्युत गुड & ग्रेट अकादमी के पास, सोहसराय, बिहार शरीफ

ऋषि पंचमी महापर्व पर वशिष्ट, विश्वामित्र, कण्व, भारद्वाज, अत्रि, वामदेव, शौनक सप्त ऋषि चेतनामय साधना, पूजा, दीक्षा भाव से सांसारिक जीवन संत-ऋषि सर्व सुखमय बन सकेगा।

सम्पर्क: चन्द्रप्रभा 6207007434, रमाशंकर प्रसाद 6207027843, अमिता 7258827948, स्नेहलता 7050509903, पल्लवी 9279515901, मनीषा 8789479830, रविकान्त सिन्हा 7004378393, गणेश कुमार 9436095177, राजन प्रियंका उपाध्याय 8709318992, भरत उपाध्याय 7895727019, रौनक जायसवाल 8604332000, अरविन्द 9835592154, मुकेश 7992423975, पिन्टू 9939395969, उषा 9199235833, किरण 9939044094, निखिल सागर 7349866168, अनुज कुमार 6205051275, शिशुपाल 7004482210, दुलारी देवी 8102657116, मालती 6207044456, ओम प्रकाश 9955546706, संतोष 7260926771, अंजनी 9507574008, सुमन शिखा 9341226595, विकास 7903779449, अनुप्रिया 7761868024, राशिकला 9798663914, संजू कुमारी 7250964089, इन्दु कुमारी 9835538406, रविन्द्र कुमार 9798463586, रितु कुमारी 6204547054, लुसी कुमारी 9508090618, शोभा रानी 8294306149, गुड़ीया देवी 6206319451, सोनी देवी 9693445964, सोनी कुमारी 9693512552, तारकेश्वर नाथ 9304289903, मनोज मिश्रा 6206964262, जितेन्द्रनाथ 9308826556, धीरज कुमार 7903516430, सियाराम 7903161015, मनोज कुमार 8210614659, अभिषेक दूबे 9508332925, डॉ. विभा रानी 9931729523, सरोज कुमार 9415454139, रामनाथ महासेठ 8083392706, श्याम पासवान 9304317550, गगन देव 9472807970, उपनन्द

वामन अवतार स्वरूप भगवान विष्णुमय धन लक्ष्मी साधना महोत्सव

13-14-15-16 सितम्बर नई दिल्ली

गुरूदेव जी से मिलने का समय उक्त दिवसों में प्रात: 11:00 AM से सायं 06:00 PM तक

कैलाश नारायण धाम E-1077, सरस्वती विहार पीतमपुरा, नई दिल्ली-34

9013859760, 8750757042

श्री कृष्ण जन्माष्टमी 26 अगस्त

श्रीकृष्ण तत्व जागरण सुदर्शन सिद्धि राजयोग दीक्षा

श्रीकृष्ण साक्षात् ब्रह्म हैं और वे परब्रह्म स्वरूप भगवान कृष्ण ने कभी भी अपने जीवन में कर्म का मार्ग नहीं छोड़ा उनके जीवन का प्रत्येक कर्म उदाहरण है, हर घटना प्रेरणादायक है, इसीलिये उन्हें योगेश्वर कृष्ण कहा गया है और उन्होंने कभी भी संसार त्याग की बात नहीं की। वास्तव में सबसे बड़ा योगी गृहस्थ होता है, जो इतने बन्धनों को संभालते हुये भी जीवन की यात्रा पर निरन्तर गतिशील रहता है, साथ ही ईश्वर के चिंतन, ध्यान, पूजन, आराधना में संलग्न रहता है। कृष्ण केवल भक्ति स्वरूप में ही नहीं हैं, उनका सम्पूर्ण जीवन, कर्म, गीता में निहित उपदेश, नीति-अनीति, आशा-आकांक्षा, मर्यादा-आचरण प्रत्येक पक्ष को पूर्ण रूप से समझ कर भीतर उतारने का साधन हैं।

इस संसार के प्रत्येक व्यक्ति का चिन्तन यही होता है कि वह किसी न किसी प्रकार से जीवन में अपने इच्छित क्षेत्र में सफलता के सर्वोच्च शिखर को प्राप्त करे, ऋषियों के अनुसार सफल व्यक्ति वही होता है जो आकर्षक व्यक्तित्व, श्रेष्ठ वाक् शक्ति, पूर्वाभास शक्ति, मेधा शक्ति, सौन्दर्य, अद्भुत जीवट शक्ति, चीरयौवन, तीव्र बुद्धि आदि सद्गुणों से परिपूर्ण होता है। वही व्यक्ति अपने जीवन में अपने लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त कर पाता है।

भगवान श्रीकृष्ण जो इन सभी सद्गुणों के स्वामी हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अपने जीवन में यही महत्त्वकांक्षाएं रहती हैं कि वह समाज में पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, यश प्राप्त करे। श्रीकृष्ण का जन्म कृष्ण पक्ष की अष्टमी की अर्धरात्रि में हुआ था, जो भी अंधकारमय कंस रूपी स्थितियां जीवन में हैं, उसके समापन के लिये यह श्रेष्ठतम दिवस है। आपके जीवन में सभी पाप-दोष, रोग-शोक का शमन हो सके और भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में निरन्तर उन्नति की ओर गतिशील रहते हुए श्रेष्ठता प्राप्त कर सकें इस हेतु कृष्ण जन्मोत्सव के पर्व पर जो व्यक्ति श्रीकृष्ण की अभ्यर्थना-साधना सम्पन्न करता है व यह दीक्षा को आत्मसात करता है वह व्यक्ति अपने आप में पूर्ण समर्थ, सक्षम, ऐश्वर्यवान और जीवन के प्रत्येक पक्ष यानी रूप, यौवन, यश, सौन्दर्य, सम्मोहन और परिपूर्णता स्वरूप में सोलह कलाओं की श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकता है। कायाकल्प की चेतना भाव से व्यक्ति नूतन ऊर्जावान बन जाता है। यह दीक्षा श्रीकृष्ण को स्वयं महर्षि सांदीपन से प्राप्त हुई थी, जिससे श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना दर्शनीय बना।

श्रीकृष्ण तत्व जागरण सुदर्शन सिद्धि राजयोग दीक्षा न्यौछावर ₹ 2100

भुवनेश्वरी जयन्ती 15 सितम्बर

आनन्दमयी भुवनेश्वरी आत्मज्ञान प्राप्ति दीक्षा

भगवती भुवनेश्वरी दस महाविद्याओं में अनन्यतम शक्ति सम्पन्न मानी गयी हैं, जिनकी कृपा प्राप्त होने पर भौतिक एवं आध्यात्मिक पूर्णता स्वतः ही प्राप्त हो जाती है, धन-धान्य, यश, मान-प्रतिष्ठा एक पक्ष है, दूसरा आध्यात्मिक पक्ष साधना सिद्धि, कुण्डलिनी जागरण आदि है जिसकी वे साक्षात् स्वरूपा हैं। उनकी उपासना से, उनकी कृपा प्राप्ति के बाद स्वतः ही साधक के अन्दर स्थित समस्त ऊर्जायें स्फुरित हो जाती हैं तथा मूलाधार से सहस्त्रार तक समस्त चक्रों में स्फुरण हो जाता है। आत्मज्ञान की कामना करने वाले व्यक्ति को भगवती पराम्बा शक्ति भुवनेश्वरी की उपासना अवश्य करनी चाहिये। भगवती भुवनेश्वरी के लिये कहा गया है कि भोगश्च मोक्षश्च करस्थेव भौतिक और आध्यात्मिक सुख दोनों जिसके हाथ में विराजमान है ऐसी भगवती परमाराध्य हैं। शाक्त प्रमोद के अनुसार जीवन की सर्वश्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण भुवनेश्वरी विद्या ही है।

यदि इसी जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक रूप से पूर्णत्व प्राप्त करना है, हर कार्य में सफल होना है, अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाना है तथा समस्त पाप-दोष, बाधाओं को समाप्त कर, मानवीय जीवन के लिए अपेक्षित समस्त सुख और भोगों को प्राप्त करना है, अपने आप को पूर्ण पुरूषोत्तम और शक्ति युक्त बनाना है तो जन्म जन्म के पाप दोषों का शमन करना अति आवश्यक है और ये हो सकता है इस दुर्लभ दीक्षा के माध्यम से।

इसलिये सद्गुरूदेव जी सभी साधकों को विशेष ग्रहों के सुयोग से भुवनेश्वरी जयन्ती पर 'आनन्दमयी भुवनेश्वरी आत्मज्ञान प्राप्ति दीक्षा' प्रदान करेंगे। जिससे शिष्य अपने जीवन में सभी दृष्टि से पूर्णता प्राप्त करता है और मंत्र साधना के माध्यम से शिष्य साधक के कई-कई जन्मों के पापों का शमन होता है और नूतन नव जीवन का निर्माण होता है।

आनन्दमयी भुवनेश्वरी आत्मज्ञान प्राप्ति दीक्षा न्यौछावर ₹ 2100

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 9950809666
न्यौ. राशि SHOBHA SHRIMALI SBI Main Branch Jodhpur A/c No.:10827437957
Branch Code: 659 MICR Code: 342002002 IFCS: SBIN0000659 Swift Code:SBININBB215
आश्रम:कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 9013859760

सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।

Posting Date : 14-15 July 2024
Printing Date : 05-06 July 2024

RNI No. : RAJHIN/2011/37103
Postal Regn. No. : Jodhpur/341/2023-2025
Licensed to post without prepayment-Licence no. RJ/WR/WPP/15/2023-25

जीवन के अन्तिम समय में जो कार्य हम नहीं करना चाहते उन्हें आज ही स्थगित कर दें और जो कार्य अन्त में करने जैसा है उसे आज से ही करना प्रारम्भ कर दे।

हे! आत्मन सुकृत करने के लिए और दुष्कृत का त्याग करने के लिए इतनी देरी क्यों किस लिये?

पूज्य गुरुदेव कैलाश श्रीमाली

पांच सोमवार युक्त श्रावण मास, रक्षा बंधन पर्व, कृष्ण जन्मोत्सव, हरितालिका तीज और ऋषि पंचमी पर्व पर साधना, पूजा, हवन युक्त दीक्षायें पूज्य सद्गुरुदेव जी के सानिध्य में सम्पन्न होंगी।

कैलाश नारायण धाम (दिल्ली)
19-20-21-22-23-24 अगस्त
13-14-15-16 सितम्बर

कैलाश सिद्धाश्रम (जोधपुर)
03-04-05-06 अगस्त
02-03-04-05-06 सितम्बर

To,

जोधपुर कार्यालय 1-C,पंचवटी कॉलोनी, सातानाड़ा, जोधपुर -342011 (राज.)
Mob. +919950809666/+917568939648/+918769442398, 0291-2517025
दिल्ली कार्यालय : E-1077, सरस्वती विहार, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
Mob. +919013859760/+918750757042

Indian Spiritual Journal
ISSN 2319-2356

कैलाश सिद्धाश्रम

GurudevKailash

+91-99508-09666